



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	1	1	इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्स	1	1	16	प्रत्युष्टुं रक्खुं प्रत्युं
1	1	2	यज्ञस्य घोषदंसि प्रत्युष	1	1	17	(सेदिम) सेदिम । अग्ने सपत्
1	1	3	वि वयं रुहेम पृथिव्यास्सुम्	1	1	18	(वंपामि म) वंपामि महीनाम्प
1	1	4	शुन्यध्वन्द्व्याय कर्मणे	1	1	19	कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नयै त
1	1	5	कर्मणे वान्देवेभ्यश्शकेयैव	1	1	20	दखिणो यजमानस्य परिधिरिड
1	1	6	(हिंसिषमु) हिंसिषमुरु वा	1	1	21	भुवनमसि वि प्रथस्वाग्ने य
1	1	7	देवो वस्सवितोत्पुनात्वच्छ	1	1	22	वाजस्य मा प्रसवेनौद्वाभे
1	1	8	(पृ) पृथिवी वैत्वधिषवणम	1	1	23	(ग) गच्छ ततो नो वृष्टिमेर
1	1	9	अवधूतं रक्खोऽवधूता अरात	1	1	24	देवा इमावचमभि विश्वे
1	1	10	धृष्टिरसि ब्रह्म यच्छापाऽ	1	1	25	उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या
1	1	11	(दृ) दृष्टु श्रोत्रन्दह	1	1	26	उभा हि वासु सुहवा जोहवीमि
1	1	12	सव्वपामि समापो अद्विरंगम	1	1	27	(मृडा) मृडातोदृशै । खेत्
1	1	13	आदद इन्द्रस्य बाहुरसि दख	1	1	28	सेदु होता सो अध्वराय्य ऋ
1	1	14	(गच्छ) गच्छ गोस्थानवर्	1	2	1	आप उन्दन्तु जीवसे दीर्घायु
1	1	15	(मौ) मौगरुस्ते दिवम्मा	1	2	2	मयि धेहि वृत्रस्य कनीनिका

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	2	3	आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वा	1	2	18	अग्नेरातिथ्यमसि विष्णवे
1	2	4	(पा) पातमाऽस्य यज्ञस्योदच	1	2	19	(सी) सीद वरुणोऽसि धृतव्र
1	2	5	मा मां हिंसी कृष्यै त्वा सु	1	2	20	अशुरंशुस्ते देव सोमाऽऽप्य
1	2	6	दैवीन्धियंमनामहे सुमृडीकाम	1	2	21	या तव तनूरिय सा मयि सह न
1	2	7	यज्ञेष्वीदः ॥ विश्वे देव	1	2	22	वित्तायनी मेऽसि तित्तायनी
1	2	8	छागोऽसि म भोगाय भव मेषो	1	2	23	यज्ञियन्तेन त्वाऽऽदधे सिं
1	2	9	इयन्ते शुक्र तनूरिद्वर्च	1	2	24	(रंसि रायस्यो) असि रायस्यो
1	2	10	(सि) असि यज्ञियाऽसि खत्	1	2	25	युञ्जते मन उत युञ्जते धि
1	2	11	वस्यसि रुद्राऽस्यदितिरस्य	1	2	26	(पा) पासुर इरावती धेनुम
1	2	12	अपि कन्ताम्यस्मे रायस्त्वे	1	2	27	दखिणादोत सव्यात् । विष्णो
1	2	13	अशुना ते अशुं पृच्यता	1	2	28	कृणुष्व पाज् प्रसित्तिन्न प
1	2	14	सोमन्ते क्रीणाम्यूर्जस्वन्त	1	2	29	यो अन्त्यग्ने मार्किष्टे व्यथ
1	2	15	उदायुषा स्वायुषोदोषधीनाऽ	1	2	30	जानाति सुमतिव्यविष्ट य
1	2	16	ऋतुव्रुणो विख्वग्निन	1	2	31	(मि) इयङ्गी । स्वशस्त्व
1	2	17	प्रच्यवस्व भुवस्पते विश्वान	1	2	32	बन्धुता वचोभिस्तन्मा पित



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	2	33	(देभुः) देभुः ॥ त्वया वयं	1	3	14	आ दंद ऋतस्य त्वा देवहविः पा	1	3	29	यदेन्द्रो रजनयथसुरेताः ॥	1	4	13	उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्
1	2	34	स रिषः पातु नक्तम् ॥ वि ज्	1	3	15	वातेनाऽस्य हविषस्त्वनां यज	1	3	30	(श्च) चरुणीरभ्यासा वाजे	1	4	14	मूर्धानन्दिबो अंरतिमृथि
1	3	1	देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे	1	3	16	वाक् आ प्यायताम्राणस्त	1	3	31	(पव) पवस् आ सुवोर्जमिपश्च	1	4	15	मधुश्च माधवश्च शुक्रश्च श
1	3	2	यवयारातीः पितृणां सदनमस्य	1	3	17	शमोपधीभ्यश्शम्युथिव्यै शमह	1	4	1	आ दंदे ग्रावांस्यध्वरुकृदे	1	4	16	इन्द्राग्नी आ गंतं सुतङ्गी
1	3	3	रुखोहणो वलगहनो वैष्णवान	1	3	18	सन्ते मनसा मनस्साम्राणेन	1	4	2	सोमं पिबतु यत्ते सोम दिवि	1	4	17	ओमांसश्चरुणीधृतो विश्वे दे
1	3	4	(रं) रुखोहणो वलगहनः प्रो	1	3	19	त्वा ध्रज्यै पूष्णो रश्म्या	1	4	3	वाचस्पतये पवस्व वाजिनृषा	1	4	18	मरुत्वंतवृषभैर्वावृधा
1	3	5	विभूरसि प्रवाहणो वहिरस	1	3	20	समुद्रङ्गच्छ स्वाहाऽन्तरि	1	4	4	उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ	1	4	19	इन्द्रं मरुत्व इह पाहि सोमं
1	3	6	त्वं सोम तनूकृद्यो द्वेषो	1	3	21	हविष्मतीरिमा आपो हविष्मा	1	4	5	आ वांयो भूष शुचिपा उप नस्सह	1	4	20	मरुत्वाः इन्द्र वृषभो रणाय
1	3	7	देवानामेति निष्कृतमृतस्य	1	3	22	हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त	1	4	6	अयँवामिन्नित्रावरुणा सुतस्स	1	4	21	महा इन्द्रो य ओजसा पर्जन
1	3	8	वि ख्यैषैश्चानुरञ्ज्योति	1	3	23	यज्ञं शृणोतु देवस्सविता	1	4	7	या वाङ्मशा मधुमत्यश्विना	1	4	22	महा इन्द्रो नृवदा चरुणि
1	3	9	अत्यन्यानागान्नान्यानुपांगाम्	1	3	24	त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो	1	4	8	प्रातर्युजौ वि मुच्येथामश	1	4	23	कदा चन स्तरीरसि नेन्द्रं
1	3	10	पृथिव्यै त्वाऽन्तरिख्याय त	1	3	25	ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत	1	4	9	अयँवेनश्चोदयत्यृषिर्गर्	1	4	24	वाममद्य संवितर्वाममु श्वो
1	3	11	गमध्ये गावो यत्र भूरिशृङ्	1	3	26	(होत) होतर्दोषा वस्तोरि	1	4	10	तम्प्रबथा पूर्वथा विश्व	1	4	25	अदब्धेभिस्सवितः पायुभिश्च
1	3	12	इषे त्वोपवीरस्युषो देवान	1	3	27	वसो पुरुष्यहः रयिम् ॥ स श	1	4	11	ये देवा दिव्येकादश स्थ पृ	1	4	26	हिरण्यपाणिमृतयै सवितारमुप
1	3	13	नस्समनसो समोकसावरेपसौ ।	1	3	28	(रख्यता) रख्यतादिमम् ॥ तस	1	4	12	त्रिंशत्रयश्च गुणिनो रु	1	4	27	सुशर्माऽसि सुप्रतिष्ठानो वृ



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	4	28	बृहस्पतिसुतस्य त इन्द्रो इन्द्र	1	4	43	सजोषां इन्द्र सगणो मरुद्वि
1	4	29	हरिरसि हरियोजो नो हयोः स्थ	1	4	44	उदु त्यज्ञातवेदसन्देवैव
1	4	30	अग्न आयूः पि पवसु आ सुवोर्ज	1	4	45	(वो) वो रूपमभ्यैमि वयसा
1	4	31	उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा	1	4	46	धाता रातिस्सवितेदञ्जुपन्त
1	4	32	तुरणिर्विश्वदर्शतो ज्योति	1	4	47	(त्व) अनु माष्टु तनुवो यद
1	4	33	आ प्यायस्व मदिन्तम् सोम विश्	1	4	48	प्रेरयु स्वे अग्ने सधस्थै
1	4	34	ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्	1	4	49	उरुः हि राजा वरुणश्चकार स
1	4	35	ज्योतिष्मतीन्त्वा सादयामि ज्य	1	4	50	समिधैर्यख्यग्रे ॥ प्रति त
1	4	36	प्रयासाय स्वाहाऽऽयासाय स	1	4	51	सन्तु दुर्मित्रास्तस्मै भूया
1	4	37	चित्तरं संतानेन भव्य्यक्	1	4	52	यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यम
1	4	38	आ तिष्ठ वृत्रहत्रयैर्युक्त	1	4	53	सुतासः । यदीः सबाधः पितर
1	4	39	इन्द्रमिद्वरी वहतोऽप्रतिधु	1	4	54	(अ) अध्वरेषु राजन् । त्वय
1	4	40	असावि सोम इन्द्र ते शविष्	1	5	1	देवासुरास्संयन्ता आसन्त
1	4	41	सर्वस्य प्रतिशीवरी भूमिस्	1	5	2	(रं) रजुतः हिरण्यमभवत्तस्मा
1	4	42	महाः इन्द्रो वज्रबाहुषोड	1	5	3	पूषाऽऽर्धोत्तस्मात्पूष्ण

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	5	4	(प्रो) ऋधोत्येव योऽस्यै	1	5	19	मयि ॥ अग्ने पावक रोचिषां म्
1	5	5	परा वा एष यज्ञम्पूषन् वपत	1	5	20	(देहि व) देहि वृचोदा अग्
1	5	6	(धत्ते) धत्ते शताखरा भवन	1	5	21	सम्पश्यामि प्रजा अहमिदं प्रज
1	5	7	विभक्तिङ्करोति ब्रह्मैव तदं	1	5	22	(सः) सः हितासि विश्वरूपीरा
1	5	8	जुहोति यजमानमेवोभयतः पश	1	5	23	त्वन्नो अन्तमः । उत त्राता
1	5	9	एवैनमव रुन्धे वीरहा वा एष	1	5	24	मयि वो रायश्रयन्ताम् ॥ तथ
1	5	10	भूमिर्भूमा द्यौर्वरिणाऽन	1	5	25	अयंजो वा एष योऽसामोपप्र
1	5	11	क्रुद्धः परोवपं मन्युना य	1	5	26	(मे) एवैनः समानानाङ्करोत
1	5	12	ऋषयस्सप्त धामं प्रियाणि ।	1	5	27	ऋतवं ऋतुष्वेव प्रति तिष्ठत
1	5	13	भूमिर्भूमा द्यौर्वरिणेत्	1	5	28	दमं एवास्येष उप तिष्ठते या
1	5	14	मन्त्रमपश्यत्ततो वै तामन्त्र	1	5	29	(त) तनूपा ह्येषोऽग्ने यन्म
1	5	15	(वैनः) एनः सम्भरति वि	1	5	30	हिमा इत्याह शतायुः पुरुषश
1	5	16	इत्याह सप्तसप्त वै सप्तध	1	5	31	सम्पश्यामि प्रजा अहमित्याह
1	5	17	उपप्रयन्तो अध्वरम्मन्त्रै	1	5	32	(त्या) आहोर्जो ह्येता रेवं
1	5	18	उभा राधसस्सह मादयध्वै ।	1	5	33	वा एषोऽस्माल्लोकाध्यवते



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	5	34	आऽस्य वीरो जायत ऊर्जा वः	1	5	49	वाजमग्ने तवोतिभिः ॥ वैश्व
1	5	35	य एवैद्विद्वानग्निमुपतिष्ठ	1	5	50	व्रते तवानागसो अदितये स्या
1	5	36	अग्निहोत्रं हुं होति यदेव	1	5	51	उप गन्तन ॥ या वः शर्म शशमा
1	5	37	त्वष्टां रूपाणि विकरोति ता	1	6	1	तैत्तिरीयसंहितायां प्रथमकाण्डे
1	5	38	रात्रिम्प्राविशन्ते देवा ह	1	6	2	(र) असि सत्यशुष्ममसि सत्य
1	5	39	(त्या) आदित्यो वा अस्मालो	1	6	3	धृत्रायं गृह्णामि विशे त्वा
1	5	40	एवैद्विद्वानग्निमुपतिष्ठ	1	6	4	ध्रुवोऽसि ध्रुवोऽहः संजात
1	5	41	नक्तमुपतिष्ठते ज्योतिषैव	1	6	5	(द्य) यद्वा स्कन्दादाज्यस्य
1	5	42	आहिताग्नेराशीर्यदग्निमुपत	1	6	6	वाचा मैन्द्रियेणाऽऽविश वस्
1	5	43	मम नामं प्रथमजातवेदः पित	1	6	7	दधिर्स्यदब्धो भूयासमुन्द
1	5	44	अग्निर्बृहद्वया विश्वजिह्व	1	6	8	अग्निर्मा दुर्दिष्टात्पातु सव
1	5	45	पर्यस्वद्विरुधाम्पयः । अपाम	1	6	9	(तेऽशी) तेऽशीय सा मै सत्य
1	5	46	वेधसः । पूष्णस्तान्यपि ब्र	1	6	10	(सि) असि जुष्टिन्ते गमेयम्
1	5	47	वैश्वानरो न ऊत्याऽऽप्र या	1	6	11	बर्हिषोऽहन्देवयज्यया प
1	5	48	रिषः पातु नक्तम् ॥ जातो य	1	6	12	(मु) उज्जितिमनूजैषम्महेन

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	6	13	(वनामहे धु) वनामहे धुखी	1	6	28	देवेभ्य एव प्रतिप्रोच्यं
1	6	14	सुरेता रेतो धिषीय त्वष्टं	1	6	29	प्रजापतिर्यज्ञानसृजताग्निह
1	6	15	आ प्यायतान्ध्रुवा घृतेन य	1	6	30	तावदुपाऽऽप्रोति य एवैद्वि
1	6	16	दिशि मासाः पितरो मार्जयन्त	1	6	31	एवैद्विद्वान्दंशपूर्णमास
1	6	17	अगन्तु सुवस्सुवंगन्म सन्द	1	6	32	(धि) अधिश्रयत्याज्यंश्च स्
1	6	18	सज्योतिषाऽभूवमैन्द्रीमावृ	1	6	33	ध्रुवोऽसि ध्रुवोऽहः संजात
1	6	19	दधत्पोषः रयिम्मयि । अग्ने	1	6	34	(वैन) एवैन्युनक्ति यज्ञ
1	6	20	(बभू) बभूव स प्र जज्ञे स	1	6	35	(कुरुते सँव) कुरुते सँव
1	6	21	यथा वै संमृतसोमा एवैवा ए	1	6	36	यज्ञस्याऽऽशीर्गच्छति यदृच
1	6	22	(गृह्णा) गृह्णाति ताश्चो	1	6	37	(शीर्ग) आशीर्गच्छति यान्का
1	6	23	इत्वा उपस्तीर्णमिच्छन्ति	1	6	38	मनसा मा भूतेनाऽऽविशेत्याह
1	6	24	वा आरण्यमिन्द्रियमेवाऽऽत्	1	6	39	यो वै संप्तदशम्प्रजापतिर्य
1	6	25	यो वै श्रद्धामनारभ्य यज्ञेन	1	6	40	(मु) उदयनवेद प्रतिष्ठ
1	6	26	(नयै) अनयैवैनाः प्र णयत्	1	6	41	श्रौण्डित्युपावाऽन्नाग्यजेत्
1	6	27	(श्च) च कृपालानि चाग्निहोत्	1	6	42	(मजन) अजूनयनये यजामह इत



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	6	43	(म्) ऋतुनाम्नीणामीत्यां	1	7	7	सः श्रवा ह सौर्वर्चनसस्तुमिञ्ज
1	6	44	(त्रा) अन्नाद्यमात्मन्धत्त	1	7	8	(अं) अस्यै शरीरङ्गावाव
1	6	45	(ह) अहन्दैवयज्ययैन्द्रिया	1	7	9	उपाह्वथा इति होवाचौपधयो
1	6	46	इन्द्रो विश्वतस्परि हव	1	7	10	(यै) इयैवै प्रजाः पराभवं
1	6	47	ख्वन्नमनु सहो यजत्रेन्द	1	7	11	परोख्वा अन्ये देवा इज
1	6	48	(र्च) अर्चन्त्यर्कमर्किणः	1	7	12	(न्वा) अन्वाहरति तदन्वाहा
1	6	49	(मः) अहोमुचैवृषभय्यज	1	7	13	(रा) आत्यै देवा वै यद्यज
1	6	50	आ जंगामा परस्याः । सूकः	1	7	14	(त्या) इत्याह प्रजापतिमेव
1	6	51	(संहसा) सहसावन्परिष्ठावध	1	7	15	बर्हिपोऽहन्दैवयज्यया प
1	7	1	तैत्तिरीयसंहितायाम्प्रथमकाण्डे	1	7	16	(वै) वै देवा उज्जितिमनूदं
1	7	2	यजतेऽप्यन्ययजमानन्दुहे	1	7	17	एव यजन्दुहे पुरस्ताच्चो
1	7	3	मात्रे वधसमुपावसृजति सर्	1	7	18	यजमानः प्रस्तुरो यदेतैः प्रं
1	7	4	कामयेत पशुमाभ्यस्यादिति	1	7	19	रेतो धिपीयेत्याहु सोमो वै
1	7	5	सामि मौर्जयन्त एतत्प्रति व	1	7	20	प्राजायत् तस्मादेव यजमानो
1	7	6	यज्ञे दखिणान्ददाति तामं	1	7	21	ध्रुवाँवै रिच्यमानाय्यज

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	7	22	(हा) आहयैवै प्रजापतेर	1	7	37	मातरा चाऽऽमा सोमो अमृतत्व
1	7	23	यजमानस्याऽऽयतन्यद्वेदिर	1	7	38	ख्वन्नस्योल्बमसि ख्वन्नस्य
1	7	24	यान्येवैनम्भूतानि व्रतमु	1	7	39	यज्ञेन कल्पताव्यानो यज
1	7	25	अगन्म सुवस्सुवरगन्मेत्यां	1	7	40	वाजस्येमम्रसवस्सुपुवे
1	7	26	(विष्णु) विष्णुकृमान्क्रम	1	7	41	(श्च) च नस्सर्ववीरात्रि य
1	7	27	ज्योतिषाऽभूवमित्याहस्मिन्	1	7	42	(श्च) च वाजिनम् ॥ सोमः रा
1	7	28	(वै) एवैतामा शास्ते समिद्ध	1	7	43	अग्निरैकाखरेण वाचमुदंजयद
1	7	29	(यथा) यथायजुरैवैतच्छतं हि	1	7	44	वरुणो दशाखरेण विराजमुदं
1	7	30	जातस्यात्तेज एवास्मिन्व	1	7	45	उपयामगृहीतोऽसि नृपदन्व
1	7	31	वि सृजते शान्त्या अप्रदाहा	1	7	46	समुजितः । तेषाँवशिप्रि
1	7	32	देवं सवितुः प्रसुव यज्ञम्र	1	7	47	अन्वह मासा अन्विद्वानान्यन्व
1	7	33	(न्त) अन्तरमृतमप्सु भेषज	1	7	48	मरते पतिः ॥ नाहमिन्द्राणि
1	7	34	देवस्याहः सवितुः प्रसुवे	1	7	49	मनो विष्वद्विग्विचारीत् ॥
1	7	35	काष्ठाङ्गच्छत् वाजैवाजेऽवत व	1	7	50	प्र यन्धि ॥ प्रदातारः हवाम
1	7	36	(मी) अमीवाः ॥ एष स्य वाजी	1	7	51	पतयस्स्याम ॥ तस्य वयः सुम्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	8	1	अनुमत्यै पुरोडाशमष्टाकपाल	1	8	16	ख्यत्तुर्गृह उपध्वस्तो दख्
1	8	2	(मे) एकादशकपाल २ हिरण्युन्द	1	8	17	पात्रे चतुस्त्रक्तौ स्वयमवप
1	8	3	अग्नेयमष्टाकपालत्रिर्वपत	1	8	18	अग्रये गृहपतये पुरोडाशम्
1	8	4	ऐन्द्राग्रमेकादशकपालम्मारु	1	8	19	बृहस्पतिर्वाचामिन्द्रौ ज्य
1	8	5	अग्रयेऽनीकवते पुरोडाशमष्ट	1	8	20	अर्थेतस्थाऽपाम्पतिरसि व
1	8	6	नि हंरामि ते ॥ मरुद्भ्यः क्र	1	8	21	देवीराप्स्सम्मधुमतीर्मधुमत
1	8	7	सोमाय पितृमते पुरोडाश २ ष	1	8	22	मातृतमास्वन्तः ॥ ख्यत्रस
1	8	8	अख्यत्रमीमदन्त ह्यव प्रिय	1	8	23	वज्रोऽसि वार्त्रघ्नस्त्वया
1	8	9	(नं ए) न एतु मनु पुनः क्र	1	8	24	समिधमा तिष्ठ गायत्री त्वा
1	8	10	प्रतिपूरुषमेककपालान्निर्	1	8	25	छन्दसामवत्वेकविंशस्तोमौ
1	8	11	यथाऽसति ॥ सुगम्मेपाय मेप्	1	8	26	(त्यः) अत्यःहाः । अग्रये स
1	8	12	ऐन्द्राग्रन्द्वादशकपालैवै	1	8	27	सोमस्य त्विषिरसि तवैव मे
1	8	13	नमस्तेभ्यस्वाहा समूढ २	1	8	28	तेजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द
1	8	14	धात्रे पुरोडाशन्द्वादशकपा	1	8	29	इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्र
1	8	15	वारुहस्पत्यश्चरन्निर्व	1	8	30	माम्माता पृथिवी हिंसीदियं

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
1	8	31	मित्रोऽसि वरुणोऽसि समह्व	2	1	4	(धाव) धावति स एवास्मिन्
1	8	32	ब्रह्मा ३ न्वः राजन्ब्रह्म	2	1	5	पशुकामस्याथ्स एतम्प्राज
1	8	33	अग्नेयमष्टाकपालत्रिर्वपत	2	1	6	रूपेणैवावरुन्धे सोमापौषान
1	8	34	सद्यो दीखयन्ति सद्यस्सोमं	2	1	7	प्रजापतिः प्रजा असृजत् ता
1	8	35	अग्नेयमष्टाकपालत्रिर्वपत	2	1	8	(व) एव स्वेनं भागधेयेनोपधा
1	8	36	अग्नेयमष्टाकपालत्रिर्वपत	2	1	9	समंभवत्ते देवा अब्रुवन्देवप
1	8	37	स्वाद्वीन्त्वा स्वादुनां ती	2	1	10	(लं) आ लंभेतादित्यानेव कामः
1	8	38	अग्नाविष्णु महि तद्वाम्महि	2	1	11	(ग्ने) अग्नेयीङ्कुष्णाग्नी
1	8	39	पर्वतादा सरस्वती यजता गन्	2	1	12	(वं) अव रुन्धे सवैषुरम्
1	8	40	(तंप्रजा) ऋतप्रजात तदस्	2	1	13	वाचन्दधाति प्रवदिता वाचो भं
1	8	41	शूरो वा पृथु कासु चित् ।	2	1	14	वै रेतोधा अग्निः प्रजानाम
1	8	42	(श्र) श्रवस्यवो घृतस्य धा	2	1	15	रुचमेवास्मिन्दधाति बभ्रुस्
2	1	1	वायव्यः श्वेता लंभेत् भूत	2	1	16	देवासुरा एषु लोकेष्वपर
2	1	2	वायवे नियुत्वत् आलंभेत् ग्	2	1	17	सय्यं इन्द्रियेण वै मन्
2	1	3	अपक्रामतो योऽलंमृजाये स	2	1	18	ऐन्द्रो यत्पृश्निस्तेन मारु



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	1	19	राज्याय सन्तः राज्ञोपन	2	1	34	तृतीयात्पुरुषात्सोमं पि
2	1	20	लभेत यः पाप्मानं गृहीतस्स	2	1	35	सोमपीथस्समृद्धौ ब्राह्मण
2	1	21	असावादित्यो न व्यरोचत तस्	2	1	36	वारुहस्पत्यः शितिपृष्ठमा
2	1	22	त्रीच्छित्तिपृष्ठाच्छुरद्यंपरा	2	1	37	अन्नमप्रयच्छत्यन्नाद एव भ
2	1	23	आलंभेत प्रजापतिस्सर्वा दे	2	1	38	स्वेनं भागधेयेनोपधावति स ए
2	1	24	यमत्वन्ते देवा अमन्यन्त य	2	1	39	देवतया समृद्धौ वैश्वदेव
2	1	25	वशामालंभेतैन्द्रमुखाण्व	2	1	40	सजातान्प्रयच्छन्ति ग्राम्य
2	1	26	अचायुश्सोऽमन्यत यो वा इमम	2	1	41	वपुद्धारो वै गांयत्रियै शिर
2	1	27	पाप्मानमपि दहत्यैन्द्रेणै	2	1	42	अगृह्णादस्त्वेवायम्भोगाये
2	1	28	वृथ्समा लंभेत वायुर्वा अनयौ	2	1	43	वै ब्रह्मवर्चसच्छन्दसामेव
2	1	29	इन्द्रो वलस्य विलमपौर्णो	2	1	44	रसैवृष्टिमवर्नुधे मैत्राव
2	1	30	भवति साहस्री वा एषा लख	2	1	45	रुन्धे वैश्वदेवीम्बहुरू
2	1	31	वा अंहोरात्राणि पशूनेव प्र	2	1	46	सजाता विश्वानेव देवान्थ्स
2	1	32	प्रजामापो वा ओषधयोऽसत्पुर	2	1	47	दधाति ब्रह्मवर्चस्येव
2	1	33	इन्द्रमेव स्वेनं भागधेयेनो	2	1	48	असावादित्यो न व्यरोचत तस्

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	1	49	वा आदित्यो यतोऽजायत ततो ब	2	1	64	असुर्यमृतावान्श्चयमाना ऋ
2	1	50	एवेनैवेर्भौदक इन्द्रो भिन	2	1	65	युष्मानीतो अभयुज्योतिरश
2	1	51	प्रजन्यिता त्वष्टारमेव स्	2	2	1	प्रजापतिः प्रजा असृजत तास
2	1	52	विशालो भवति व्यवसाययत्ये	2	2	2	एव स्वेनं भागधेयेनोपधावति
2	1	53	वरुणः सुषुवाणमन्नाद्यन्त्रोप	2	2	3	वपुश्सङ्ग्राममुपप्रयास्य
2	1	54	एव भवति कृष्णा भवति वारुण	2	2	4	धत्तो नेन्द्रियेण वीर्य
2	1	55	अपाञ्चोषधीनाश्च सन्धावालंभत	2	2	5	स्वेनं भागधेयेनोपधावति स ए
2	1	56	तामिथुनेऽपश्यन्तस्यान्त्र	2	2	6	अग्नये पथिकृते पुरोडाशम्
2	1	57	अश्विनमृगलंलाममालंभेत	2	2	7	पुरोडाशमष्टाकपालत्रिर्व
2	1	58	भवति मुखत एवास्मिन्तेजो	2	2	8	निशितायाः हि रक्खाः सि प्रे
2	1	59	एनम्पवयति परांची वा एत	2	2	9	वा प्रमीयेरनयो वा बिभी
2	1	60	इन्द्रो विश्वतस्परिन्द	2	2	10	अभि वा एष एतानुच्यति येषा
2	1	61	हुवे तुराणाम् । आयत्तुपन्	2	2	11	अग्नये कामाय पुरोडाशमष्ट
2	1	62	सोमस्तनूभि रुद्रियाभिः ।	2	2	12	युवते वि पाप्माना भ्रातृव
2	1	63	ऋतस्य रश्मिमाददे । यज्ञो	2	2	13	आयुर्दधाति सर्वमायुरेत्यग



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	2	14	अष्टाकपालत्रिविपेतेजस	2	2	29	मरुतो वै देवानाँद्विशो दे
2	2	15	अग्नयेऽन्नवते पुरोडाशमृष्ट	2	2	30	आदित्यश्चरुत्रिविपेथ्सङ्ग
2	2	16	एव भवत्यग्नयेऽन्नपतये पुरो	2	2	31	यो विद्विषाणयोरन्नमति व
2	2	17	पावकाय वाचमेवास्मिन्तेन	2	2	32	प्रस्तादभिद्रुहति नैनव
2	2	18	उत यद्यन्यो भवति प्रैव पंश	2	2	33	प्रतिगृह्य सवैश्वरो वा अ
2	2	19	रसवानेव भवत्यजखीरे भवत्	2	2	34	प्रयुज्य न विमुञ्चत्यप्रत
2	2	20	वा एष सिंसीरपति यस्सङ्ग	2	2	35	ऐन्द्रश्चरुत्रिविपेत्पशुक
2	2	21	अभिसम्भवतस्स ईश्वर आर्ति	2	2	36	एवास्मा इन्द्रियम्पशून्
2	2	22	हियेतेति तान्येवावखाण	2	2	37	उपधावति स एवास्मा अन्नम्प
2	2	23	वैश्वानरन्द्वादशकपालत्रिर	2	2	38	अहोमुचै पुरोडाशमेकादशक
2	2	24	वा एतस्याशांतो योनिम्प	2	2	39	अपहन्तीन्द्राय त्रित्रे पु
2	2	25	विन्दतै प्रजावैश्वानरन	2	2	40	इन्द्रायान्वजवे पुरोडाशमे
2	2	26	एव तैजस्यन्नाद इन्द्रि	2	2	41	इद्धो सन्नद्येद्वोर्यत्रा
2	2	27	अथो देवता एवान्वारभ्य सु	2	2	42	सङ्ग्राममेतामेव निर्वपेद
2	2	28	एव तद्वादशकपालो वैश्वानरो	2	2	43	इतीन्द्रमेव दातारः स्वेन

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	2	44	अपरुद्धमानो वेन्द्रमे	2	2	59	अस्मा अनुवर्त्मानङ्करोत्ये
2	2	45	सोऽभवत्सोऽविभेदूतः प्र म	2	2	60	निर्वपेद्य कामयेत कल्पे
2	2	46	आग्नावैष्णवमेकादशकपालत्रि	2	2	61	उपरिष्टादिन्द्रियेणैवास्मा
2	2	47	प्रति वै प्रस्तादभिचरन्तम्	2	2	62	भवत् प्रियमेवेनः समानान
2	2	48	उपनमेदग्निस्सर्वा देवता	2	2	63	एतया संज्ञान्याऽयाजयदग्नय
2	2	49	अस्मिन्श्चखुर्धत्तश्चखु	2	2	64	हिरण्यगर्भ आपो ह यत्प्रज
2	2	50	वीर्यवैष्णु पुरा वाचः	2	2	65	नया पुरुणि । अग्निभुव
2	2	51	आग्नावैष्णवमेकादशकपालत्रि	2	2	66	महिनि । स्तोमांसस्त्वा विचा
2	2	52	प्रतिचरति यज्ञेन यज्ञव	2	2	67	सुवानस्सोमं ऋतुयुश्चिकेतेन
2	2	53	असावादित्यो न व्यरोचत तस्	2	2	68	वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिर
2	2	54	वै तिष्यस्सोमः पूर्णमांसस्	2	2	69	अग्ने दा दाशुषे रयिर्वीर
2	2	55	भेषजमेवासमै करोति यदि ब	2	2	70	नो मूर्द्धीरा तू भर । घृतन
2	2	56	प्रजाः सोमारौद्रश्चरुत्रिर	2	2	71	यासिं दाश्वाः समच्छा नियुद्
2	2	57	इतासुर्भवति जीवत्येव सो	2	3	1	आदित्येभ्यो भुवद्वजश्च
2	2	58	ऐन्द्रमेकादशकपालत्रिविपेन	2	3	2	स्वेन भाग्धेयेनोप धावति त



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	3	3	सुदानव एना विषपतिनाम्	2	3	18	भवति यदृष्टाकपालस्तेनाङ्ग
2	3	4	अवंगतास्य विडनवगतं राष्ट्रम	2	3	19	ब्रह्मणस्पतिमेव स्वेन भाग
2	3	5	गमयन्ति यदि नावगच्छेदाश	2	3	20	अर्यम्णे चरन्निर्वपेथसुव
2	3	6	देवा वै मृत्योरंभिभयुस्ते प	2	3	21	अस्मै दानंकामां प्रजां करो
2	3	7	प्रति तिष्ठति घृते भवत्याय	2	3	22	अवपत्तेनैवैनमग्रन्देवता
2	3	8	रुचमदधुर्यो ब्रह्मवर्चसकां	2	3	23	परि णयत्यानुषूको भवत्येषा
2	3	9	चरुय्यं कामयेत हिरण्येव	2	3	24	प्रजापतेस्त्रयस्त्रिंशद्
2	3	10	एव निर्वपेद्विरण्यवित्	2	3	25	ऐतैर्यख्मं आर्च्यद्राजां
2	3	11	त्वष्टुस्सोममभीषहापिबुध्म	2	3	26	आदित्यश्चरन्निर्वपन्तेनै
2	3	12	एतं सोमैन्द्रं श्यामाकश्च	2	3	27	प्रजापतिर्देवेभ्योऽन्नाद्य
2	3	13	साखादेव सोमपीथमवं रुन्द	2	3	28	एकादशकपालमिन्द्रायाधिराजाय
2	3	14	समृद्धे प्राजापत्यम्भवति	2	3	29	देवासुरास्सैर्यन्ता आसन्त
2	3	15	देवा वै सन्नमांसतद्धिप	2	3	30	वीर्यकामस्यातमेतया सर
2	3	16	इन्द्रियम्ब्रह्मवर्चसमधत्	2	3	31	एवावं रुद्धे यदिन्द्राय व
2	3	17	धात्यग्नीषोमीयमेकादशकप	2	3	32	भवति वैश्वदेवत्वायं सम्

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	3	33	रजंनो वै कौण्यं क्रतुजित्	2	3	48	या वामिन्द्रावरुणा यतव्यां त
2	3	34	पश्यन्ति सूर्यस्य देवा अ	2	3	49	इन्द्रियेणापं कामति वरुण
2	3	35	ध्रुवोऽसि ध्रुवोऽहं संजात	2	3	50	पुरोडाशमवं दधात्यात्मन्वन्
2	3	36	आमनस्य देवा यास्त्रियस्सम	2	3	51	स प्रलवन्नि काव्येन्द्रव
2	3	37	गृह्णाति ध्रुवोऽसि ध्रुव	2	3	52	एतानि दिवि रोचनान्यग्निश
2	3	38	यन्नवमैतन्नवंनीतमभवद्यदसरं	2	3	53	हर्यतैवृषणा जुषेथाम् । सु
2	3	39	तस्यं ते ददतु येषाम्प्राणोऽ	2	3	54	श्रद्धामना हविषा ब्रह्मण
2	3	40	सृजतु जीवातवे जीवनस्याया	2	3	55	राजन्दिवा आचरन्ति । तेभिर्
2	3	41	अग्निंवा एतस्य शरीरङ्गच्	2	3	56	प्र यो जज्ञे विद्वां अस्य ब
2	3	42	वारुणेनैवैवृषणापाशान्म	2	4	1	देवा मनुष्याः पितरस्तैः
2	3	43	भिषजौ ताभ्यामेवासमै भेष	2	4	2	असुराञ्ज्याम् तन्नस्सहासुद
2	3	44	आहु प्राणमेवास्मिन्नेतेन	2	4	3	आसन्तानि तेन प्राणुदन्त य
2	3	45	घृतत्रिषिबत्यायुर्वै घृ	2	4	4	अग्नये प्रतीकवते यदग्नये
2	3	46	प्रजापतिर्वरुणायाश्वमनय	2	4	5	देवासुरास्सैर्यन्ता आसन्त
2	3	47	चतुष्कपाला भवन्ति चतुष्पाद	2	4	6	इत्यब्रवीत् इन्द्रायां होम



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	4	7	ताँवाव देवा विजितमुत्तमा	2	4	22	वृष्टयः । उदीरयथा मरुतस्समु
2	4	8	अभ्रांतुव्यो यदिन्द्राय वैम्	2	4	23	मारुतमंसि मरुतामोज इति क
2	4	9	देवासुरास्सैव्यंता आसन्त	2	4	24	जुहोति चतस्रो वै दिशश्चत
2	4	10	भ्राजोऽसि देवानान्नाम नामा	2	4	25	सौम्ययेवाहुत्या दिवो वृष्ट
2	4	11	प्रजाम्पशूनवृञ्जत तस्मादे	2	4	26	च्यावयति वृष्णो अश्वस्य
2	4	12	प्रजापतिः प्रजा असृजत ता	2	4	27	देवा वसव्या देवाः शर्मण्या
2	4	13	एव स्वेन भागधेयेनोप धावति	2	4	28	अहोरात्राभ्यामर्जयैव
2	4	14	अकृष्टपच्यमित्युभौ वाम्प	2	4	29	एवास्मै पर्जन्यैवर्षयन्
2	4	15	अग्ने गोभिर्न आ गृहीन्दो प	2	4	30	सर्वाणि छन्दाः स्येतस्यामि
2	4	16	दीर्घः श्रवो दिव्यैरयन्त ।	2	4	31	परिदध्यादन्तैर्यजङ्गमय
2	4	17	चित्रया यजेत पशुकाम इयैव	2	4	32	एष यज्ञो यत्रैधातवीयः
2	4	18	मिथुनममध्यतो दधाति पुष्	2	4	33	यस्सहस्रेण यजते प्रजापति
2	4	19	मारुतमंसि मरुतामोजोऽपान्थ	2	4	34	यत्रैधातवीयः सर्वैणैव
2	4	20	स्वाहा बहु हायमवृषादिति	2	4	35	अवं रुद्धे तार्यन्ददाति
2	4	21	देवा वसव्या अग्ने सोम सूर्य	2	4	36	त्वष्टा हुतपुत्रो वीन्द्रः

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	4	37	आसीद्यदि वा तावदध्यग्रेरा	2	5	4	पराभविष्यन्तो मन्यामहे त
2	4	38	अन्या देवतासीत्सोऽब्रवीद	2	5	5	काममन्यस्य स स्त्रीपसादम
2	4	39	मयि वीर्यन्तत्ते प्र दास	2	5	6	न सहासीत् नास्या अन्नमद्या
2	4	40	मयि वीर्यन्तत्ते प्र दास	2	5	7	अभ्यङ्गे तस्यै दुश्कर्मा
2	4	41	इदमस्मि तत्ते प्र दास्याम	2	5	8	त्वष्टा हुतपुत्रो वीन्द्रः
2	4	42	एवँवेद हन्ति रब्यधुम्भ्रा	2	5	9	इन्द्रश्शत्रुरभवत्स सम्भव
2	4	43	देवा वै राजन्याञ्जायमानाद	2	5	10	प्र हारावमन्तस्व इति मम
2	4	44	नवोनवो भवति जायमानोऽह्नाड	2	5	11	नैनः शीतरूरो हतस्ताभ्यामे
2	4	45	जितन्तै दखिणतो वृषभ एध	2	5	12	अमावास्यायाम्याययन्ति त
2	4	46	अस्य जगतस्सुवृष्टशमीशानमि	2	5	13	वरँवेदैर्नवरो गच्छति स
2	4	47	सोतुर्बाहुभ्याः सुयतो ना	2	5	14	वरँवृणै मय्येव सुतोभयैन
2	4	48	च । विश्वे देवा ऋतावृधं ऋ	2	5	15	इन्द्रवृत्रञ्जिवाः
2	5	1	विश्वरूपो वै त्वाष्ट्रः पु	2	5	16	तन्निरवपत्तेन वै स देवताश
2	5	2	आसीत्स कपिञ्जलोऽभवद्यथु	2	5	17	पृथिवीमनु व्यास्तदोषधयो
2	5	3	सँवत्सरादपि रोहादित्यं	2	5	18	श्रुतङ्कृतैत्यब्रवीत्तदंस



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	5	19	दधि हि पूर्वङ्कियत् इत्यन	2	5	34	एषा वै देवानाँविक्रान्ति
2	5	20	सेन्द्रत्वायाँनिहोत्रोच्छे	2	5	35	एवैभ्यो हव्यँवहृत्येतद्व
2	5	21	अद्य वसु वसतीतीन्द्रो हि द	2	5	36	यजियन्नाविन्दन्ते दंश्श
2	5	22	ब्रह्मवादिनो वदन्ति स त्व	2	5	37	ते एनमभि समनद्येतान्त्यख
2	5	23	इष्टिमपश्यन्नागवैष्णवमेका	2	5	38	आवदधि देवा इज्यान्ता इति
2	5	24	सर्ववृद्धे पौर्णमासीमे	2	5	39	देवा वै नर्वि न यजुष्यश्रयन्
2	5	25	भुवत्यूर्वा उदुम्बर ऊर्क	2	5	40	नहृत्यप्रस्रसाय सन्ततम
2	5	26	एवैनन्देवतेज्यमाना भूत्य	2	5	41	वाजा इत्यनिरुक्ताम्राजापुत
2	5	27	नासौमयाजी सन्नयेदनांगतव	2	5	42	इत्यन्वाह मासा वै वाजा अर्
2	5	28	अभ्युदेति त्रेधा तण्डुला	2	5	43	प्राणेनैवास्यापानन्दाधार
2	5	29	यजेत यत्पूर्वया सम्प्रति	2	5	44	अयंजो वा एष योऽसामाऽग्र
2	5	30	पूर्वयाभिजयति मनुष्यलोकमुत	2	5	45	आस्तान्ते देवा अंबुवन्ने
2	5	31	पूर्वेद्युर्यजते वेदिमेव	2	5	46	वा अर्धमासस्य रात्रयोऽधम
2	5	32	अभ्यारोहति यथा खलु वै श	2	5	47	यथ्समावद्विद्ध कथा त्वमग्
2	5	33	एष वै देवर्थो यद्वंशपूर्ण	2	5	48	तेन पुःस्वतीस्तेन सेन्द्रा

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	5	49	ध्वरति शोचिष्केशस्तमीमह	2	5	64	य एवँवेद यदेकयाधारयेदेक
2	5	50	इति वृणोध्व हव्यवाहनमित	2	5	65	प्रजापतिर्दूतीरेव त्वम्मन
2	5	51	अग्रं महा असीत्याह महान्	2	5	66	इमे लोका इमानेव लोकानभि
2	5	52	विप्रा ह्येते यच्छुश्रुवा	2	5	67	वै सुवर्गो लोकस्सुवर्गमे
2	5	53	तरति तूष्णिहव्यवाडित्या	2	5	68	आधारमाधार्य ध्रुवा समनक
2	5	54	जनयेदा वह देवान्यजमाना	2	5	69	अभेवन्परासुरा यस्यैवँवि
2	5	55	इत्याहाग्निरै देवानां ह	2	5	70	आयुष्ट आयुर्दा अग्र आ प्या
2	5	56	यद्वे इव ब्रूयाद्वातव	2	5	71	अन्या यन्त्युप यन्त्यन्यास्
2	5	57	त्री स्तृचाननु ब्रूयाद्राज	2	5	72	विशे जनाय महि शर्म यच्छतम
2	5	58	ब्रह्मवर्चसमस्त्विति गाय	2	5	73	रराणो वीहि मृडीक सुहवौ
2	5	59	चतुर्विंशतिमनु ब्रूयाद्ब्रह	2	5	74	वि पार्जसा वि ज्योतिषा । स त्
2	5	60	अवं रुद्धे चतुश्चत्वारिंशत	2	6	1	स्मिधो यजति वसन्तमेवतूना
2	5	61	निर्वीतम्मनुष्याणाम्राचीनाव	2	6	2	इडो यजति पशूनेवावं रुद्ध
2	5	62	पुरा होतांरोऽभूवन्तस्माद्वि	2	6	3	यज्ञ एवान्तरिख्ये प्रति त
2	5	63	देवलोकश्चैव मनुष्यलोकश्च	2	6	4	प्रयाजत्वय्यस्यैवँविदु



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	6	5	प्रजायां पशुभिर्मिथुनैर्जा	2	6	20	देवस्य त्वा सवितुः प्रसव
2	6	6	इति स्वाहाकारेण प्रयाजेपुं	2	6	21	तस्मान्नाभागन्निर्भजन्ति त
2	6	7	कुरुते तस्मादाहुर्ग्यक्षेव	2	6	22	यज्ञमुखेन सम्मितामा प्र
2	6	8	चख्षुषी वा एते यज्ञस्य यद	2	6	23	एतत्करोति यद्वेदिङ्करोति
2	6	9	यदग्नीषोमावन्तरा देवता इज	2	6	24	ब्रह्मवादिनो वदन्त्यद्विर
2	6	10	नियुत्वत्या यजति भ्रातृव्य	2	6	25	उख्यत्येभ्य एवैनल्लोकेभ्
2	6	11	यज्यां जनिष्यमाणानेव प्रत	2	6	26	उत्तरम्बुरहिषं प्रस्तरं स
2	6	12	वज्रो वषट्कारस्त्रिवृतमेव	2	6	27	उपरीं व हि सुवर्गो लोको नि
2	6	13	वषट्कारेण स्थापयति त्रिपद	2	6	28	स्यस्य जायेतोर्ध्वमुद्यौ
2	6	14	प्रजापतिर्देवेभ्यो यज्ञान	2	6	29	सुवर्गल्लोकङ्गमयति वि वा
2	6	15	इति ब्रूयादायतायामा हि देव	2	6	30	अग्नेस्त्रयो ज्यायां सो भ्र
2	6	16	अपश्यन्पुरोडाशङ्कर्मम्	2	6	31	हि तमन्वविन्दन्तमब्रुवन्
2	6	17	अवाच्छत्येवमवारमित्युप	2	6	32	रख्यंसामनन्ववचाराय न पुरस्
2	6	18	केशैश्शिरंश्छुन्नम्प्रच्युतं	2	6	33	पतये स्वाहेति स्कुन्नमनुं म
2	6	19	गोपीथाय यदि नश्येदाश्विन	2	6	34	उपामन्त्रयन्त राज्येनं पित

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	6	35	दिख्वायामेव दिशि रुद्रन्	2	6	50	यत्र ब्रह्मा यत्रैव यज्ञश्
2	6	36	मनुं पृथिव्या यज्ञियमेच्छ	2	6	51	आहेत्याहु प्रसूत्ये बृहस्
2	6	37	इयँवै रथन्तरमिमामेव सह	2	6	52	जगतीमित्यथो खत्वाहुर्ब्राह्
2	6	38	सहर्षभेत्याहु मिथुनमेवोपं	2	6	53	उ द्यावापृथिवी भृद्रमंभू
2	6	39	अग्रेऽपश्यद्भुतपदीत्याहु य	2	6	54	स्तामित्याहुः शिषमेवेतामा श
2	6	40	यज्ञाय चैव यजमानाय चाशिष	2	6	55	देवतास्ता अरीरधामेति वावै
2	6	41	इत्याहु प्रजा वा उत्तरा देवय	2	6	56	नान्तरैति तदग्निर्देवो दे
2	6	42	पशवो वा इडां स्वयमा दंते	2	6	57	देवा वै यज्ञस्य स्वगाकर्ता
2	6	43	आर्तिमाच्छेद्यदग्नौ जुहु	2	6	58	इति योऽपगुरातै शतेनं यातय
2	6	44	छिन्दन्ति यन्मध्यतः प्रा	2	6	59	शँय्योरा वृणीमह इत्याहु शँ
2	6	45	अकृन्तन्त्यवेन सम्मितन्त	2	6	60	यदाज्येन प्रयाजा इज्यन्त आ
2	6	46	पूषा प्राश्यं दतोऽरुणत्तस्	2	6	61	युख्या हि देवहूतमां अश
2	6	47	किञ्चन हिनस्ति सौऽविभेत्	2	6	62	अङ्गिरः । तस्मै नूनमभिद्
2	6	48	प्राशितम्मा हिंसिष्यतीति ब	2	6	63	अमित्रमर्दय । कुविध्मु नो
2	6	49	अग्नीध्र आ दधात्यग्निमुखाने	2	6	64	सँवतोऽवरां अभ्या तरं । यत



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
2	6	65	उशन्तस्त्वा हवामह उशन्तस्स	3	1	10	प्रजाम्पशून्यजमानस्य शमय
2	6	66	नः । त्वं सोम पितृभिस्सैव	3	1	11	प्रजापतेर्जायमानां प्रजा
2	6	67	शय्योरूपो दधात । आहम्पित	3	1	12	पशुपतिं पशूनाश्चतुष्पदामु
2	6	68	य ईयुरवृका ऋतुज्ञास्ते नो	3	1	13	भुवनस्य रेतो गातुन्धत्
2	6	69	कव्यवाहन पितृन्यख्यं	3	1	14	देवेभिरिन्वितम् । पाशात्प
2	6	70	इमंयम प्रस्तरमा हि सीदाइ	3	1	15	प्राजापत्या वै पशवस्तेषां
3	1	1	प्रजापतिरकामयत प्रजास्सुजे	3	1	16	यत्पशुर्मायुमकृतेति जुहोति
3	1	2	सृजते यद्वे दीर्घितोऽमे	3	1	17	यो वा अयंथादेवतैर्यज्ञमुपचर
3	1	3	तपोऽस्य निर्गन्त्युन्दी	3	1	18	ते सह युनज्मि वाचं सह सू
3	1	4	भद्रादभि श्रेयं प्रेहि बृह	3	1	19	छन्दश्शुक्रस्य पात्रमसि च
3	1	5	एष ते गायत्रो भाग इति मे	3	1	20	इष्टर्गो वा अध्वर्युयजम
3	1	6	पुनल्लोकङ्गमयित्वा क्रीण	3	1	21	व्यायच्छन्ते येषां सोमस्स
3	1	7	वा अध्वर्योः प्रतिष्ठाव	3	1	22	वाव रन्ध्रन्तर्म्भविष्यद्बृहद्
3	1	8	स्वश्चमसौऽस्य स्वय्यद्वा	3	1	23	निग्राभ्याः स्थ देवश्रुत
3	1	9	यज्ञंवा एतत्सम्भरन्ति यथ	3	1	24	गुणा मे मा वि तृप्त्रोपधयो

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
3	1	25	प्रथमोऽंशुस्स्कन्दति स ई	3	1	40	ऋष्टिन्त आप इव सप्रियञ्
3	1	26	यो वै देवान्देवयशसेनार्पयं	3	1	41	माया मायिनां विश्वमिन्व त
3	1	27	आयुष्मन्तस्सहर्षास्स्याम ।	3	1	42	ये विश्वे मरुतो जुनन्ति ।
3	1	28	सौम्यास्ता अनायतना ऐन्द्रव	3	2	1	यो वै पर्वमानानामन्वारोहान्वि
3	1	29	य एवैवेदेष ते रुद्र भागो	3	2	2	वै पर्वमानानामन्वारोहास्तान्य
3	1	30	सुवर्गल्लोकत्र प्र जानन्त	3	2	3	छिन्द्यात्तं विच्छिद्यमान
3	1	31	मह्यमिमानित्यं ब्रवीन्न वै त	3	2	4	त्रीणि वाव सर्वान्यथं तृतीय
3	1	32	जुष्टो वाचो भूयासुजुष्टो	3	2	5	सेतुनाति यन्त्यन्यम् । द्वे
3	1	33	पुरोडाशात्करम्भात् । धाना	3	2	6	पशुमकुर्वत दार्शय्यज्ञम
3	1	34	च यजमाने चेत्याह वाचमेव	3	2	7	परिभूरग्निर्भूरिन्द्र
3	1	35	अग्निना रयिमश्नवत्पोषमे	3	2	8	दृष्वक्रतुभ्याश्चखुर्भ्य
3	1	36	कर्मण्यस्सुदख्यो युक्तग	3	2	9	वर्चसे पवस्व तस्य मे रास्व
3	1	37	ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्त	3	2	10	अवैरखेतैष वै पात्रियं प्र
3	1	38	आहुतम्प्राजान्देवि दिदिद्धि	3	2	11	स्फ्यस्वस्तिर्विधुनस्वस्
3	1	39	नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न स	3	2	12	यज्ञंवाव स तदहन्तस्मा ए



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
3	2	13	देवतास्सदस्यातिमार्पयन्	3	2	28	यज्ञपतिन्दुहे यज्ञपतिर्वा
3	2	14	अग्निं पृथिव्या यमं पितृभ	3	2	29	श्येनाय पत्न्ये स्वाहा वद
3	2	15	पितरोऽनु प्र सर्पन्ति त ए	3	2	30	आहुः । प्रजा निर्भक्ता अनु
3	2	16	भख्येहि मा विंश दीर्घायुत्वा	3	2	31	प्र मुञ्चा स्वस्तये ये भूख
3	2	17	शुभ्रमृगोभूस्वस्ति मां	3	2	32	नयेदैभ्यो वृश्चेत यद्वैश
3	2	18	पितृपीतस्य मधुमत उपहृतस	3	2	33	पीवर्यस्य जाया पीवानं पुत्
3	2	19	गाः । अपाम् सोमममृता अभू	3	2	34	प्र च्यावयन्तु दिवि देवान्
3	2	20	शस्तोक्थस्य हरिवत् इन्द्रं	3	2	35	यद्वै होतृध्वर्युमभ्याह्वय
3	2	21	स्वधायै नमो व पितरो मन्यव	3	2	36	उक्थंवाचीन्द्रायेत्याह त
3	2	22	यत्कामास्ते जुहुमस्तत्रो अस	3	2	37	त्रिपदा गायत्री गायत्रम्य
3	2	23	महीनाम्ययोऽसि विश्वेपान्द	3	2	38	इन्द्रियमेव माध्यन्दिने स
3	2	24	ग्रहः संहोर्जा गृह्णाम्यस्त	3	2	39	अपहनीत पुरास्यं सैवध्वसुर
3	2	25	एतस्य स्कन्दति यस्य पृषदा	3	2	40	ऋचं प्रणव उक्थशंसिनाम्य
3	2	26	देवं सवितरेतत्ते प्राहु तत्प	3	2	41	तिष्ठतीव ह्यसावथो अमृमेव
3	2	27	अस्यूर्जमह्यं शुक्रन्दु	3	2	42	उपयामगृहीतोऽसि वाख्यसदसि

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
3	2	43	तन्तं दुश्चखा मावं ख्यन्	3	3	12	त्वा विभूमन ऋतस्य त्वा वि
3	2	44	प्र सो अग्ने तवोतिभिस्सुव	3	3	13	नामेत्याह प्राणापानावेवावं
3	2	45	हिनोमीन्द्राविष्णू अपसस्प	3	3	14	अवं रुन्द्र एतावद्वै पुरुषम
3	2	46	भुव यजमानाय शैव्योः । अग्ने	3	3	15	त्वा सत्यायेत्याह दिशो वा
3	3	1	अग्ने तेजस्विन्तेजस्वी त्वन्	3	3	16	देवा वै यद्यज्ञेन नावारुन्
3	3	2	ओजसे जुहोम्योजोविदस्योजो म	3	3	17	उत्तरेष्वहस्वमुतोऽर्वाञ
3	3	3	वायुरहिङ्कर्ताऽग्निं प्रं	3	3	18	मनुष्याणामन्नमृजापति
3	3	4	सूक्तवाचं पृथिवि मातर्मा	3	3	19	प्रजापतिर्देवासुरानंसृजत् त
3	3	5	वसंवस्त्वा प्र वृहन्तु गायत	3	3	20	आदाय तदैभ्यं प्रायच्छत्
3	3	6	शुक्रासु ते शुक्र शुक्रमा ध	3	3	21	छन्दसाँवीर्यमा श्रावयास
3	3	7	प्रियम्पाथो अपीहि वशी त्वन	3	3	22	आयुदा अग्ने हविषो जुषा
3	3	8	एतद्वा अपानामधेयङ्गुह्य	3	3	23	अप्रतीतममयि येन यमस्यं
3	3	9	अचुच्यवुरित्याह यथायजुरे	3	3	24	नभस्स्पत ऊर्जत्रो धेहि भ
3	3	10	योऽंशुङ्गुह्यात्मा नं प्रा	3	3	25	अमुष्मिन्लोके नैनीयेरन्
3	3	11	वायुरसि प्राणो नाम सवितुर	3	3	26	दहति पुण्यसमम्भवति यदि न



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
3	3	27	इत्याहाऽग्निर्वै नभसा पुरो	3	4	6	त्वन्तुरीयां वशिर्नीं वशासिं
3	3	28	एतैर्युवानम्परि वो ददामि	3	4	7	इमे वै सहास्तान्ते वायुर्व
3	3	29	बृहन्नद्रिर्भवत्तदैषाम् । प	3	4	8	वायुर्ववात्तस्माद्वायव्य
3	3	30	सूर्यो देवो दिविष्यद्वा ध	3	4	9	भागधेयेनोपं धावति स एवैन
3	3	31	मातरंश्च पुत्रश्च वि गर्भज	3	4	10	ईश्वरो वाचो वदितोस्सन्वाच
3	3	32	इदंवांमास्यं हविः प्रिय	3	4	11	इत्याह यथायजुरेवैतत्किंकि
3	3	33	शुचे शुचंयश्चरन्ति । तुविम	3	4	12	यजमानस्य यदनीतं उदचङ्गच
3	3	34	तस्मां उ हव्यङ्कृतवद्विधेम	3	4	13	आह यदेव यज्ञ उल्बणाङ्कि
3	3	35	मन्यांसै शश्च नः कृधि । क्रत	3	4	14	भवन्ति यदालंभायामभ्रस्याद
3	3	36	राकामहः सुहवाः सुष्टुती ह	3	4	15	चित्तश्च चित्तिश्चाकृतश्च
3	4	1	वि वा एतस्य यज्ञ ऋध्यते य	3	4	16	अग्निर्भूतानामधिपतिस्स मा
3	4	2	ब्रह्मणैवेनमा वर्तयति वि	3	4	17	देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वन्त तद
3	4	3	आह द्यावापृथिवीभ्यामेव य	3	4	18	यद्राष्ट्रभृद्वा राष्ट्रमा
3	4	4	प्राण उपरिष्टादपानो यावान	3	4	19	ऋताषाडृतधामाऽग्निर्गन्ध
3	4	5	आ वांयो भूष शुचिपा उप नस्सह	3	4	20	गन्धर्वस्तस्यर्खामान्यफ

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
3	4	21	मृत्युर्गन्धर्वस्तस्यं प्र	3	4	36	वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस
3	4	22	राष्ट्रकामाय होतव्यां राष्ट्र	3	4	37	यजमानोऽहोरात्राणि वा एतस्य
3	4	23	एव भवत्यधिदेवने जुहोत्यधि	3	4	38	रुद्रः खलु वै वास्तोष्पतिर
3	4	24	आहुतयो वा एतस्याङ्गमा यस	3	4	39	दखिणो युक्तो भवति सव्योऽ
3	4	25	भवत्यङ्गांरा एव प्रतिवेष्	3	4	40	एष वा अग्नेर्योनिस्स एवै
3	4	26	आयतने शमयत्यभिचरता प्रतिलो	3	4	41	त्वमग्ने बृहद्वयो दधासि दे
3	4	27	आ दंदिष्येति तस्यं सभायामुत्	3	4	42	पवित्रमत्येति रेभन् । आ
3	4	28	यो ज्येष्ठबन्धुरपभूतस्य	3	4	43	नो अश्वेषु रीरिषः । वीरान्म
3	4	29	देविका निर्वपेत्प्रजाकाम	3	4	44	सजित्वानं सदासहम् । वर्षि
3	4	30	इव खलु वै पशवश्छन्दाभिरे	3	4	45	विश्वचरणे । मित्रस्यं
3	4	31	अवं रुद्धे मध्यतो धातारं	3	4	46	चिद्धि ते विशो यथा प्र दे
3	4	32	वपेद्यज्ञो नोपनमेच्छन	3	5	1	पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पु
3	4	33	उपरिष्टादेवास्मै छन्दांस	3	5	2	संविदाना । अग्नीषोमौ प्र
3	4	34	रुक्कामश्छन्दांसि वै देवि	3	5	3	पूर्व आलंभन्त दर्शपूर्णमासा
3	4	35	वसवोऽष्टारखरा गायत्र्येका	3	5	4	खीयेत सारस्वतो होमौ प



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
3	5	5	ऋषयो वा इन्द्रमृत्युख्य	3	5	20	यमबध्नीत सविता सुकेतः । धा
3	5	6	आहु देवा वै ख्यो देवेभ्यं	3	5	21	तवाग्ने वामीरनुं सुन्दशि व
3	5	7	रुद्धे प्रवास्यनुवासीत्	3	5	22	वपुद्धारो वै गायत्रियै शिर
3	5	8	इत्याह पितृनेव प्रजा अनु	3	5	23	भवति सौम्या अस्याहुतयो भवन
3	5	9	जिन्वेत्याह प्रजास्वेव प्र	3	5	24	एव विश्वयध्यहति राष्ट्रव्
3	5	10	अग्निनां देवेन पृतना जयामि	3	5	25	उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये
3	5	11	सहजान्विश्वेभिर्देवेभिः	3	5	26	यौवा अध्वर्युश्च यजमानश
3	5	12	ये देवा यज्ञहनों यज्ञमुपः	3	5	27	असि प्रजापतये त्वा ज्योति
3	5	13	देवयानीरन्तरा द्यावापृथि	3	5	28	इत्याह प्रजापतिस्सर्वा दे
3	5	14	सन्ति त एषु लोकेष्वसत आ	3	5	29	त्वे क्रतुमपि वृजन्ति विश
3	5	15	पाङ्क्तो यज्ञो देवताश्चैव	3	5	30	अवं रुद्धे ज्येष्ठा वा एता
3	5	16	सूर्यो मा देवो देवेभ्यः पा	3	5	31	प्राणैरेव प्रयन्ति प्राणे
3	5	17	आ समुद्रादाऽन्तरिक्षात्	3	5	32	प्र देवन्देव्या धिया भरता
3	5	18	प्रतिं षापयति कविर्यज्ञस्य	3	5	33	अग्ने विश्वेभिस्स्वनीक देवै
3	5	19	सन्त्वां नह्यामि पर्यसा घृतेन	3	5	34	उ नः प्रस्पास्त्वैवस्य आ

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
3	5	35	त्वा दध्यङ्घ्रिः पुत्र ईध	4	1	14	सन्ते वायुर्मातृरिवा दधा
3	5	36	जातजातवेदसि प्रियः शिंशी	4	1	15	ऊर्ध्व ऊ षु णं ऊतये तिष्ठा
4	1	1	युञ्जानः प्रथम्मनस्तत्त्व	4	1	16	प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वम
4	1	2	मही देवस्य सवितुः परिष्ट	4	1	17	वीतयः क्रतुः सत्यम् । ओषधयः
4	1	3	यज्ञपतिम्भगाय दिव्यो गन्	4	1	18	वि पाजसा पृथुना शोशुचानो
4	1	4	असि पृथिव्यास्सस्थाद्ग	4	1	19	सः सृज्यं पृथिवीम्भूमिश्च
4	1	5	इमामगृभ्णन्नशनामृतस्य पूर	4	1	20	ताम् । सिनीवाली सुकपर्दा
4	1	6	एह्यवक्रामन्नशस्ती रुद्रस	4	1	21	आदित्यास्त्वा कृण्वन्तु जा
4	1	7	पुरुत्रा च रश्मीननु द्याव	4	1	22	वसंवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण
4	1	8	पृतन्यतः । उत्क्राम महते	4	1	23	देवीर्विश्वदैव्यावतीः पृथि
4	1	9	अग्निम्मनसा घृतेन प्रतिख	4	1	24	महिना दिवम्नित्रो बभूव स
4	1	10	देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे	4	1	25	समास्त्वान्न ऋतवो वर्धयन्तु
4	1	11	वर्म च स्थो अच्छिद्रे बहुल	4	1	26	सुवर्णे भवा नः । सपत्नहा
4	1	12	अथर्वणः । वृत्रहणम्पुरन्द	4	1	27	निहो अति स्निधोऽत्यर्चितिम
4	1	13	देववीतमः । वि धूममग्ने अर	4	1	28	विश्वं एनमनु मदन्तु देवाः ।



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	1	29	ऊर्ध्वा अस्य समिधौ भवन्त्य	4	1	44	देवेषु च सवितर्मानुषेषु च
4	1	30	ई मन्द्रासु प्रयसः । वसु	4	1	45	विपुरुषे अहनी द्यौरिवासि
4	1	31	भारती । मही गृणाना । तन्न	4	1	46	रेजते अग्ने पृथिवी मुखेभ्यः
4	1	32	उत्तेमाङ्गस्मै देवाय हविषां	4	2	1	विष्णोः क्रमोऽस्यभिमातिहा ग
4	1	33	आहुः । यस्येमाः प्रदिशो यस	4	2	2	क्रमोऽसि शत्रूयतो हुन्तानुष
4	1	34	आयुन्दख्यन्दधाना जनयन्तीर्	4	2	3	अङ्गिरश्शतन्तै सन्त्वावृ
4	1	35	आकृतिमग्निम्युज्जुः स्वाह	4	2	4	वि मध्यमः श्रथाय । अथा वय
4	1	36	अग्निश्चेदङ्गिरिष्यथः । दृह	4	2	5	उपस्थे विश्वान्यग्ने वयुना
4	1	37	तर् । यत्राहमस्मि ताः अंव ।	4	2	6	दिवस्परि प्रथमञ्जं अग्
4	1	38	यदग्ने यानि कानि चा ते दा	4	2	7	रजसि तस्थिवाः समृतस्य योनौ
4	1	39	पृथिव्यास्समिधानमग्निः रा	4	2	8	रोदसी अपृणाञ्जायमानः । वीड
4	1	40	कख्वैष्वघायवस्ताः स्तै दधाम	4	2	9	तम्भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थउ
4	1	41	स्वाः अहम् । दृशानो रुक्म	4	2	10	अन्नपुतेऽन्नस्य नो देह्यनमी
4	1	42	अन्तर्वि भाति देवा अग्निन्	4	2	11	अस्मिन्हुव्या जुहोतन । प्र
4	1	43	अग्ने यँय्यजमध्वरँविश	4	2	12	सोषधीरनु रुध्यसे । गर्भे स

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	2	13	नि वर्तस्व पुनरग्न इषायुष	4	2	28	ओषधयस्सोमराज्ञीः प्रविष्ट
4	2	14	अपेतु वीतु वि च सर्पतातो य	4	2	29	मा नो हिः सीञ्जनिता यः पृथि
4	2	15	सम्प्रियस्सम्प्रियास्तनुवो	4	2	30	दद ऋतस्य धाम्नो अमृतस्य
4	2	16	अप्सु वां यजत्र । येनान्तरि	4	2	31	धीतिर्भिरहितः । त्वे इपस्स
4	2	17	अग्न आ रोहाथां नो वर्धया र	4	2	32	रयिम् । चितंस्थ परिचित ऊर
4	2	18	समित् सङ्कल्पेथाः सम्प्र	4	2	33	अभ्यस्थाद्विश्वाः पृतना
4	2	19	अरेपसौ । मा यज्ञः हिः सिष	4	2	34	आ च पुष्करन्दिवो मात्रया व
4	2	20	अयस्मर्यं चिता बन्धमेत	4	2	35	द्यामिमश्च योनिमनु यश्च प
4	2	21	इति त्वाहमग्निं वेद विश्वतः	4	2	36	द्धुवासि धरुणास्तृता वि
4	2	22	शचीभिः । देव इव सविता सत्	4	2	37	चरित्रायाग्निस्त्वाभि पात
4	2	23	बीजम् । गिरा च श्रुष्टिस्स	4	2	38	असि सा मां जिन्व । मधु वाता
4	2	24	या जाता ओषधयो देवेभ्यस्त्र	4	2	39	पदः सदा पश्यन्ति सूरयः । द
4	2	25	चातयमानाः । अश्वत्थे वो न	4	2	40	ज्योतिरधारयश्मन्नाद्भ्योतिर
4	2	26	स्थन यदामयति निष्कृत । अ	4	2	41	होत्राः । अभूदिदं विश्वं
4	2	27	त आतस्थुरात्मानं व्या आवि	4	2	42	आदित्यङ्गर्भयसा समञ्जन



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	2	43	प्र॒मे व्योमन् । इ॒मम्मा हि	4	3	10	अ॒विर्वयं॑स्त्रिष्टु॒च्छन्द	4	4	4	राज्यं॑सि प्राची॒ दि॒ग्वसं॑वस्
4	2	44	हि॒र॒सी॒ प्र॒मे व्योमन् ।	4	3	11	इन्द्रा॑ग्नी अव्यंथमानामिष्ट	4	4	5	आ॒दि॒त्यास्तै॑ दे॒वा अधि॑पतयस्
4	2	45	ते दि॒शामि॑ तेन॒ चिन्वा॑नस्त	4	3	12	शन्त॑मेन॒ तथा॑ दे॒वत॑याङ्गि॒रस	4	4	6	बृह॑स्पति॒रहे॒तीना॑मप्रतिधु
4	2	46	इन्द्रा॑ग्नी रोच॒ना दि॒वः परि॑	4	3	13	मा छन्द॑ प्र॒मा छन्द॑ प्रति	4	4	7	अ॒य॒म्पुरो॑ हरि॒केश॑स्सूर्य॒रश्
4	2	47	र॒ख्ये पा॒था दि॒वो वि॑महसः । स	4	3	14	वा॒तो दे॒वता॑ सू॒र्यो दे॒वता॑	4	4	8	अ॒नु॒मोच॑न्ती चा॒प्सुर॑सौ सूर
4	2	48	को अ॒द्य यु॒ङ्क्ते धुरि॑ गा ऋ	4	3	15	आ॒शु॒स्त्रि॒वृ॒द्धान्त॑ पञ्चद	4	4	9	द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑
4	3	1	अ॒पान॑त्वेम॒न्त्साद॑याम्य॒पान्त॑	4	3	16	अ॒ग्नेर्भा॑गोऽसि दी॒ख्याया॑ आ	4	4	10	अ॒ग्नि॒र्मूर्धा॑ दि॒वः कृ॒त्पत॑
4	3	2	अ॒य॒म्पुरो॑ भुव॒स्तस्य॑ प्रा॒णो	4	3	17	रु॒द्राणा॑माधि॒पत्य॑श्चतु॒ष्पा	4	4	11	प्रति॑ धे॒नुमि॑वा॒यती॑मुषा॒सम्
4	3	3	गृ॒ह्णामि॑ प्र॒जाभ्यो॑ऽय॒म्पुश॑	4	3	18	ए॒क॒यास्तु॑वत प्र॒जा अ॑धीयन्त प्	4	4	12	गुहा॑ हितमन्व॒विन्द॑ञ्छि॒श्रिया॑
4	3	4	त्वया॑ श्रोत्रं॒ङ्ग॒ह्णामि॑ प्र	4	3	19	आ॒सीत्प॑श्च॒दश॑भि॒रस्तु॑वत र॒ख	4	4	13	स्तोम॑श्चा॒ग्रयै॑ । व॒र्षि॑ष्ठ
4	3	5	प्राचीं॑ दि॒शाँब॑सन्त ऋतून	4	3	20	ऐ॒तौ॒ब॒सवो॑ रु॒द्रा आ॑दि॒त्य	4	4	14	वसू॑ना॒न्देव॑ राधो॒ जना॑नाम् ।
4	3	6	द्रवि॑णः सप्त॒दश॑स्तोम॒स्स उ॑	4	3	21	इ॒यमे॒व सा॑ या प्र॒थमा॑ व्योच्छ	4	4	15	र॒ख्यसौ॑ दह॒ प्रति॑ । आ ते॑ अ॒ग
4	3	7	द्वु॒व॒खि॒तिर्द्वु॒वयो॑नि	4	3	22	व्र॒तमे॒कां र॒ख्यति॑ दे॒वयू॑नाम् ॥	4	4	16	उ॒क्थे॑षु॒ शव॑सस्प॒त इ॒षः स्तो॑त
4	3	8	अ॒पा॒मति॑न्दु॒र्मति॑म्बाध॒माना॑ रा	4	3	23	ऋ॒तूँस्त॑न्वते क॒वय॑ प्र॒जान॑त	4	4	17	सु॒व॒र्न ज्योति॑तः । अ॒ग्ने वि॒श
4	3	9	ऊ॒र्मि॒र्द्र॒प्सो अ॒पा॒मसि॑ वि॒श	4	3	24	अ॒स्य सु॒म॒तौ यथा॑ यू॒यम॑न्या	4	4	18	इन्द्रा॑ग्नि॒भ्यान्वा॑ स॒युज॑



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	4	19	मे शर्म च वर्म चास्त्वधिं	4	4	34	ख्वत्रैविश्वतो धारयेदम्
4	4	20	बृहस्पतिस्त्वा सादयतु पृथिव	4	4	35	वर्च इदङ्खत्र संल्लिवांत
4	4	21	असि स्तनयिबुसनिरसि वृ	4	4	36	बृहतीनु शक्तीरिमैय्यज्
4	4	22	भूयस्कृदसि वरिवस्कृदसि प	4	4	37	गृणाहि । घृतवती सवितराधि
4	4	23	पाह्यायुर्मे पाहि विश्वायुं	4	5	1	नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त्
4	4	24	अग्निना विश्वापादथ्सूर्ये	4	5	2	बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरि
4	4	25	प्रजापतिर्मनसान्योऽच्छेतो	4	5	3	श्रितास्सहस्रशोऽवैपां हे
4	4	26	कृत्तिका नखत्रमग्निदे	4	5	4	परा ता भगवो वप । अवतत्य ध
4	4	27	अर्यमा देवता फल्गुनी नख	4	5	5	नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये द
4	4	28	देवता शतभिषङ्खत्रमग्नि	4	5	6	रोहिताय स्थपतये वृखाणाम
4	4	29	मधुश्च माधवश्च वासन्तिकाव	4	5	7	नमस्सहमानाय निव्याधिर्न आव्य
4	4	30	यैऽग्नयस्सर्मनसोऽन्तरा द्याव	4	5	8	इषुमन्त्रो धन्वाविभ्यश्च वो
4	4	31	अदित्यानान्ते तेऽधिपतयस्त	4	5	9	नम आव्याधिर्नान्यो विविध्यन
4	4	32	नियुतश्च प्रयुतश्चाबुदज	4	5	10	रथपतिभ्यश्च वो नमो नमस्सेन
4	4	33	समिद्दिशामाशयां नस्सुर्वि	4	5	11	नमो भवाय च रुद्राय च नम

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	5	12	नमो अग्रियाय च प्रथमाय च	4	5	27	प्रचरन्ति सूकावन्तो निषड्
4	5	13	नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय	4	6	1	अश्मन्नूर्जम्पवते शिश्रिय
4	5	14	नम आशुषेणाय चाशुरथाय च न	4	6	2	ज्मन्नुप वेतसेऽवन्तरद्दीप
4	5	15	नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय	4	6	3	वस्वि यस्वि च । स नः पावक
4	5	16	नमः कृष्याय चावृथाय च नम	4	6	4	अप्सुषदे वड्वन्सदे वड्वर
4	5	17	नमस्सोमाय च रुद्राय च नम	4	6	5	अपान्दा व्यान्दाश्चख्युर
4	5	18	नमस्तीर्थाय च कूल्याय च	4	6	6	य इमा विश्वा भुवनानि जुह
4	5	19	नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च	4	6	7	यो देवानान्नामधा एक एव तः
4	5	20	नम ऊर्व्याय च सूर्याय च	4	6	8	पृथिव्या परो देवेभिरसुरै
4	5	21	द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रन	4	6	9	अपाङ्गभैर्व्यदधात्पुरुत्
4	5	22	अनातुरम् । मृडा नो रुद्रोत	4	6	10	विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्
4	5	23	रुद्र रीरिषः । मा नस्तो	4	6	11	मनोयुज्जुवाजं अद्या हुवे
4	5	24	श्रुतङ्गर्तसद्व्युवानम्मृ	4	6	12	उदैन्मत्तुरान्नयान्ने घृतेन
4	5	25	बिभ्रदा गंहि । विकिरिद् विलो	4	6	13	अग्ने भरन्तु चित्तिभिः । स
4	5	26	सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा	4	6	14	परिगृह्य देवा यज्ञमायन्न



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	6	15	चृष्टे घृताचीरन्तरा पूर्व	4	6	30	पितरस्सोम्यांसश्शिवे नो द्
4	6	16	आशुश्शिशानो वृषभो न युभो	4	6	31	शर्म यच्छतु । आ जङ्घन्ति सा
4	6	17	रथेन रख्योहामित्राः अपवाधं	4	6	32	ओज उद्धृतं न स्पतिभ्यः
4	6	18	वीरशतमन्युरिन्द्रः । दु	4	6	33	दवीयो अपं सेधु शत्रून् । आ
4	6	19	अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त	4	6	34	यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान उद
4	6	20	विश मैषाङ्गश्चनोच्छिपः ।	4	6	35	आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धन
4	6	21	प्राचीमनुं प्रदिशम्रेहि	4	6	36	पुतयन्तम्पतङ्गम् । शिरो अपश
4	6	22	अहम् । सुवयन्तो नापैखन	4	6	37	ते । हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य
4	6	23	शतमूर्ध्वच्छतन्तै प्राणास	4	6	38	प्रागाच्छसन्नैवाज्यर्वा दे
4	6	24	यजमानश्च सीदत । प्रेद्धौ अग्	4	6	39	मा नो मित्रो वरुणो अर्यमाय
4	6	25	पर्यसा महीङ्गाम् । सप्त तै अ	4	6	40	एनः सौश्रवसायं जिन्वति ।
4	6	26	ऋतुजिच्च सत्युजिच्च सेनजिच	4	6	41	तेषामभिगूतिर्न इन्वतु । उ
4	6	27	जीमूतस्येव भवति प्रतीक्य	4	6	42	मखिकाऽऽशु यद्वा स्वरौ स्व
4	6	28	ज्या इयः समने पारयन्ती । त	4	6	43	ये वाजिनम्परिपश्यन्ति पक्
4	6	29	पुनायत मनः पश्चादनु यच्छ	4	6	44	जघास सर्वा ता ते अपि देव

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	6	45	वा तुतोदं । सूचेव ता हव	4	7	14	मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्रा
4	6	46	प्रिय आत्मापियन्तुम्मा स्वध	4	7	15	इध्मश्च मे बर्हिश्च मे व
4	7	1	अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्ध	4	7	16	अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्
4	7	2	च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे	4	7	17	गर्भाश्च मे वृथाश्च मे त्
4	7	3	ज्यैष्ठ्यश्च म् आधिपत्यश्च म	4	7	18	मे वेहचमेऽनुद्वाश्च मे धे
4	7	4	मे धनश्च मे वशश्च मे त्वि	4	7	19	एकां च मे तिस्रश्च मे पञ्च
4	7	5	शश्च मे मयश्च मे प्रियश्च	4	7	20	मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मे
4	7	6	मे महश्च मे सँविच्च मे	4	7	21	वाजो नस्सप्त प्रदिशश्चतस्र
4	7	7	ऊर्कं मे सूनृतां च मे पर्यश	4	7	22	विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
4	7	8	मे प्रभु च मे बहु च मे भ	4	7	23	ओषधीभिः । सोऽहँवाजः सनेयम
4	7	9	अश्मां च मे मृत्तिका च मे गि	4	7	24	अग्निंयुनज्मि शवसा घृते
4	7	10	मेऽकृष्टपच्यश्च मे ग्राम	4	7	25	आ निषन्तः । नमस्ते अस्तु मा
4	7	11	अग्निश्च म् इन्द्रश्च मे स	4	7	26	आसतेन्धाना अग्निः सुवराभर
4	7	12	म् इन्द्रश्च मे धाता च म् इ	4	7	27	ये पुतन्यवः । अयमग्निर्वी
4	7	13	अःशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदा	4	7	28	उत्तमः । उद्ध्वस्वाग्ने



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
4	7	29	ममाग्ने वर्यो विह्वेष्वस्त	5	1	5	व्युद्धंवा एतद्यज्ञस्य
4	7	30	पूर्वेऽरिष्टास्स्याम तनुवां	5	1	6	योगेयोग एवेनैय्युक्ते वा
4	7	31	अदब्धो गोपाः परि पाहि नस्त	5	1	7	ह्यश्वैर्द्रव्योऽश्वम्पूर्व
4	7	32	नो रीरिषो मा परां दाः । ये	5	1	8	पशून्निर्याच्यात्मने कर्म
4	7	33	अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रच	5	1	9	सङ्गच्छते वाजमेवास्य वृड
4	7	34	स नो मुञ्चत्वहंसः । यस्सङ्	5	1	10	अख्यदित्याहानुख्यात्या आग
4	7	35	मित्रावरुणा नाथितो जोहवमि	5	1	11	उत्क्रामोदक्रमीदिति द्वाभ्
4	7	36	वान्देवो देवेष्वनिशितमोज	5	1	12	स्याद्रख्याःसि यज्ञः हन्यु
4	7	37	पृतनासु जिष्णु । स्तौमि दे	5	1	13	भवन्ति व्यचिष्टमन्त्रः रभसैव
4	7	38	इदंनुमते त्वद्वैश्वानरो न	5	1	14	वेद मनसा त्वे तामासुमर्
4	7	39	आगः । कृधी स्वस्माः अर्दिते	5	1	15	गायत्रिया परि लिखति तेजो
5	1	1	सावित्राणि जुहोति प्रसूत	5	1	16	देवस्य त्वा सवितुः प्रसव
5	1	2	पापीयान्स्यादित्येकैकन्त	5	1	17	हृत्यपाँवा एतत्पृष्ठं
5	1	3	अग्निस्तेनैव यज्ञमुखादद	5	1	18	शुचापयति तस्मात्सुमावत्
5	1	4	आह समृद्धे चतुर्भिर्भि	5	1	19	आह य एवेनमन्वपश्यतेने

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	1	20	चतसृभिस्सम्भरति चत्वारि	5	1	35	सप्तभिर्धूपयति सप्त वै शीर
5	1	21	क्रूरमिव वा अस्या एतत्कर	5	1	36	वा एताम्पत्नयोऽग्रैःकुर्वन्
5	1	22	तुभ्यमित्याहु पङ्का ऋतवं ऋ	5	1	37	जनयस्ताभिरैवैनौपचति पड
5	1	23	सर्वाणि छन्दाःसि छन्दाः सि	5	1	38	इत्याहु तस्मादग्निस्सर्वा
5	1	24	रोदस्योरित्याहुमे वै रोदस	5	1	39	एकविंशत्या माषैः पुरुषशीर्
5	1	25	सत्रं हत्येवेनमेतया स्थे	5	1	40	वै मृत्युबन्धवस्तेषाँय्यम
5	1	26	स ईश्वरः प्रजाशुचा प्रद	5	1	41	पशवस्सूर्य्यर्त्यग्निकृता
5	1	27	आहु रासंभ इति ह्येतमृषयोऽ	5	1	42	आत्मानमाप्रीणीत यदेता आप
5	1	28	समुद्रियमित्याहापाः ह्यै	5	1	43	भवन्त्येकविंशतिः सामिधेनीर
5	1	29	सत्यमनयोरेवेनमप्रतिष्ठ	5	1	44	ऋतुभिस्संवध्मरविंश्वा
5	1	30	एनमित्याहौषधयो वा अग्नेर	5	1	45	पङ्क्तिर्दीखयति पङ्का ऋतवं
5	1	31	वारुणो वा अग्निरुपनद्धो व	5	1	46	प्रजापतेरास्यै न्यूनया
5	1	32	एनः सः सृजति शान्त्यै यद	5	1	47	यजमानो हन्येतास्य यज्ञो मि
5	1	33	सृजति यज्ञो वै कृष्णाजिन	5	1	48	देवतामुपैति यो भूतिकामस्
5	1	34	पदे अथो प्रतिष्ठित्यै प्रा	5	1	49	अवं रुद्धे मुञ्जानवं दधात



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	1	50	वैकङ्कतीमा दधाति भा एवाव	5	2	6	भवति सत्त्वमेवैनङ्गमयति
5	1	51	न ह स्म वै पुराग्निरपरशुवृ	5	2	7	इममेव तेन लोकमुभि जयति य
5	1	52	अजिघांस्स एतद्राख्यो	5	2	8	अन्नपतेऽन्नस्य नो देहीत्या
5	1	53	वाचयति ब्रह्मणैव ख्यत्र	5	2	9	प्राणैरेवमुद्यच्छतेऽग्न
5	1	54	एकविंश एतावन्तो वै देव	5	2	10	याहीत्याहु ज्योतिरेवास्मि
5	1	55	प्राणैर्दाधारासीन् प्रति	5	2	11	अपचितामाभवति य एवैवेद
5	1	56	समिद्धो अञ्जकृदरम्मतीनाड	5	2	12	अग्निर्यावानेवाग्निस्तम्भ
5	1	57	देवैर्वसुभिस्सजोषाः प्रीत	5	2	13	रुद्रा वसवस्समिन्धतामित्य
5	1	58	सुहिरण्ये सुशिल्ये ऋतस्य	5	2	14	यावन्ती वै पृथिवी तस्यै यम
5	1	59	त्वष्टेर्द्विभृन्मुवनञ्जजा	5	2	15	अनामृत एवाग्निश्चिनुत उद्ध
5	2	1	विष्णुंमुखा वै देवाश्छन्दोभ	5	2	16	पशूनाय्यदूषा द्यावापृथिव
5	2	2	पराङ्मतेतयान्वैदक्रन्द	5	2	17	सूक्तम्भवत्येतेन वै विश्व
5	2	3	पर्यावर्तते दखिणा पर्याव	5	2	18	पश्चात्समीची ताभिर्वै ते द
5	2	4	वरुणपाशान्मुञ्चत्या त्वा	5	2	19	प्रजातै त्रयोदश लोकम्पृ
5	2	5	अग्ने बृहन्पुसांमूर्ध्वो	5	2	20	प्रति तिष्ठत्येकचितीकश्चिन्

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	2	21	वि वा एतौ द्विषाते यश्च पु	5	2	36	ब्रह्म जज्ञानमिति रुक्ममुप
5	2	22	वा एतन्दीर्खयन्ति स ऋतुभि	5	2	37	प्र जायेरन्यदन्तरिख्ये चि
5	2	23	वै निर्ऋत्ये दिख्स्वायामे	5	2	38	प्राश्चमुप दधाति दाधारं यजम
5	2	24	दधाति पराचीमेवास्मान्निर	5	2	39	तूष्णीमुप दधाति न हीमे यजु
5	2	25	पुरुषमात्रेण वि मिमीते य	5	2	40	अमुष्मिन्नलोक उप तिष्ठेते
5	2	26	वीर्यसमिति वेणुना वि मि	5	2	41	स्वयमातृणामुप दधातीयव
5	2	27	भवत्यस्या अनतिदाहाय द्विगु	5	2	42	अग्निवैश्वानरो यद्वाह
5	2	28	तामेवाननूथञ्जत्यथो खल	5	2	43	वा एष यदग्निं खलु वै पशव
5	2	29	कृपति त्रिवृतमेव यज्ञमु	5	2	44	कामयेत् वसीयान्स्यादित्य
5	2	30	अनवरुद्धस्याश्नीयादवरुद्धेन	5	2	45	यत्कूर्ममुपदधाति यथा ख्य
5	2	31	अग्ने तव श्रवो वय इति सिक	5	2	46	कूर्मो मधु वाता ऋतायत इति
5	2	32	वृत्राय वज्रम्राहर्त्स त	5	2	47	पुरस्तात्प्रत्यश्च पशवो
5	2	33	पशुकामस्य परिं मिन्यात्सप्	5	2	48	एषांवा एतल्लोकानाज्योत
5	2	34	यङ्कामयेत पशुमान्स्यादित	5	2	49	दध्यात्खोधुक एव भवति य
5	2	35	सोऽग्ने कृणो रूपङ्कत्व	5	2	50	अमृतं हिरण्यम्राणेषु ह



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	2	51	विषूचीनानि तस्योपं दध्याद	5	3	2	पञ्चोपं दधाति पञ्च वा ऋतवो
5	2	52	द्विपादश्च चतुष्पादश्च ता	5	3	3	उपुदधाति तस्मात्सर्वानृत
5	2	53	यथ्समीचीनम्पशुशीर्षैरुपद	5	3	4	यङ्कामयेतापशुस्यादिति व
5	2	54	पशुर्वा एष यदग्निर्योनिः ख	5	3	5	मूर्धन्वर्तौर्भवन्ति तस्मात्
5	2	55	प्राचीरुपं दधाति पश्चाद्वै प	5	3	6	इन्द्राग्नी अव्यथमानामिति
5	2	56	अपस्या अपश्यता उपाधत्	5	3	7	प्रापयति प्राणमेवास्यान
5	2	57	भुव इति पुरस्तादुपं दधाति	5	3	8	दधाति नव वै पुरुषे प्राण
5	2	58	उपं दधाति तस्मादख्यया पश	5	3	9	पशवं उच्यन्ते मा छन्द इति
5	2	59	अस्मै य आसामेवमायतनं	5	3	10	उपधीयन्ते गच्छति स्वरा
5	2	60	असुवर्ग्यमस्य तथ्सुवर्ग्यो	5	3	11	देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वन्त तद
5	2	61	गायत्री त्रिष्टुब्जगन्तु	5	3	12	यज्ञमुखमेव पुरस्ताद्वि य
5	2	62	ते पत्नयो लोम वि चिन्वन्त	5	3	13	उपं दधाति द्वौ त्रिवृतावभिप
5	2	63	कस्त्वा छाति कस्त्वा वि शा	5	3	14	हस्तयोस्तपस्वितरो योनिश्च
5	2	64	सूदयन्तु ते । पृथिवी ते	5	3	15	उत्तरतस्तस्मात्सुव्यो हस्त
5	3	1	उत्सन्नयज्ञो वा एष यदग्न	5	3	16	अग्नेर्भागोऽसीति पुरस्ता

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	3	17	अत्र २० सप्तदशोऽन्नमेव दंख्य	5	3	32	उपुदधाति पृष्ठानामेव तेजो
5	3	18	ओजं एवोत्तरतो धत्ते तस्मा	5	3	33	पश्चात्प्राचीमुत्तमामुपं दध
5	3	19	असीति पश्चात्प्रतिष्ठा वा	5	3	34	च यजमानस्य च प्राणश्चायुश्
5	3	20	यज्ञमुखश्चतुष्टोमो यज्ञम	5	3	35	छन्दा २० स्युपं दधाति पशवो वै
5	3	21	यस्य मुख्यवतीः पुरस्तादुपध	5	3	36	मुखतो धत्ते मूर्धन्वर्तौर्भ
5	3	22	विधीयतेऽर्क एव तदर्थमन	5	3	37	छन्दा २० सि विषुंरूपानेव पशून
5	3	23	अग्नें जातान् पण्डा नस्सप	5	3	38	सर्वभ्यो वै देवताभ्योऽग
5	3	24	उत्तरतोभिप्रयायी जयति	5	3	39	लोकमेति गच्छति प्रकाशश्चि
5	3	25	नास्यं सपत्नौ भवति पशुर्वा	5	3	40	वृष्टिसनीरुपं दधाति वृष्टि
5	3	26	अश्राम्यन्ते तपोऽतप्यन्त	5	3	41	एवेताभिर्यजमान इमाल्लौका
5	3	27	स्तोमंभागा उपुदधाति प्रजा ए	5	3	42	एवेनम्भूतिङ्गमयन्त्यसौ वा
5	3	28	रश्मिरित्येवादित्यमंसृजत् प	5	3	43	अथो तेजसानुपरिहार २० सादयत्
5	3	29	इन्द्राय त्वेन्द्रं जिवे	5	3	44	देवासुरास्सैव्यन्ता आसन्क
5	3	30	भवन्तीर्न प्राजायन्त तास्स	5	3	45	परासुरा यस्येता उपधीयन्ते
5	3	31	नाकसद्विर्वै देवासुवर्	5	3	46	अस्मिन्धात्यग्ने यत्ते



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	3	47	प्रजापतेरख्यंश्चयत्तत्पर	5	4	14	अश्मन्नूर्जमिति परिं पिञ्चत
5	3	48	तरति तरति ब्रह्महृत्यय्य	5	4	15	ऋच्छतु यन्दिष्म इत्याहु
5	4	1	देवासुरास्सैय्यंता आसन्त	5	4	16	शरोऽवका वेतसशाखाया चावकाभिश्
5	4	2	भवति यज्ञो देवेभ्योऽपाक	5	4	17	अष्टाखरा गायत्री गायत्र
5	4	3	भवति य एवैवेद ज्योतिष	5	4	18	एव मृत्योर्धत्तेऽवान्नाद्य
5	4	4	ज्योतींषि कुरुते सुवर्गस्यं	5	4	19	नृषदे वडिति व्याघारयति पड
5	4	5	ऋतव्यां उपं दधात्युतूनाङ्क	5	4	20	अहुतादोऽन्ये तानग्निचिदे
5	4	6	एवाग्निश्चिनुत उवाचं ह विश	5	4	21	वै ग्रुमुष्टिस्संयोनित्वाय
5	4	7	अधिपत्नीर्नामेष्टका यस्यै	5	4	22	हृत्पण्डशभिर्भोगैरसिनाथ
5	4	8	अथो रूपेणैवेनैः समर्धयत्	5	4	23	निर्मुच्येतेत्येकैकन्तस्यं
5	4	9	रुद्रो वा एष यदग्निस्स एतर	5	4	24	उदेनमुत्तरान्नयेति स्मिध
5	4	10	पयसा जुहुयाद्वाभ्यान्पशू	5	4	25	एवेनमुद्यच्छतेऽग्ने भरन्
5	4	11	अजायाङ्गर्मम्रासिश्चन्थ	5	4	26	पशूनेवावं रुन्दे पङ्क्ति
5	4	12	अथेयत्यथेयति त्रयं इमे लो	5	4	27	असुरानजयन्तदप्रतिरथस्याप्रत
5	4	13	एता वै देवताः सुवर्ग्या य	5	4	28	अश्मान्नि दधाति स्त्वाय

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	4	29	इत्याहान्नै वाजोऽन्नमे	5	4	44	आरण्या उभयीषामवरुद्धा
5	4	30	प्राचीमनुं प्रदिशम्नेहि	5	4	45	उपावर्तते नक्तोपासेति कृ
5	4	31	प्रथमो देवयतामित्याहोभये	5	4	46	अभि जयत्यग्निचितं ह वा अ
5	4	32	रुन्दे दध्नः पूर्णामौदं	5	4	47	सुवर्ग्या वै लोकायं देवर्थो
5	4	33	वै देवा असुराणां शततर्हां स	5	4	48	वा अग्निर्यावांनेवाग्निस्तैय
5	4	34	सवितुर्वरैण्यस्य चित्रामित	5	4	49	अभि मृशत्युपैन्मुत्तरो य
5	4	35	आत्यै न्यूनया जुहोति न्यू	5	4	50	न यज्ञं पराभवति न यजमानो
5	4	36	एव वैश्वानरमवं रुन्दे यत	5	4	51	ऋध्नोति स पुनरुधेयमा धत्
5	4	37	वसोर्धारांश्चुहोति वसौर्मि	5	4	52	छन्दश्चितंश्चिन्वीत पशुकाम
5	4	38	छिन्द्यामिति विग्राहन्तस्	5	4	53	एव भ्रातृव्यानुदत उभयतःप
5	4	39	अन्नस्य रूपं रूपेणैवान्नम	5	4	54	परिचार्यश्चिन्वीत ग्रामक
5	4	40	वै यज्ञायुधानि यज्ञमेवावं	5	4	55	होता स्व एवास्मा आयतनं इन्
5	4	41	एतद्वै छन्दसां रूपं रूपेणै	5	4	56	पवंस्व वाजंसातय इत्यनुष्टु
5	4	42	मनुष्यछन्दसश्चतस्रश्चाप	5	4	57	यस्मिन्नश्च आलभ्यते द्वादं
5	4	43	अग्निर्देवेभ्योऽपाक्रामद्वा	5	4	58	यत् ईश्वरो वा अश्वोऽयोतोऽप्र



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	5	1	यदेकेन सः स्थापयति यज्ञस्य	5	5	16	युख्वा हि ये तवं युख्वा
5	5	2	वातिं तद्रियं हृदि दहति	5	5	17	पुरुषशीर्षमुपं दधाति मुखं
5	5	3	पुरुषाणां रूपम्यत्तुं प्रस्तद	5	5	18	आपो वरुणस्य पत्न्यं आसन्ता
5	5	4	इयाद्यद्वायव्यं पशुर्भवं	5	5	19	वीरुधो भवन्ति ता अग्निं रत्
5	5	5	एवोभयतं परिगृह्य यजमानो	5	5	20	चन प्रत्यवरोहेन हीमे कञ्
5	5	6	चरुं कार्याऽस्मिन्नेव लोक	5	5	21	एतद्वा अग्नेशिरस्सशीर्ष
5	5	7	काल आगते विजायत एवमेव स	5	5	22	विश्वकर्मा दिशाम्पतिस्स नं
5	5	8	प्रजापतिं प्रजास्मृद्धा	5	5	23	वदन्त्यग्नौ ग्राम्यान्पशू
5	5	9	असानीति वा अग्निश्चीयतेऽग	5	5	24	द्वितीयामुपधाय व्यानेनेव
5	5	10	चीयते पशुमानेव भवति कस	5	5	25	लोकेष्वधि प्र जायते प्राणा
5	5	11	स पार्ष्णीयान्भविष्यसीति सौंस्व	5	5	26	अग्न आ याहि वीतय इत्याहाह
5	5	12	इतीमामेवेष्टकाङ्कत्वोपं ध	5	5	27	अन्वहमेवेनश्चिनुतेऽवाहा
5	5	13	त्रीणि च शतान्यमृजन्त त्रय	5	5	28	इत्याहु तस्मात्परुषिपरुषि
5	5	14	प्र जायामहा इति तमादित्ये	5	5	29	सुवर्गाय वा एष लोकाय चीय
5	5	15	यजुषा वा एषा क्रियते यजुं	5	5	30	ऋचाक्रमं प्रतीष्टकामुपं

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	5	31	धनुस्तद्वातो अनु वातु ते त	5	5	46	अन्नं इषवो निमिषो वातन
5	5	32	वातो अनु वातु ते तस्मै ते	5	5	47	अनुपुक्रामंश्नुहोत्यपरि
5	5	33	पुरीष्याः प्रविष्टाः पृथि	5	5	48	भवतीमः स्तनमूर्जस्वन्तन्ध
5	5	34	गायत्रेण पुरस्तादुपं तिप्	5	5	49	इन्द्राय राज्ञे सूकरो वरुं
5	5	35	यद्वारवन्तीर्येनोपतिष्ठते व	5	5	50	मयुः प्राजापत्य ऊलो हलीख
5	5	36	जागतेन छन्दसा सवित्रा देव	5	5	51	अपान्नत्रै जपो नाक्रो मक
5	5	37	अग्न उदधे या त इषुयुवा	5	5	52	बलायाजगुर आखुस्सृजया शयणं
5	5	38	द्वितीयो गहंस्तृतीयः किं	5	5	53	पुरुषमृगश्चन्द्रमसे गोध
5	5	39	तनुवां मे सह नमस्ते अस्तु	5	5	54	सौरी बलाकश्यो मयूरश्शय
5	5	40	अन्ये शतरुद्रीयः हुत्वा ग	5	5	55	पृषतो वैश्वदेवः पित्वो न्
5	5	41	देवास्त्वेन्द्रज्येष्ठा वरु	5	5	56	शकां भौमी पात्रः कशो मान्
5	5	42	सुमीची नामासि प्राची दिक्त	5	5	57	रुरुं रौद्रः कंकलासशकुनि
5	5	43	सोमोऽधिपतिस्वर्जोऽवस्थावा	5	5	58	अलज आन्तरिख उद्रो मद्र
5	5	44	नो द्वेष्टि तद्वाङ्मर्भे	5	5	59	सुपर्णः पौर्जन्यो हः सो व
5	5	45	स्थ तेपौवो दक्षिणा गृहा	5	5	60	अग्नेयः कृष्णग्रीवस्सारस्व



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	5	61	अश्वस्तूपरो गौमृगस्ते प्रा	5	6	14	वै राजसूर्यस्य रूपय्यं एवैव
5	5	62	अग्नयेऽनीकवते रोहिताञ्जिरन	5	6	15	सजूरब्दोऽयावभिस्सजूरूपा अर
5	6	1	हिरण्यवर्णाश्शुचयः पावका य	5	6	16	वा अस्या अमृतैय्यद्वीर्येन
5	6	2	शुक्रास्ता न आपृशः स्योना	5	6	17	प्रतिष्ठान्नाविन्दत स एतद
5	6	3	तदौप्रोदिन्द्रो वो यतीस्तस	5	6	18	स उत्तरः पृथ्वीऽभवत्सोदीची
5	6	4	अर्द्धम आ मां प्राणेन सह	5	6	19	तिष्ठत्यभि दिशो जयत्याग्ने
5	6	5	अपाङ्गहान्गृह्णात्येतद्वा	5	6	20	संवत्सरमुख्यंभूत्वा द
5	6	6	वा आपस्तस्मादद्विरवतान्तम्	5	6	21	छन्दो यद्वादशकपालो भवति
5	6	7	अन्नमवं रुद्धे पात्राणि भ	5	6	22	तेन लोकः स्मृणोति यद्वि
5	6	8	चैना एवैवेद शुग्वा अग्न	5	6	23	प्रजापतिर्गन्धिचिनुत स रथ
5	6	9	भवति यो वा एतासामयतनः	5	6	24	अन्ये वा वै निधिमगुंष्व
5	6	10	एवास्मा अन्नमवं रुद्धे मध	5	6	25	प्रजापतिर्वा अथर्वाग्निरे
5	6	11	भूतेष्टका उप दधात्यत्रात	5	6	26	अभ्यारोहति शरीरं वा एतद
5	6	12	अस्मै सवान् यच्छन्ति त	5	6	27	अग्नेर्वै दीख्यया देवा वि
5	6	13	मुखत एवास्मा अन्नाद्यन्द	5	6	28	मासाः संवत्सरस्संवत्सर

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	6	29	त्रिंशदखरा विराड्विराजं	5	6	44	शितिवाहुरन्यतश्शितिवाहुस्
5	6	30	सुवर्गाय वा एष लोकाय चीय	5	6	45	उन्नत ऋषभो वामनस्त एन्द्र
5	6	31	कर्नीयाः सैय्यज्जक्रतुमुपेयात	5	6	46	कर्णास्त्रयो यामास्सौम्यास
5	6	32	त्रिषाहस्रो वा असौ लोकौऽम	5	6	47	शृण्ठास्त्रयो वैष्णवा अंधील
5	6	33	उपेयान्न तृतीयश्चित्वा का	5	6	48	इन्द्राय राज्ञे त्रयश्शिति
5	6	34	यद्वे रेतस्सिचावुपदध्याद	5	6	49	अदित्ये त्रयो रोहितेता इन
5	6	35	अमृशोपं दधाति मनसा मध्यम	5	6	50	सौम्यास्त्रयः पिशङ्गास्सोम
5	6	36	सूयते वा एषौऽग्नीनाय्य उ	5	6	51	वारुणास्त्रयः कृष्णललामा
5	6	37	पुरुष आत्मा च शिरश्च चत्व	5	6	52	सोमाय स्वराज्ञेऽनोवाहावन
5	6	38	वैश्वकर्माणेरहोरात्राण्ये	5	6	53	एकादश प्रातर्गव्याः पशव आ
5	6	39	प्रजापतिर्गन्धिचिनुतुभि	5	6	54	पिशङ्गास्त्रयो वासन्तास्सा
5	6	40	रुद्धे शृण्वन्त्येनमुग्न	5	7	1	यो वा अयथादेवतमग्निश्चिनुत
5	6	41	त्रिवृद्धाग्निर्द्वे द्व	5	7	2	चिनुते यो वै प्रजापतये प
5	6	42	रोहितो धूम्ररोहितः कर्कन्ध	5	7	3	रूपैय्यदिष्टका रात्रिये प
5	6	43	पृश्निस्तिश्चीनपृश्निरूर्	5	7	4	त्वामग्ने वृषभश्चेकितान्मप



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	7	5	एतामुपं दधातीयँवावैषैकाप्	5	7	20	अब्रवीत्स एतान्द्वितीयाञ्
5	7	6	चीयते यदग्निर्येन देवा ज	5	7	21	अभवत्स परमेष्ठी प्रजाप
5	7	7	परि दत्तेह सर्वे । ग्रीष्म	5	7	22	आयानीति नेह लोकौऽस्तीत्यं
5	7	8	आ विशस्व शन्तोकायं तनुवै	5	7	23	आदित्यस्तानृषयोऽब्रुवन्नुप
5	7	9	इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्र	5	7	24	वयो वा अग्निर्यदग्निर्यचित्
5	7	10	दधाति देवपुरा एवैतास्तं	5	7	25	पृथिव्यै मां पाहि ज्योतिरस
5	7	11	एवाहुतिमायतनवतीङ्करोति यत	5	7	26	हिरण्येष्टका उपदधातीमा
5	7	12	प्रतिष्ठैवद प्रत्येव त	5	7	27	ब्राह्मणेपु रुचः राजसु न
5	7	13	चित्तिञ्जुहोमि मनसा घृतेने	5	7	28	जुहुयाच्छान्तिरेवैषाग्नेर
5	7	14	इच्छमानस्तस्मा एतद्वाग्ध	5	7	29	ऋतुस्थास्तस्य वसन्तशिरो
5	7	15	य एवँद्विद्वानग्निश्चिनुत	5	7	30	यदाकूतात्समसुस्रोद्धृदो वा
5	7	16	उत सन्दक्प्रजापति परमेष्ठ	5	7	31	पृथिभिर्देव्यानैरिष्टापृतं
5	7	17	यथा वै पुत्रो जातो म्रियतं	5	7	32	अग्निर्यैश्वकर्मणस्सुवर्दं
5	7	18	एव तमौ मृत्युमपं हते हिरण	5	7	33	यास्तै अग्ने समिधो यानि धा
5	7	19	अश्वमेधो यदेता आहुतीर्जु	5	7	34	धामेत्याहेषा वा अग्नेस्स्व

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
5	7	35	दिशं एवैतेन प्र जानातीमन्न	5	7	50	ओजौ श्रीवाभिर्निर्ऋतिमस्
5	7	36	मयि गृह्णाम्यग्ने अग्नि र	5	7	51	आनन्दन्नन्धुना कामम्प्र
5	7	37	यजमानाय चिनुयादग्निङ्गुलु वै	5	7	52	अहर्मासेन रात्रिम्पीवसा
5	7	38	आपो वै सर्वा देवता देवता	5	7	53	अग्ने पंखतिस्सरस्वत्यै
5	7	39	मृदा चिनोति तस्मादग्निरु	5	7	54	वायो पंखतिस्सरस्वतो निप
5	7	40	प्रजापतिरग्निमसृजत सौऽस्	5	7	55	पन्थामनूवृग्भ्यां सन्ततिः
5	7	41	अवूरुध्यं चिनुत एता वै प्रा	5	7	56	क्रमैरत्यक्रमीद्वाजी विश्वे
5	7	42	स्यादिति सन्तान्तस्य पशुश	5	7	57	द्यौस्तै पृष्ठमृथिवी सध
5	7	43	स्तेगान्दष्ट्राभ्याम्मुण्डू	5	7	58	अग्नि पशुरासीत्तेनायजन्त
5	7	44	वाजं हनूभ्यामुप आस्येनादि	6	1	1	प्राचीनवशङ्करोति देवमनुष्य
5	7	45	कूर्माञ्छुफैरच्छलाभि कपिज	6	1	2	उभयौलोकयोरभिजित्यै केश
5	7	46	योऋद्धृधाभिर्युगमानंत	6	1	3	तीर्थमेव संमानानाम्भवत्युप
5	7	47	मित्रावरुणौ श्रोणीभ्यामिन्	6	1	4	आदित्यानम्राचीनतानो विश
5	7	48	इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाज	6	1	5	एतत्सर्वदेवत्यैयन्नवनीत
5	7	49	पूष्णो वनिष्ठरन्धाहेस्	6	1	6	सव्य हि पूर्वमनुष्या आ



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	1	7	इन्द्रो वृत्रमहन्त्यसोऽ३ पो	6	1	22	यज्ञो दखिणामभ्यध्यायत्
6	1	8	पुवयति पञ्चाखरा पङ्क्ति	6	1	23	ता० हस्ते न्यवेष्टयत् ताम्
6	1	9	पुवयति चित्पतिस्त्वा पुना	6	1	24	कण्डूयेत पामनम्भाबुका० प
6	1	10	यावन्तो वै देवा यज्ञायापुं	6	1	25	वाग्वै देवेभ्योऽपाक्रामद्यज
6	1	11	स्वाहेत्याहाकृत्या हि पुरुं	6	1	26	क्रीते सोमं मैत्रावरुणाय द
6	1	12	आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशम	6	1	27	वाव य० पवते स यज्ञस्तमेव स
6	1	13	इत्याहु ब्रह्म वै देवानाम्	6	1	28	उदितेषु नखेत्रेषु व्रतङ्क
6	1	14	जुहोति यज्ञस्योद्यत्या अन	6	1	29	ब्रह्मवादिनो वदन्ति होतृव
6	1	15	इत्याहु पितृदेवत्यैतेन विश्	6	1	30	खलु वै रंखोहाग्रे त्व० सु
6	1	16	गायत्री यदेकादशाखरा तेन	6	1	31	ह्येष सन्मर्त्येषु त्वय्य
6	1	17	ऋक्सामे वै देवेभ्यो यज्ञा	6	1	32	सोमा भूयो भूरेत्याहापरिमित
6	1	18	वा अहो वर्णो यच्छुक्लङ्क	6	1	33	वृश्चते देवीरापो अपान्नप
6	1	19	गर्भा० प्रावृता जायन्ते न प	6	1	34	देवा वै देवयजनमध्यवसाय द
6	1	20	मेखला भवत्यूर्जमेवाव रुन	6	1	35	अथो पञ्चाखरा पङ्क्ति० पाङ
6	1	21	यैऽन्तश्शरा अशीर्यन्ते ते श	6	1	36	अग्नीषोमाविद्धा संवितारै

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	1	37	अप्रयाजमुदयनीयमितिमे वै	6	1	52	अनु त्वा माता मन्यतामनु प
6	1	38	पराभवति प्रयाजवदेवानूयाज	6	1	53	देवानान्तमेवास्यै पुरस्ता
6	1	39	कद्रश्च वै सुपर्णी चात्म	6	1	54	पदुदान्यनु नि क्रामति षडह
6	1	40	इति मा कद्रवंचोदिति जगत्	6	1	55	व्याचष्टे बृहस्पतिस्त्वा स
6	1	41	तपसा चागच्छत्तस्मात्रि	6	1	56	इत्याहु यदेवास्यै पदाद्
6	1	42	कस्मात्सत्याद्रायत्री कनि	6	1	57	इदमह० रंखंसो ग्रीवा अपि क
6	1	43	आशिरमव नयति सशुक्त्वायाथो	6	1	58	पशुभ्यो नान्तरेति त्वे राय
6	1	44	अपक्रम्यातिष्ठत्तद्रोहितो	6	1	59	ब्रह्मवादिनो वदन्ति विचित
6	1	45	भवन्त्येकहायन्या क्रीणाति वा	6	1	60	यदीतरमुभयैनेव सौमविक्रयि
6	1	46	तद्विरण्यमभवत्तस्माद्व्यो	6	1	61	इति लोमस्तस्य मिमीतेतद्वे
6	1	47	करोत्यथो सम्भरत्येवैन्य	6	1	62	अच्छ याति तस्मादनोवाह्य०
6	1	48	यज्ञो वै विष्णुर्यज्ञायैवै	6	1	63	मिमीतेऽयांतयाम्नियायातयाम्नि
6	1	49	वाग्वा एषा यत्सौमक्रयणी च	6	1	64	दश सम्पद्यन्ते दशाखरा वि
6	1	50	वदति दखिणासीत्याहु दख	6	1	65	वासुस्सर्वाभिरेवेनन्देवता
6	1	51	यत्कर्णगृहीता वात्रिणी स	6	1	66	यत्कलया ते श्फेन ते क्रीणा



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	1	67	ए॒न॒ङ्गी॒णा॒ति॒ धे॒न्वा॒ क्री	6	2	6	अ॒कुर्व॑त॒ तैर्वै॑ ते र॒ख्याः॑
6	1	68	त॒प॒स॒स्त॒नूर॑सि प्र॒जाप॑तेर्व	6	2	7	अ॒ग्निश्च॑ वा ए॒तौ सोम॑श्च कथ
6	1	69	सोम॑ङ्कीणी॒यात्तद॑भीष॒हा पु	6	2	8	दे॒वा॒सुरा॑स्संय्य॒न्ता आ॑स॒न्त
6	1	70	भ्राजे॒त्याहे॑ते वा अ॒मुष्मि॑	6	2	9	न॒ प्रथ॑मो॒ऽन्यो॒न्यस्मै॑ द
6	1	71	वा॒रु॒णो वै क्री॑त॒स्सोम॑ उ॒प॒न॒द	6	2	10	आप॑ति॒ प्रा॒णमे॒व प्री॑णाति॒ प
6	1	72	तिष्ठ॑त्यु॒न्तरि॑ख्य॒मन्व	6	2	11	इत्या॑ह दे॒वाना॑ ह्ये॒तदो॑जो
6	1	73	ए॒न॒दे॒वता॑भि॒स्सम॑र्ध॒यत्य॑थ	6	2	12	ए॒वास्या॑पु॒वाय॑ते य॒न्मीय॑ते
6	1	74	इत्या॑ह दि॒वि हि सूर्य॑ सोम॒	6	2	13	इत्या॑ह॒शिप॑मे॒वेता॑मा शा॒स्ते
6	1	75	ए॒ष प॑तिर्वि॒श्वान्य॑भि॒ धामा॑न्	6	2	14	अ॒ग्निमे॒व वरू॑थ॒ङ्कृत्वा॑सुरा
6	1	76	क्री॑त॒स्सोम॑ उ॒प॒न॒द्धो नमो॑ मि	6	2	15	तेषा॑म॒सुरा॑णान्ति॒स्त्र पुरं॑ आ॒स
6	2	1	यदु॑भौ वि॒मुच्या॑तिथ्य॒ङ्गह॑	6	2	16	रु॒द्र इत्य॑ब्रुव॒न्नद्रो॑ वै
6	2	2	ए॒ष य॒ज्ञस्या॑न्वा॒रम्भो॑ऽन॒वच्	6	2	17	अ॒न्यन्मुखं॑ङ्कुर्या॒ध्नुवे॑णा
6	2	3	ए॒वैतेन॑ करोत्य॒ग्नयै॑ त्वा रा	6	2	18	उ॒प॒स॒द्यन्ते॑ऽहोरा॒त्राभ्या॑म
6	2	4	अह॑र॒त्तस्मा॑द्वाय॒त्रिया॑ उ॒भु	6	2	19	प॒द्यन्ते॑ चतुर्विंश॒तिर॑र्ध॒मा
6	2	5	प्रा॒णस्त्रि॑वृ॒तमे॒व प्रा॒णम॑	6	2	20	सुव॑र्ग॒वा ए॒ते लो॑क्यन्

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	2	21	य॒ज्ञो दे॒वेभ्यो॑ नि॒लाय॑त॒ विष॑	6	2	36	अ॒ग्ने अ॒ङ्गिर॑ इति॒ त्रिर॑ह॒र
6	2	22	स॒प्ताना॑ङ्किरी॒णाम्प्र॑स्ता॒द	6	2	37	अ॒सीति॑ स॒ हन्ति॑ धृ॒त्यै दे॒
6	2	23	वा इ॒यम॑ग्रं आसी॒द्याव॑दासी॒नः	6	2	38	अ॒नुद॑त॒ मनो॑जवा॒ पितृ॑भिर्द
6	2	24	सा वा इ॒यः सर्वे॑व वेदि॒रिय॑ति	6	2	39	सो॒त्तर॑वेदि॒रब्र॑वी॒थ्सवा॑न्
6	2	25	यद्वा अनी॑शानो भा॒रमा॑द॒त्ते व	6	2	40	अ॒काम॑यन्त॒ प॒शून्वि॑न्दे॒म
6	2	26	ख॒पुरप॑वि॒ नाम॑ व्र॒तये॑न्	6	2	41	यज॑मानाय॒ स्वाहे॑ति॒ ते दे॒वता॑
6	2	27	रा॒ज॒न्यो व॒ज्रस्य॑ रू॒पः स॑मृ	6	2	42	लो॒काना॑विधृत्या॒ अग्ने॑स्त
6	2	28	दे॒वाः प्रा॑त॒र्मध्य॑न्दि॒ने सा	6	2	43	उ॒प॒ न आ॑ व॒र्तस्व॑ ह॒व्यन्नो॑ व
6	2	29	परा॑ऽस्य॒ भ्रातृ॑व्यो भवति॒ गर	6	2	44	अ॒स्थान्य॑शा॒तय॑त॒ तत्पू॑तु॒द्र
6	2	30	पु॒रोह॑विषि॒ देव॑य॒जने॑ या॒जये॑द्	6	2	45	ब॒द्धम॑वं स्यति॒ वरु॑णपा॒शादे॒वेन॑
6	2	31	न रथा॑ये॒तद्वा आ॑प्त॒न्दे॒वय॑जं	6	2	46	उ॒पा॒नक्ति॑ प॒त्नी हि॑ सर्व॒स्य
6	2	32	उ॒न्नत॑ः स्या॒दन्तरा॑ ह॒विर्ध॑	6	2	47	हि॒र॒ण्यमु॑पास्यं जु॒होत्य॑ग्नि॒व
6	2	33	अ॒वं रु॒द्धे प॑शु॒माने॒व भ॑वति॒	6	2	48	इत्या॑शी॒र्पद॑य॒र्चा द॑खि॒णस्य॑
6	2	34	तेभ्य॑ उत्तर॑वेदि॒स्त्रि॒ही रू॑	6	2	49	दे॒वस्य॑ त्वा स॒वितु॑ः प्र॒स॒व
6	2	35	मा॒त्रे॒वास्पे॑ सा॒ऽथो यु॑क्तेन	6	2	50	इ॒दम॑ह॒ र॒ख॒सो ग्री॒वा अपि॑ क



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	2	51	प्रस्तादर्वाचीमनुष्या ऊ	6	3	7	सुवर्गाय वा एतानि लोकाय
6	2	52	ह्येतद्यन्निखातैयद्ब्रह्म	6	3	8	वैसर्जनानि जुहोति रख्वासा
6	2	53	एनामिनोति ब्रह्मवर्निन	6	3	9	आ ग्राव्ण आ वायव्या
6	2	54	तेजस्कामस्य मिनुयात्रिवृता	6	3	10	एवैनन्देवतया प्र पादयत्
6	2	55	मध्यत ऊर्जा भुञ्जते यजमानल	6	3	11	देवानुपैतीदमहम्मनुष्यो
6	2	56	शिरो वा एतद्यज्ञस्य यद्धव	6	3	12	पितृणामिदमहन्निर्वरुणस्य
6	2	57	यन्नस्मानो यमसमानो निचुखान	6	3	13	वैष्णव्यर्चा हुत्वा यूपमच्
6	2	58	ऊर्ग्वै यवः प्राणा उपरवा	6	3	14	वैष्णवन्दैवयज्याया इत्या
6	2	59	प्राणा उपरवा हनू अधिषवणे	6	3	15	एवैनमा हरतीमे वै लोका यूप
6	3	1	चात्वालाद्धिष्ण्यानुप वपत	6	3	16	वृक्षेद्यदंखसङ्गवृक्ष
6	3	2	आहाग्नीदग्नीन्वि हर बर्	6	3	17	वनस्पतीनाम्पशव्यः पशुमाने
6	3	3	परिवेष्टारन्ते सौमपीथेन	6	3	18	नमति षडरन्निमप्रतिष्ठाका
6	3	4	एते सौमपीथेनार्धन्त देव	6	3	19	पृथिव्यै त्वान्तरिख्याय त्
6	3	5	जायन्ते प्राणा वा एते यद्	6	3	20	पितृणां सदनमसीति ब्रह्म
6	3	6	वाचः सम्प्र यच्छेदुपदासुक	6	3	21	मुञ्चति तस्माच्छीरपत ओष

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	3	22	कल्पयति वैष्णवो वै देवत	6	3	37	आधारयत्ततो वै देवा यज्ञमन
6	3	23	अग्निष्ठान्तस्याश्रिमाहवनी	6	3	38	मासाः सैवधसुरस्सैवधसुर
6	3	24	व्यर्धयेयमित्यूध्वीवा	6	3	39	शिरः प्रति दधाति सन्तै प्र
6	3	25	देवानामूर्ध्व रश्नाया आ	6	3	40	एनङ्करोत्यृत्विजो वृणीते
6	3	26	यद्यूपमिनोति सुवर्गस्य	6	3	41	पर्यग्नि करोति सर्वहुतमेवै
6	3	27	यूपस्य यदूर्ध्वश्चालात्	6	3	42	पशुरिति यन्नान्वारभेत सुव
6	3	28	साध्या वै देवा अस्मिन्नौक	6	3	43	उपास्यत्यस्कन्दायास्कन्त
6	3	29	अपि दध्यात्प्रमायुकस्याद	6	3	44	आतानास्तेभ्य एव नमस्करोत्
6	3	30	ह्येतावुर्वश्यस्यायुरसीत्	6	3	45	पशोर्वा आलब्धस्य प्राणाञ्छु
6	3	31	प्रहियमाणायानु ब्रूहीत	6	3	46	शान्त्यै पार्श्वत आच्छाति
6	3	32	इषे त्वेति ब्रह्मिरा दन्त इ	6	3	47	द्वेष्टि यश्चैनन्देष्टि
6	3	33	आह ब्रह्म वै देवानाम्बृह	6	3	48	रायस्सुवीर् इत्याह यथायजुर
6	3	34	रश्नामा दन्ते प्रसूत्या अ	6	3	49	अन्वेति नान्तममङ्गारमति
6	3	35	त्वौपंधीभ्यः प्रोख्यामीत्या	6	3	50	यज्ञस्य समिष्टै प्राणापा
6	3	36	अग्निना वै होत्रा देवा असु	6	3	51	पशुमालभ्य पुरोडाशन्निर्व



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	3	52	यत्पृषदाज्यम्पशोः खलु वा आ	6	4	5	अभि समेति यत्पृथिव्याः ह
6	3	53	पशोरव द्यति पशुं वै ह्रिय	6	4	6	देवा वै यज्ञमाग्रीं व्य
6	3	54	द्यति हृदयस्याग्रेऽव द्य	6	4	7	यज्ञं चिच्छिन्द्याज्योति
6	3	55	उत्तमो हि प्राणो यदीतर्य	6	4	8	वृत्रमहन्सो ऽपो ऽभ्यम्
6	3	56	सौऽब्रवीद्वैवृणै पशोरं	6	4	9	वरुणेनास्य यज्ञङ्गाहयेद्
6	3	57	मेदसा सुचौ प्रोणीति म	6	4	10	सूर्य इत्याहु सशुक्राणामेव
6	3	58	वा एतत्पशुं व्यथसंज्ञपयन्	6	4	11	लोके पशुमान्स्यादुभयोर
6	3	59	अवंसे सखायोऽनु त्वा माता प	6	4	12	ब्रह्मवादिनो वदन्ति स त्व
6	3	60	वै देवतया पशवो यत्पृषदाज	6	4	13	प्रवदितोः प्रातरनुवाकमुपाकं
6	3	61	चतुष्पादो हि पशवो यङ्कामय	6	4	14	म् इत्याहु सवितृप्रसूत एव द
6	3	62	पुरस्तादसृजत पशुमभ्युतः	6	4	15	कार्ष्णिर्सीत्याहु शमलमेवास
6	4	1	यज्ञेन वै प्रजापतिः प्रजा	6	4	16	देवस्य त्वा सवितुः प्रसव
6	4	2	एव तदधात्यन्तरिख्यङ्गच्छ	6	4	17	पञ्चाखरा पङ्क्तिः पाङ्क्तो
6	4	3	इत्याहु प्रजास्वेव प्रजातास	6	4	18	लोकेऽयस्सम्भरति सोमो वै
6	4	4	दिव्यङ्गच्छ स्वाहेत्याहु प	6	4	19	आहेष वै सोमस्य सोमपीथो य

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	4	20	प्राणो वा एष यदुपाः शुर्वद	6	4	35	करोति यस्सोमेन यजते तस्
6	4	21	सर्वन्मार्थान्दिनमेव सर्वन्	6	4	36	पुवेष मित्राय च सुह गृह्यात
6	4	22	कृत्वोऽभिपुत्यम्ब्रह्मवादि	6	4	37	यज्ञस्य शिरौऽच्छिद्यत ते द
6	4	23	सन्देवानाम्पुत्रिव्येषाम	6	4	38	भिषजाविति तस्माद्ब्राह्मण
6	4	24	अद्वित्याहु मन एवाश्नुत	6	4	39	उपनिधाय ब्राह्मणन्दखिण
6	4	25	स्यादिति नीचा हस्तेन नि म	6	4	40	पशुभिः प्राणानन्तर्दधीत प
6	4	26	त्वा प्राणे सादयामीति साद	6	4	41	अरिक्तानि पात्राणि सादयति
6	4	27	देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वत तद	6	4	42	बृहस्पतिर्देवानाम्पुरोहि
6	4	28	दधामि द्यावापृथिवी अन्तर	6	4	43	अस्य भ्रातृव्यो भवति तौ दे
6	4	29	अन्वाभजथ्सृजोषा देवैरवै	6	4	44	क्रामतस्तस्मात्प्राञ्चौ य
6	4	30	प्राणापानयोर्विधृत्यै प्र	6	4	45	अनुदन्त याः प्रतीचीर्ये
6	4	31	वाग्वा एषा यदैन्द्रवायवो यद	6	4	46	सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन्
6	4	32	इति सौऽब्रवीद्वैवृणै मद	6	4	47	यवत्वय्यैद्वेकङ्कतम्मन्थिपा
6	4	33	सन्ना असन्नित्युपयामगृही	6	4	48	देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वत तद
6	4	34	मित्रदेवा अब्रुवन्सोम	6	4	49	एतावतीर्वै देवतास्ताभ्यं



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	4	50	तस्मादाग्रयणे वाग्वि सृज्यत	6	5	14	सर्वाः प्रजाः प्रत्यङ्मुदे
6	4	51	तत्प्रजा अभि जिघ्रति तस्मा	6	5	15	इन्द्रो मरुद्विस्सोविद्
6	5	1	इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच	6	5	16	यच्छति प्र हरति द्वितीयै
6	5	2	तस्मा उक्थ्यमेव प्रायच्छु	6	5	17	प्राणमेव प्रथमेनास्पृणुता
6	5	3	तद्वैर्य्यजमानो भ्रातृव	6	5	18	अदितिः पुत्रकामा साध्येभ्य
6	5	4	हस्मानिगृह्णाति चखु	6	5	19	तृतीयमपचद्भोगाय म इदं श्र
6	5	5	आत्मानमेव यज्ञयशसेनापय	6	5	20	रुद्रमन्तरायन्स आदित्य
6	5	6	आयुर्वा एतद्यज्ञस्य यद्र	6	5	21	मिथुनम्पशवो वा एते यदादि
6	5	7	अर्घ्यवाङ्माणाऽन्येषाम्	6	5	22	एष वै विवस्वानादित्यो यदुप
6	5	8	आयुर्दधाति पुरस्तादुक्थस्य	6	5	23	अन्तर्यामपात्रेण सावित्
6	5	9	यज्ञेन वै देवास्सुवर्गैल्	6	5	24	देवास्तृतीयः सर्वन्त्रोदयच
6	5	10	हि तद्वेद यतं ऋतूनाम्मुखं	6	5	25	जनयति सोमे सोममभि गृह्
6	5	11	पुनर्रुतुनां तस्माद्वि	6	5	26	प्राणो वा एष यदुपाश्चुर्यद
6	5	12	प्रसिद्धमेवाध्वर्युर्दक्षिणं	6	5	27	लोकमजिगासन्ते सुवर्गैल्
6	5	13	सुवर्गाय वा एते लोकाय गृ	6	5	28	वदन्ति यद्धृतेन पालीवत

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	5	29	आह प्रजा वा इन्द्रियम्प्र	6	6	2	हुत्वोद्गृह्णाति सुवर्गमेव
6	5	30	वध्यम्पन्नन्न प्रति प्र	6	6	3	ऐति सोमच्युतमित्याहु सोमच
6	5	31	नेष्टुः पत्नीमुदानयेत्याहा	6	6	4	ऋषिमार्षेयमित्याहुष वै ब
6	5	32	इन्द्रो वृत्रमहन्तस्य शीर	6	6	5	वावैतदाहु हिरण्यन्ददाति ज्य
6	5	33	तं शृतम्भूतमजुहोद्यद्दाना	6	6	6	समिष्टयजूषि जुहोति यज्ञ
6	5	34	घासम्प्र यच्छेत्प्रहृत्य प	6	6	7	त्रयं इमे लोका इमानेव लोक
6	5	35	एनम्पशवो भुञ्जन्त उपं ति	6	6	8	यज्ञमप्रत्यतिष्ठिपा ३ यज्
6	5	36	ग्रहान्वा अनु प्रजाः पशव	6	6	9	अवभृथयजूषि जुहोति यदे
6	5	37	पुत्रङ्गिष्वत उपधावति ताद	6	6	10	अपं हन्ति पुरुषः पुरुषो निधन
6	5	38	गर्भेणाविज्ञातेन ब्रह्माऽव	6	6	11	यजति प्रजा वै बर्हिः प्र
6	5	39	प्रान्यानि पात्राणि युज्यन्	6	6	12	ऋतुष्वेव प्रति तिष्ठत्यवभ
6	5	40	प्रयुज्यन्ते तान्यन्वोषधय	6	6	13	सोमो यद्विन्दूनाम्भृष्यैत
6	5	41	उपाश्चन्तर्यामयोर्यदु	6	6	14	स्फ्येन वेदिमुदन्ति रथाख
6	5	42	व्याच्छ्रुत्स आत्मन्नाक्रमण	6	6	15	अनु पशव उपं तिष्ठन्ते पशुम
6	6	1	सुवर्गाय वा एतानि लोकाय	6	6	16	यदेकस्मिन्पू द्वे रंशने



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
6	6	17	जायतेऽसुरा वै देवान्दंख	6	6	32	एत एतान्ग्रहानपश्यन्तानंगृ
6	6	18	द्वेष्टि तमस्मै पशुनिर्दि	6	6	33	ज्योतिर्धत्ते ज्योतिष्मन्तो
6	6	19	य एकादशस्तनं एवास्यै स द	6	6	34	देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वत् तद
6	6	20	प्रजापतिः प्रजा अंसजत् स र	6	6	35	एषा वै प्रजापतेरतिमोखिणी
6	6	21	सौम्येन दधाति प्र जनयति पौ	6	6	36	देवा वै प्रबाहुग्रहानगृह
6	6	22	पुरस्तादेन्द्रस्य वैश्वदे	6	6	37	एव प्रति तिष्ठति यो वा अ
6	6	23	य एवावगतस्सोऽपं रुध्यते यो	6	6	38	प्रजापतिर्देवेभ्यो यज्ञान
6	6	24	इन्द्रः पत्न्या मनुमयाजयत्	6	6	39	न प्राभवत्त एतं षोडशिनमप
6	6	25	भवत्यनिष्टं वृथाऽथं पाली	6	6	40	अग्रमेव संमानानाम्पर्येति
6	6	26	घ्नन्ति वा एतथ्सोमैर्यदभिष	6	6	41	गृहीयात्प्रजाम्पशूनस्य
6	6	27	ईखन्ते पवित्रैः सौम	6	6	42	उपाप्नोति कनीयांसि वै देव
6	6	28	न गतमना भवत्यप वै तृतीयसंव	6	6	43	चतुष्पद एव पशूनं रुद्धे
6	6	29	यज्ञस्य स्विष्टं शमयति वरु	7	1	1	प्रजननं ज्योतिर्गन्निर्देव
6	6	30	देवा वा इन्द्रियैर्घोर्यं	7	1	2	यङ्गामङ्गामयंते तमेतेनाम्
6	6	31	गृहीयात्प्रत्यञ्चय्यज्	7	1	3	न्यमाडिति तस्मादोषधयोऽ

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	1	4	प्रजापतिर्वाव ज्येष्ठस्स ह	7	1	19	एव शंसत्यथ या सहस्रतमी
7	1	5	सामं राजन्यो मनुष्याणामवि	7	1	20	द्विभागम्वृद्धणे तृतीयमग
7	1	6	अन्वंसृज्यत वैराजं सामं शूद्	7	1	21	सोमो वै सहस्रमविन्दत्तमिन्
7	1	7	प्रातस्सवने वै गांयत्रेण	7	1	22	परि पश्यामोऽश्मा हरामहा इ
7	1	8	ब्रह्मवादिनो वदन्ति स त्व	7	1	23	शतैस्सोमं क्रीतो भवति सुक
7	1	9	प्रजान्तस्यान्तर्यन्ति प्र	7	1	24	भवति तामप्सु प्रावैशयन्य
7	1	10	खलु वै यज्ञेन यजमानो यजते	7	1	25	वरो देयस्सा हि वरस्सहस्रम
7	1	11	अङ्गिरसो वै सूत्रमांसत् ते	7	1	26	कल्याणी रूपसंमृद्धा सा स्य
7	1	12	अभिषुवः पूर्वमहर्भवति ग	7	1	27	अर्धयति प्रजावांन्यशुमान
7	1	13	अहन्त्सामं भवतीर्यै रथन्त	7	1	28	करोति रूपाणि जुहोति रूपे
7	1	14	आपो वा इदमग्रं सलिलमासीत्	7	1	29	सहस्रतम्यां वै यजमानस्सुव
7	1	15	यथाहंय्युष्मास्तपसासृग्	7	1	30	मा प्रतिष्ठाङ्गमय प्रजयां
7	1	16	शतानि त्रयस्त्रिंशत्तथाथ	7	1	31	प्रतिगृह्णाति ताम्प्रति ग
7	1	17	व्यवैर्यत् तस्माद्द्रुद्रा घा	7	1	32	इत्याह स्योनैवेनं सुषदां स
7	1	18	एषांलोकानामनु सन्तत्ये	7	1	33	अत्रिरददादौवाय प्रजाम्पु



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	1	34	य उद्यन्तस्तोमाश्श्रीस्सा	7	1	49	ईङ्गाराय स्वाहेङ्गताय स
7	1	35	जुमदग्निः पुष्टिकामश्चतूरा	7	1	50	आसिष्यते स्वाहाऽऽसीनाय स
7	1	36	सँवध्मरो वा इदमेक आसीथ	7	1	51	वीर्ख्यमाणाय स्वाहा वीर्ख्यता
7	1	37	य एवँविविद्वान्पञ्चरात्रेण	7	1	52	अग्नये स्वाहा वायवे स्वाहा
7	1	38	अहरत्तेनायजत ततो वै स वा	7	2	1	साध्या वै देवास्सुवर्गकाम
7	1	39	ऋतुष्वेव सँवध्मरे प्रति	7	2	2	पृष्ठेरेवतूनवारोहन्त्य
7	1	40	देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे	7	2	3	भवत्यन्नाद्यस्यावरुद्धा
7	1	41	विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रा	7	2	4	लोकस्सरस्वत्या यान्त्येष वै
7	1	42	आयनाय स्वाहा प्रायणाय स्व	7	2	5	कुसुरुबिन्द औद्दालिकिरकामय
7	1	43	अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा	7	2	6	एवावं रुद्धे पञ्चदशो भवती
7	1	44	पृथिव्यै स्वाहाऽन्तरिक्षाय	7	2	7	विश्वजिति यथा दुग्धामुप
7	1	45	अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा	7	2	8	बृहस्पतिरकामयत ब्रह्मवर्चसी
7	1	46	पृथिव्यै स्वाहाऽन्तरिक्षाय	7	2	9	त्रिवृदग्निष्टोमो भवति ते
7	1	47	भुवो देवानाङ्कर्मणापसुत	7	2	10	प्रजापतिः प्रजा असृजत तास
7	1	48	शरदा त्वर्तुना हविषा दीख	7	2	11	अस्मा इमे लोका ऊर्जम्

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	2	12	गच्छति न्वरात्रो भवत्यभि	7	2	27	गायत्रो वा ऐन्द्रवायवो गा
7	2	13	प्रजापतिरकामयत प्र जायेये	7	2	28	यज्ञमापद्यच्छन्दाः स्याप्र
7	2	14	य एवँविविद्वान्दशरात्रेण	7	2	29	ऐन्द्रवायवो गृह्यते स्व
7	2	15	एष यज्ञो यदशरात्रः ककुत	7	2	30	शुक्रो यथ्सप्तमेऽहञ्चक्र
7	2	16	देवपुरा अपश्यन् यदशरा	7	2	31	वै तृतीय्यज्ञमापद्यच्छन
7	2	17	एतत्कुर्वन्ति यज्ञ्यायाः स	7	2	32	एवान्तङ्गत्वापथात्यन्थाम
7	2	18	एकविंश उक्थ्यस्सोरीषु	7	2	33	अहस्तस्मिन्नेन्द्रवायवो गुं
7	2	19	ऋतवो वै प्रजाकामाः प्रजान	7	2	34	प्रजापतिरकामयत प्र जायेये
7	2	20	आर्तवा उच्यन्ते य एवँविवि	7	2	35	अग्निष्टोमम्पूर्वम्ययुज
7	2	21	गायत्रम्ब्रह्मवर्चसङ्गायत	7	2	36	एति प्रजापतिर्वा एष द्वा
7	2	22	ऐन्द्रवायवाग्रान्गृहीया	7	2	37	न वा एषोऽन्यतोवैश्वानरस्सुव
7	2	23	प्राणापानार्थ्यावा एते व	7	2	38	यवङ्गीष्मायोपधीर्वर्षाभ
7	2	24	श्रियै गत्वा नि वर्ततेऽन्त	7	2	39	मलञ्जायत एक एव यजेतैको
7	2	25	भवत्यथ तत्र प्राप्नोत्युरं	7	2	40	यास्तृतीयाः पात्राणि ताभि
7	2	26	सरस्वती वाचैवेनमति प्र युं	7	2	41	एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याः स



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	2	42	एकस्मै स्वाहा त्रिभ्यस्व	7	3	7	एष वा आतो द्वादशाहो यत्
7	2	43	द्वाभ्यां स्वाहा चतुर्भ्य	7	3	8	यद्वादशाहस्तां विच्छिन्द
7	2	44	त्रिभ्यस्स्वाहा पञ्चभ्यस्स	7	3	9	आदित्या अकामयन्तोभयौ लो
7	2	45	चतुर्भ्यस्स्वाहा ऽष्टाभ्यस्	7	3	10	भवन्त्यमुमेव तैर्लोकमभि ज
7	2	46	पञ्चभ्यस्स्वाहा दशभ्यस्स	7	3	11	प्रजापतिस्सुवर्गलोके मृत
7	2	47	दशभ्यस्स्वाहा विश्वे स्व	7	3	12	लोके पशवो य एव विद्वांस
7	2	48	विश्वे स्वाहा चत्वारिंश	7	3	13	ओजो वै वीर्यमृष्टान्योजं
7	2	49	पञ्चाशते स्वाहा शताय स्व	7	3	14	इन्द्रो वै सृष्ट्वेवताभिरास
7	2	50	शताय स्वाहा सहस्राय स्वा	7	3	15	गौरसावायुरेव लोकेषु
7	3	1	प्रजवैवा एतेन यन्ति यद्	7	3	16	इन्द्रो वै शिथिल इवाप्रति
7	3	2	हीयते तस्माद्विश्वेऽहन्नवि	7	3	17	दहन्ते पञ्चदशरात्रेणौज
7	3	3	स्युस्ते वि ब्रूयुर्यदि तत्	7	3	18	गौरसावायुरिमानेव लोकान्
7	3	4	तदुभयमास्वावरुध्योत्तिष	7	3	19	यन्ति परांश्चो वा एते सुव
7	3	5	ब्रह्मवादिनो वदन्ति किन्द	7	3	20	प्रजापतिरकामयतान्नादस्या
7	3	6	किमष्टमेनेत्यष्टावराङ्गा	7	3	21	यदछन्दोमय्यच्छन्दोमा भवं

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	3	22	सा विराड्विक्रम्यातिष्ठद्वा	7	3	37	द्व्यस्स्वाहा हनूभ्यां स
7	3	23	ब्रह्मवर्चसिनोऽन्नादा भं	7	3	38	असौभ्यां स्वाहा दोषभ्या
7	3	24	लोकमभ्यारोहन्ति यदन्यतः	7	3	39	अष्टेताय स्वाहाञ्जिस्वथ
7	3	25	असावादित्योऽस्मिन्नौक आं	7	3	40	कृष्णाय स्वाहा श्वेताय स्
7	3	26	सुवर्गे लोके प्रति तिष्ठन्	7	3	41	ओषधीभ्यस्स्वाहा मूलैभ्यस्
7	3	27	प्रति तिष्ठन्ति पृष्ठैव द	7	3	42	वन्स्पतिभ्यस्स्वाहा मूलैभ
7	3	28	प्रत्यवरोहेयुरुद्रा माद्	7	4	1	बृहस्पतिरकामयत् श्रमे दे
7	3	29	स्युस्त एकविंशतिरात्रमासीर्	7	4	2	इमानेव लोकानभ्यारोहन्त्यभ
7	3	30	अर्वाङ्गस्सङ्गामत्वमु	7	4	3	यन्त्यथो अनयोरेव प्रति त
7	3	31	ते हुवे स्वाहम् । सन्तै व	7	4	4	यथा वै मनुष्या एवन्देवा
7	3	32	आ वृञ्जे सुवः । पृथ्वीस्य	7	4	5	दैवी सस्योतिरतिरात्रो
7	3	33	भूतम्भव्यम्भविष्यद्वृष्टस	7	4	6	गच्छन्ति पृष्ठानि हि दैवी
7	3	34	आ मै गृहा भवन्त्वा प्रजा	7	4	7	छन्दोमा ओजस्येव वीर्ये प
7	3	35	अग्निना तपोऽन्वभवद्वाचा व	7	4	8	सुवर्गलोकेत्यन्ति परा
7	3	36	स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा स्व	7	4	9	ऋष्या वा इयमलोमकासीत्साक



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	4	10	वनस्पतीन्मृजाम्पशून्तेनां	7	4	25	वसिष्ठो हृतपुत्रोऽकामयत विन
7	4	11	प्रति तिष्ठन्ति त्रयस्त्रिंशत्	7	4	26	वज्रमेव भ्रातृव्येभ्यः प्र
7	4	12	रुन्धते सप्तदशो भवत्यन	7	4	27	दधते बहवण्डोऽशिनो भवन्त
7	4	13	देवता अभ्यारोहन्ति त्रयस्त	7	4	28	सँवत्सराय दीखिष्यमाण
7	4	14	व्यतिपज्यन्ते प्रजयां पशुभि	7	4	29	सँवत्सरस्य यत्कल्गुनीपू
7	4	15	प्रजापतिस्सुवर्गल्लोकमेत	7	4	30	पूर्वपखे सुत्या सम्पद्य
7	4	16	श्रीरहि मनुष्यस्य सुवर्ग	7	4	31	सुवर्गवा एते लोक्यन्
7	4	17	इयँवाव रन्ध्रमसौ बृहदा	7	4	32	ब्रह्मवादिनो वदन्त्यतिरात
7	4	18	द्वे वाव देवसुत्रे द्वादशा	7	4	33	सःस्तुता विराजंमभि सम्पद्य
7	4	19	अहरेकोऽभजताहरेकस्ताभिर्व	7	4	34	ज्योतिष्टोमप्रथममुप यन्त
7	4	20	एव लोकेषु प्रति तिष्ठन्त	7	4	35	अभि सम्पद्यन्ते द्वे चर्चा
7	4	21	वै दंशरात्रेण प्रजापतिः प	7	4	36	षडहेन यन्ति देवचक्रमेव स
7	4	22	आदित्या अकामयन्त सुवर्गल	7	4	37	तत्पुरुषमनु पर्यावर्तन्ते
7	4	23	भवति ज्योतिरेव पुरस्ताद	7	4	38	मेपस्त्वा पचतैरवतु लोहित
7	4	24	वीर्यं पशुषु प्रति तिष्ठन	7	4	39	कूप्याभ्यस्स्वाहा कृत्याभ

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	4	40	अद्भ्यस्स्वाहा वहन्तीभ्यस्	7	5	2	सँवत्सरो य एवँविद्वाः
7	4	41	यो अर्वन्तज्जिघांसति तमुभ	7	5	3	वै समुद्रस्तस्यैतत्पार्य्य
7	4	42	नमो राज्ञे नमो वरुणाय नमो	7	5	4	सँवत्सरः प्रयन्त एव सँ
7	4	43	मयोभूर्वातो अभि वातृसा	7	5	5	दधति प्रजननाय ज्योतिर्भ
7	4	44	गोष्ठे रिराहि । प्रजापतिर	7	5	6	तत्पथा यन्ति समानः साम
7	4	45	किं स्विदासीत्पूर्वचित्तिः	7	5	7	गावो वा एतत्सुत्रमांसताशृ
7	4	46	चन्द्रमा जायते पुनः । अग्	7	5	8	द्वादशे मासि शृङ्गाणि प्र
7	4	47	अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मां	7	5	9	प्रथमे मासि पृष्ठान्युप य
7	4	48	बिलधावनः । प्रियस्त्रीण	7	5	10	एतैऽनवारमपारम्प प्लवन्
7	4	49	पुष्टम्पशु मन्यते । शूद्रा	7	5	11	समान्यं ऋचो भवन्ति मनुष्यलो
7	4	50	प्र सुलामीति ते पिता गुभे	7	5	12	गृह्यत इयँवा अदितिरस्य
7	4	51	भूर्भुवस्सुवर्वसवस्त्वाञ्जन	7	5	13	यदि सोमो सःस्तुतो स्याताम्
7	4	52	प्राणाय स्वाहा व्यानाय स्	7	5	14	छन्दांसि वृद्धे सजनीयः श
7	4	53	सिताय स्वाहाऽसिताय स्वाहा	7	5	15	षडहेमांसान्धस्माद्याहर
7	5	1	गावो वा एतत्सुत्रमांसताशृ	7	5	16	प्राणमस्मिन्धस दधाति यत्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 1 - संहिता



काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description	काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	5	17	अ॒न॒न्ति॒ ना॒र्ति॒मा॒र्च्छ॑न्ति	7	5	32	च॒र्मा॒वं भि॒न्द॒न्ति॒ पा॒प्मान॑मे
7	5	18	उ॒ध्मृ॒ज॒न्ति॒ तुरी॒य॒ङ्ग॒लु वा	7	5	33	पृ॒थि॒व्यै स्वा॒हान्तरि॑ख्याय
7	5	19	उ॒ध्मृ॒ज्या (३) नो॒ध्मृ॒ज्या (३)	7	5	34	स्वा॒हा॒नु॒व॒र्ष॑ते स्वा॒हा शी
7	5	20	उ॒ध्मृ॒ज्यु॒र्यदा॑दि॒ष्टमु॒ध्मृ॒ज	7	5	35	द॒त्व॒ते स्वा॒हा॒ऽद॒न्त॒का॒य॒ स्
7	5	21	स॒र्व॒न॒म॒ष्टा॒भिरु॑पं य॒न्ति॒ यदे॑न्	7	5	36	अ॒म॒न॒से स्वा॒हा॒ रे॒त॒स्वि॒ने स
7	5	22	उ॒पं य॒न्ति प्रा॒जाप॑त्य॒म्य॒शुमा	7	5	37	क॒स्त्वां यु॒नक्ति॑ स त्वां यु॒नक
7	5	23	दे॒वानाँ॑वा अ॒न्त॑ञ्ज॒ग॒मुषां	7	5	38	अ॒ग्नये॑ गाय॒त्राय॑ त्रि॒वृ॒ते
7	5	24	स्तु॒व॒न्त्यनु॑श्लोकेन प॒श्चाद	7	5	39	यो वा अ॒ग्नो॒वाग्नि॑ः प्र॒ह्रिय
7	5	25	बृ॒ह॒द्ब्रा॒ह्म॒स्याव॑रु॒द्धा	7	5	40	उ॒पो॒त्था॒य प्र॒जाम्प॑शू॒नभि म
7	5	26	आ॒स्यै प॒श्चभि॑स्तिष्ठ॒न्तस्	7	5	41	अ॒भि॒जित्या॑ इ॒त्याहु॑र्य॒देता
7	5	27	स॒म्भृ॒त्य तेजं॑ आ॒त्म॒न्द॒धते॑	7	5	42	य॒ः प्रा॑ण॒तो नि॑मि॒षतो॑ म॒हित्
7	5	28	अ॒व॒र्णे॒ण वै स॑ह॒स्र॒शः प्र॑ज	7	5	43	य आ॑त्म॒दा ब॑ल॒दा यस्य॑ वि॒श्वं
7	5	29	न ह्या॑स॒मिष॑मूर्ज॒मा॒द॒दत॑ उ॒त	7	5	44	आ ब्र॑ह्म॒न्ब्रा॑ह्म॒णो ब्र॑ह्म॒व
7	5	30	वा॒च॒म॒वं रु॒न्यते॑ भूमि॒दु॒न्धु॒भि॒म	7	5	45	आ॒क्रान्॑वा॒जी पृ॒थि॒वीम॑ग्निं
7	5	31	वा ए॒ते दे॒वकृ॑तश्च पू॒र्वे	7	5	46	पा॒र॒या॒दित्य॑स्तै॒ वाजि॑न्यु॒ड

काण्ड	प्रश्न	पञ्चाशत्	Description
7	5	47	ज॒ज्ञि बी॒जं॒वर्षा॑ पर्ज॒न्
7	5	48	आ॒ग्ने॒र्यौ॒ऽष्टाक॑पाल॒स्सौम्य॑श्
7	5	49	अ॒ग्नये॑ऽ॒हो॒मुचे॑ऽष्टाक॑पाल
7	5	50	अ॒ग्नये॑ स॒म॒न॒म॒त्य॒थि॒व्यै स॒म॒न
7	5	51	वरु॑णो॒ऽद्वि॒स्सा॒ग्ने स॒म॒न॒म॒दृ
7	5	52	ये ते प॒न्था॑न॒स्स॒वित॑ः पू॒र्य
7	5	53	यो वा अ॒श्व॑स्य॒ मे॒ध्य॑स्य॒ शिर
7	5	54	स॒मु॒द्र उ॒दर॑म॒न्तरि॑ख॒म्या

PARANKUSHACHAR
INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।
नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः।



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	1	1	ब्रह्म सन्धत्तन्तम् जिन	1	1	16	यदस्या यज्ञियमासीत् । तदम्
1	1	2	सुवीराः प्रजाः प्रजुनयन्	1	1	17	यदाखुकरिषः संभारो भवति ।
1	1	3	व्यानः सन्धत्तन्तम् जिन	1	1	18	अबधिरा भवति । य एवैवेदं ।
1	1	4	प्राण्यज्ञपतये धत्तम् ।	1	1	19	कथमिदं स्यादिति । सौऽपश्य
1	1	5	इष्टमूर्जमस्मासु धत्तम् ।	1	1	20	तत्पृथिव्यै पृथिवित्वम् ।
1	1	6	कृत्तिकास्वग्निरादधीत ।	1	1	21	अथो शन्त्यायं । सरिता अग्न
1	1	7	अग्निं खत्रमित्यपचायन्	1	1	22	उत्तरत उपास्यत्यर्वाभ्याय
1	1	8	तेषामनाहितोऽग्निरासीत् ।	1	1	23	देवा वा ऊर्ज्यभजन्त । त
1	1	9	अर्यम्णो वा एतन्नखत्रम	1	1	24	यस्यं पर्णमयं संभारो भवति
1	1	10	ते सुवर्गायं लोकायाग्निमंच	1	1	25	तच्छुभ्यै शमित्वम् । यच्छमी
1	1	11	तौ दिव्यौ श्वानावभवताम् ।	1	1	26	द्वादशसु विक्रमेष्वाग्निम
1	1	12	यद्वसन्तः । यो वसन्ताऽग्नि	1	1	27	चखुर्वै सत्यम् । अत्रा
1	1	13	स्व एवेनमृतावाधायं ।	1	1	28	आग्नेयाः पशवः । ऐन्द्रमहः
1	1	14	उद्धन्ति । यदेवास्यां अमेध्यम् ।	1	1	29	इडा वै मानवी यज्ञानूकाशिन
1	1	15	पुष्ट्यामेव प्रजननेऽग्निम	1	1	30	यस्यैवमग्निराधीयतै । प्र

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	1	31	प्राच्यैषाः श्रीरंगात् । भु	1	1	46	तद्देवा विजित्यं । पुनरवार
1	1	32	प्रत्यस्मिन्लोकैः स्थास्यसि	1	1	47	तैऽग्नये शुचये । असौ वा आ
1	1	33	यस्यैवमग्निराधीयतै ।	1	1	48	नाङ्गानि । तादृगेव तत् । यद
1	1	34	भृगूणां न्वाऽङ्गिरसाँव्रत	1	1	49	यौऽग्निमाधत्ते । ऐन्द्राग
1	1	35	प्रजापतिर्वाचस्सत्यमपश्यत	1	1	50	यदाज्यम् । अनुडुहंस्तण्डुला
1	1	36	भूरित्याह । प्रजा एव तद्यजं	1	1	51	यथ्सद्य एतानि हवीः पि निर
1	1	37	सुवर्गाय वा एष लोकायाधीय	1	1	52	यथा त्रीण्यावपनानि पूरयैत
1	1	38	प्रजापतिः प्रजा असृजत ।	1	1	53	ब्रह्मवादिनो वदन्ति । होत
1	1	39	एष वै प्रजापतिः । यदग्निः	1	1	54	अग्निमुखानेव तून्मीणाति
1	1	40	जनिष्यमाणानेव प्रतिनुदते	1	1	55	वह्निनेव वह्निं यज्ञस्यावर
1	1	41	यदुपर्युपरि शिरो हरैत् ।	1	1	56	घर्मशिरस्तदयमग्निः । सम्
1	1	42	तस्यं त्रेधा महिमान्व्यौ	1	1	57	अर्कश्चखुस्तदसौ सूर्यस्त
1	1	43	यदग्निः । यदश्वस्य पदैऽग्न	1	1	58	ये तैऽग्ने शिवे तनुवौ । स
1	1	44	त्रीणि हवीः पि निर्वपति । व	1	1	59	इमे वा एते लोका अग्रयः ।
1	1	45	देवासुरास्सैव्यन्ता आसन्	1	1	60	अस्मिन्नेवेनल्लोके प्रति



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	1	61	सोऽश्वोऽवारो भूत्वा पराङ्गित	1	1	76	दोहा एव युष्माकमिति । सा
1	1	62	उपैन्मुत्तरो यज्ञो नमति ।	1	1	77	सा चतुर्थमुदक्रामत् । तत्
1	1	63	सप्राणमेवैनमाधत्ते । स्वद	1	1	78	तामात्मनोऽधि निर्मिमीते । य
1	1	64	अन्नमेवावरुन्धे । तेन मे द	1	1	79	पशून्वेतेन स्पृणोति । सप्रं
1	1	65	शमीगर्भादग्निमन्थति । ए	1	1	80	तेन सौऽस्याभीष्टं प्रीतः
1	1	66	तस्या उच्छेषणमददुः । तत्प्र	1	2	1	उद्धन्यमानमस्या अमेध्यम्
1	1	67	तस्या उच्छेषणमददुः । तत्प्र	1	2	2	यदिदन्दिबो यददः पृथिव्याः
1	1	68	उच्छेषणादेव तद्रेतो धत्ते	1	2	3	वृष्टीभिरनुवित्तुङ्गहांसु ।
1	1	69	इयतीर्भवन्ति । यज्ञपुरुषा	1	2	4	यत्पर्यपश्यत्सरिरस्य मध्ये
1	1	70	एतद्वा अग्नेः प्रियन्धाम ।	1	2	5	अतिप्रयच्छन्दुरितित्तरेयम्
1	1	71	जगतीभिर्वैश्यस्य । जगतीछन्	1	2	6	पूर्णमपतत्तृतीयस्यै दिवोऽध
1	1	72	यन्मांसमंश्जीयात् । यथ्स्त्	1	2	7	शमीः शान्त्यै हराम्यहम् । य
1	1	73	नैन्म्रतिनुदन्ते । ब्रह्म	1	2	8	शरीरमुभि सःस्कृतास्थ । प्र
1	1	74	सैव साऽग्नेस्सन्ततिः । तम्मथ	1	2	9	यज्ञियैः केतुभिस्सह । यन्
1	1	75	प्रजापतिः प्रजा असृजत । स	1	2	10	घृतैर्बोधयतातिथिम् । आऽस्म

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	2	11	शोचिष्केशो घृतनिर्णिक्पाव	1	2	26	अष्टाशंफाश्च य इहाग्रै । य
1	2	12	त्वामग्ने समिधान्य्यविष्ट ।	1	2	27	चतुश्शिखण्डा युवतिस्सुपेशाः
1	2	13	इन्धानो अक्रो विदथेषु दीद	1	2	28	नवैतान्यहानि भवन्ति । नव वै
1	2	14	आरोहतन्दशत् २ शक्ररीर्मम	1	2	29	पशवो वा उक्थानि । पशूनाम
1	2	15	प्रजयां पशुभिर्ब्रह्मवर्चस	1	2	30	सुवर्गमेव तेन लोकमभिजयन
1	2	16	अग्निमंश्चत्वादि हव्यवाह	1	2	31	अतिग्राह्याः परस्सामसु ।
1	2	17	अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीष	1	2	32	त्रयस्त्रिंशद्वै देवताः ।
1	2	18	कल्पेतान्द्यावापृथिवी । कल	1	2	33	सन्तर्तिवा एते ग्रहाः । यत
1	2	19	अन्तरिख्यस्य पोषेण । सर्व	1	2	34	एव २ सँवत्सरस्य परखंसी द
1	2	20	जीवात्वे पुण्याय । अहन्त्वद	1	2	35	सप्त वै शीर्षण्याः प्राण
1	2	21	अग्नेः सपत्न्याः अप बाधमानः	1	2	36	सुवर्गस्य लोकस्याभिजित्य
1	2	22	यस्त आत्मा पशुषु प्रविष्ट	1	2	37	एकविंश एष भवति । एतेन
1	2	23	ऊर्जन्तो धेहि द्विपदे चतुष	1	2	38	देवा वा आदित्यस्य सुवर्गस
1	2	24	तयोः पृष्ठे सीदतु जातवेदा	1	2	39	महादिवाकीर्त्यः २ होतुः पृ
1	2	25	नर्यं प्रजाम्मे गोपाय । अमृ	1	2	40	अप्रतिष्ठावा एते गच्छन्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	2	41	वैश्वदेवमालभन्ते । देवतां	1	3	6	तादृगेव तत् । उच्चैस्स्विष
1	2	42	मित्रेणैव यज्ञस्य स्विष्ट	1	3	7	तद्वैश्वानरवत्प्रजननवत्तर
1	2	43	यदतिरिक्तमेकादशिनीमालभेर	1	3	8	देवा वै यथादर्शयज्ञाना
1	2	44	प्रजापतिः प्रजासृष्ट्वा	1	3	9	तस्मिन्नाजिमधावत् । तम्बु
1	2	45	चतुर्विंशत्यर्धमासस्संवत्सर	1	3	10	य एवैवैद्वान् वाजपेयेन
1	2	46	त्रेधाविहितः हि शिरः । लो	1	3	11	वाज्येवैनम्पीत्वा भवति ।
1	2	47	पञ्चविंश आत्मा भवति । तस	1	3	12	वाग्वै वाजस्य प्रसवः । य एव
1	2	48	यदितद्वतो लोमानि दतो नृखान्	1	3	13	अप्येव नोऽत्रास्त्विति । ते
1	2	49	यस्य तल्पसद्यम्भिर्जितुः स्	1	3	14	तस्माद्वायतश्च मत्तस्य च
1	2	50	ब्राह्मणश्च शूद्रश्च चर्म	1	3	15	देवा वै यदन्येग्रहैर्यज्ञ
1	3	1	देवासुरास्संव्यत्ता आसन्	1	3	16	सर्व एन्द्रा भवन्ति । एकध
1	3	2	ते सोममन्वविन्दन् । तमग्र	1	3	17	एतन्मनुष्याणाम् । यथ्सुरा
1	3	3	अनाग्रेयैवा एतत्क्रियते	1	3	18	अन्नस्यैव शमलेन शमल्यज
1	3	4	यथा सुसम्बोधयति ।	1	3	19	पूर्व सोमग्रहा गृह्यन्ते ।
1	3	5	न सम्भृत्यास्सम्भाराः । न य	1	3	20	सम्पृचस्थ सम्मा भूद्रेण

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	3	21	तस्माद्वाजपेययाजी पूतो मेध	1	3	36	प्र वा एतैऽस्माल्लोकाच्च
1	3	22	ब्रह्मवादिनो वदन्ति । नाग्	1	3	37	कृष्णलङ्कृष्णलङ्काजसृष्ट्य
1	3	23	मारुत्या बहुतस्तोत्रम्	1	3	38	एतद्वै देवानाम्परममन्नम्
1	3	24	सुवर्गलोकः षोडशिनस्स	1	3	39	यो वाजपेयेन यजते । बार्
1	3	25	प्रजापतेरास्यै । श्यामा	1	3	40	ताप्यैयजमानम्परिधापयति
1	3	26	एतैः प्रचरति । यज्ञस्याघात	1	3	41	वाजस्यावरुद्धे । जाय एहि
1	3	27	सावित्रश्नुहोति कर्मणः कर्	1	3	42	एवमिव हि प्रजापतिस्समृद
1	3	28	इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्र	1	3	43	द्वादश मासास्संवत्सरः ।
1	3	29	यदेवास्याप्सु प्रविष्टम् ।	1	3	44	यावत्प्राणाः । यावदेवास्या
1	3	30	अपान्नपादाशुहेमन्त्रिति सम्मा	1	3	45	समहम्प्रजया सम्मया प्रजेत
1	3	31	देवस्याहः सवितुः प्रसवे	1	3	46	पुरस्ताद्धि प्रतीचीनुमन्न
1	3	32	वाजिनाः सामं गायते । अन्न	1	3	47	अमृत एव सुवर्गे लोके प्र
1	3	33	या दुन्दुभौ । परमयैव वाच	1	3	48	सप्तात्रहोमाश्नुहोति । सप
1	3	34	सप्तदशः प्रजापतिः । प्रज	1	3	49	अवरुद्धेन व्यृष्टेय । सर्
1	3	35	वाजिनो वाजन्धावत् काष्ठाङ्	1	3	50	पुरस्तात्पत्यश्चमभिषिज



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	3	51	इन्द्रियमेवास्मिन्नेतेन	1	4	1	उभये वा एते प्रजापतेरथ
1	3	52	इन्द्रियस्यावरुद्धौ । अनि	1	4	2	देवता वा एता यजमानस्य गृह
1	3	53	नृषदन्वेत्याह । प्रजा वै	1	4	3	देवा एव तद्देवानांच्छन्ति
1	3	54	अप्सुषदन्त्वा घृतसदमित्या	1	4	4	तैर्वै ते व्यावृत्तमगच्छन् ।
1	3	55	नाक्सदमित्याह । यदा वै वसी	1	4	5	तस्यां एते स्तनां आसन् । इ
1	3	56	इन्द्रो वृत्रं हत्वा । असुं	1	4	6	ऊर्जमेव तथा यजमान इमान्दु
1	3	57	तमैभ्यः पुनरददुः । तस्मात्	1	4	7	युवः सुराममश्विना । नमुचाव
1	3	58	एतद्वै ब्राह्मणम्पुरा वाजव	1	4	8	वाजसनिः रयिमुस्मे सुवीरम
1	3	59	षड्वा ऋतवः । ऋतूनेव प्रीण	1	4	9	यदत्र शिष्टः रसिनस्सुतस्य
1	3	60	ऋतवः खलु वै देवाः पितरः	1	4	10	यस्तं देव वरुण त्रिष्टुप्छन
1	3	61	ह्रीका हि पितरः । ओष्मणौ व	1	4	11	उदस्थाद्देव्यदितिर्विश्वरू
1	3	62	पितृभ्य आवृश्चेत । अवृष्	1	4	12	इमामेवास्मा उत्थापयति । आय
1	3	63	नमस्करोति । नमस्करो हि पि	1	4	13	दुग्ध्वा ददाति । न ह्यदृष्ट
1	3	64	युष्मास्तेऽनु । यैस्मिन्न	1	4	14	अद्विरेवैनंदाप्नोति । यो वै
1	3	65	देवानांवा इतरे यज्ञाः ।	1	4	15	यद्यद्वृत्तस्य स्कन्दैत् ।

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	4	16	वि वा एतस्य यज्ञश्छिद्यते	1	4	31	मभ्यत एव यज्ञः समादधाति
1	4	17	नि वा एतस्याहवनीयो गार्ह	1	4	32	एकैको वै जनतायामिन्द्रः
1	4	18	भागधेयेनैवैनम्प्रणयति ।	1	4	33	मरुत्वतोः प्रतिपदः । मरुत
1	4	19	पुनस्समन्यं जुहोति । अन्तेन	1	4	34	सर्वस्माद्वित्ताद्वेद्यात्
1	4	20	अथाग्निम् । अथाग्निहोत्रम्	1	4	35	उक्थ्यङ्कुर्वीत । यद्युक्थ
1	4	21	सर्वाभिरेवैनन्देवताभिर्द	1	4	36	इष्टः खलु वै पूर्वोऽर्ष
1	4	22	यस्ताम्यति । अन्तमेष्ट यज्ञस	1	4	37	तन्दखिण्णतो वेद्यै निधाय
1	4	23	यदाहवनीयमनुद्वाप्य गार्ह	1	4	38	अथो धुवन्त्येवैनम् । अथो
1	4	24	इतः प्रथमजंजे अग्निः ।	1	4	39	असुर्यवा एतस्माद्वर्ण
1	4	25	सहसे द्युम्नाय । ऊर्जेऽपत्	1	4	40	यदाहवनीयं उद्वायैत् । यत्त
1	4	26	ताभ्यामेवैनः समिन्धे । वज	1	4	41	अत्र वाव स निलयते । यत्र खल
1	4	27	पूर्वैणैवास्यं यज्ञेनं यज्	1	4	42	गार्हपत्यो वा अग्नेर्योनिः
1	4	28	यस्यं प्रातस्सवने सोमोऽतिरि	1	4	43	तथ्सुवर्णः हिरण्यमभवत् । य
1	4	29	मरुत्वतीषु कुर्वन्ति । तेनै	1	4	44	त आदारा अभवन् । इन्द्रो
1	4	30	अतिरिक्तस्य शान्त्यै । बण्म	1	4	45	नीतमिश्रेण तृतीयसवने । अ



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	4	46	पर्वमानस्सुवर्जनः । पवित्रे	1	4	61	अथं गृहमेधिनमाप्नोति । यदा
1	4	47	यत्तं पवित्रंमर्चिषि । अग्	1	4	62	अथादित्यो वरुणं २ राजानव
1	4	48	वैश्वानरो रश्मिभिर्मा पुन	1	4	63	स एतल्लौकर्मजयत् । यस्मिंश्श
1	4	49	इदमब्रह्म पुनीमहे । यः पाव	1	4	64	तत्साकमेधानां साकमेधत्वम्
1	4	50	सुदुघा हि पयस्वतीः । ऋषिभि	1	4	65	अथोपधय इमन्देवच्यम्बकै
1	4	51	ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ।	1	4	66	वायोरेव सायुज्यमुपैति । ब
1	4	52	प्रजा वै सूत्रमांसत् तपस्तप्	1	5	1	अग्नेः कृत्तिकाः । शुक्रम्प
1	4	53	तमुपोदतिष्ठन्तमंजुहवुः । तेन	1	5	2	बृहस्पतैस्तिष्यः । जुह्वत
1	4	54	तमुपोदतिष्ठन्तमंजुहवुः । तेन	1	5	3	देवस्यं सवितुर हस्तः । प्र
1	4	55	यद्यजंते । यामेव देवा ऊर्जम्	1	5	4	इन्द्रस्य रोहिणी । शृणत्पुर
1	4	56	यामेव पशव ऊर्जमवारुन्धत	1	5	5	वसूनां श्रविष्ठाः । भूतम्
1	4	57	अग्निर्वाव सँवत्सरः । आद	1	5	6	यत्पुण्यन्नखत्रम् । तद्वद
1	4	58	तस्माद्वरुणप्रघासैर्यजमानः	1	5	7	यो वै नखत्रियंमृजार्पति
1	4	59	वायुमेव तदनुवत्सरमाप्नोति	1	5	8	अस्मिंश्शाम्पिंश्च । याइ
1	4	60	यस्मिन्नग्निः । यद्वैश्वदे	1	5	9	यदभ्यजयन् । तदंभिजितौऽभि

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	5	10	ते रेवत्याम्प्राभं वन् । तस	1	5	25	देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वत । त
1	5	11	देवगृहा वै नखत्राणि । य	1	5	26	अथो परैव भवति । अथं देवा ऊ
1	5	12	यमन्खत्राण्युन्यानि । कृ	1	5	27	अथैतन्मनुर्वेने मिथुनम्
1	5	13	तान्युत्तरेण । अन्वैषामराथ	1	5	28	वैश्वदेवेनं चतुरो मासोऽ
1	5	14	तच्छ्रोणा । यदशृणोत् । तच्छ	1	5	29	य एवविंद्वाश्चातुर्मास
1	5	15	देवस्यं सवितुः प्रातः प्रंस	1	5	30	प्र जायते । य एवविंद्वाल्
1	5	16	प्राचीनंमध्यन्दिनात् । तत	1	5	31	ऋध्यामेव तद्वीर्यं एषु लो
1	5	17	भगस्यापराह्णः । तत्पुण्यन्त	1	5	32	आयुषः प्राणः सन्तनु । प्रा
1	5	18	ब्राह्मणो वा अष्टविंशो न	1	5	33	इन्द्रो दधीचो अस्थभिः । वृ
1	5	19	ब्रह्मवादिनो वदन्ति । कति	1	5	34	इन्द्रमर्केभिर्किणः । इन
1	5	20	व्यानादुपाशुसर्वनम् । वाच	1	5	35	उग्र उग्राभिरुतिभिः । तमि
1	5	21	ऋतमेव परमेष्ठि । ऋतत्रात्	1	5	36	देवासुरास्सर्व्यता आसन्
1	5	22	यद्धर्मः पर्यवर्तयत् । अन्त	1	5	37	तथ्यज्ञक्रतुभिर्नान्वविन्
1	5	23	यो अस्याः पृथिव्यास्त्वचि	1	5	38	ते तदन्तमेव कृत्वोदंद्रवन्
1	5	24	एकम्मासमुदंसुजत् । परमेष्	1	5	39	एव हि देवा अकुर्वत । इति



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	5	40	स्रुवेणाघारमाधाय । तिस्र	1	5	55	तस्यावांचोऽवपादादविभयुः । तम
1	5	41	तिस्रः परांचीराहुतीरहुत्	1	5	56	स बृहतीमेवास्पृशत् । द्वाभ
1	5	42	तस्मादभिनीयैवाहं पशुमा लं	1	5	57	यस्यान्तत्प्रत्यतिष्ठदिति
1	5	43	पञ्चपञ्ची वै यजमानः । त्वड	1	5	58	ते बृहती एव भूत्वा । बृह
1	5	44	स संमुद्र उत्तरतः प्राज्वल	1	5	59	ते बृहती एव भूत्वा । बृह
1	5	45	अथ यथ्सुवर्णरज्जुताभ्याङ्कुश	1	6	1	अनुमत्यै पुरोडाशमष्टाकपाल
1	5	46	तः संसदशेनाभि प्रास्तुवत	1	6	2	रुद्रो भूत्वाऽग्निरनुत्थाय
1	5	47	त्रिवृतैव तद्यजमानमाददते	1	6	3	स्वकृत इरिणे जुहोति प्रदरे
1	5	48	तमपञ्चदशेनैव हंरन्ति । याव	1	6	4	अन्त एव निर्ऋतिन्निरवद
1	5	49	यावती सप्तदशस्य मात्रा । प	1	6	5	इयमेवास्मै राज्यमनु मन्यत
1	5	50	मात्राः सायुज्यं सलोकताड	1	6	6	विष्णुर्यज्ञः । देवतांश्चै
1	5	51	ये वै चत्वारस्तोमाः । कृ	1	6	7	वार्ताग्रमेव विजित्यै । हि
1	5	52	एतानि वाव तानि ज्योतीरपि	1	6	8	यद्वही । तेनाग्नेयः । यदृष
1	5	53	यदश्विभ्यान्ध्यानाः । पृष्णः	1	6	9	इन्द्रियमेवावरुन्धे । ऋष
1	5	54	स यदष्टाकपालान्नातस्सवने	1	6	10	देवा वा ओषधीष्वजिमयुः । त

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	6	11	प्रथमजो वृत्सो दखिणा सम	1	6	26	रख्याः सै यज्ञं हन्त्युः । यदु
1	6	12	वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः	1	6	27	वाजिनो यजति । अग्निर्वायुस
1	6	13	सोमो रेतोऽदधात् । सविता प	1	6	28	यदप्रहृत्य परिधीक्षुह्यात्
1	6	14	स एतम्प्रजापतिर्मरुतः सप	1	6	29	प्रजापतिस्सविता भूत्वा प्र
1	6	15	याः पूर्वाः प्रजा असंख्य ।	1	6	30	प्रजानामवरुणग्राहाय । तासा
1	6	16	प्रजा एव तद्यजमानः पोषयति	1	6	31	तस्मात्पृथमात्रव्यं सौ ।
1	6	17	मामग्रे यजत । मया मुखेनासुं	1	6	32	प्राणापानावेवावं रुन्धे ।
1	6	18	तैऽग्निना मुखेनासुरानजयन्न	1	6	33	शमीपूर्णान्युप वपति । घासम
1	6	19	त्रिवृद्वर्हिर्भवति । मात	1	6	34	उत्तरस्युर्विद्यामन्यानि
1	6	20	अस्मिन्नेव तेनं लोके प्रति	1	6	35	तत्प्रतिप्रस्थाता करोति । त
1	6	21	बहुरूपा हि पशवस्समृद्ध	1	6	36	प्रघास्यान् हवामह इति पत्
1	6	22	त्रिःशस्यमप्यन्ते । त्रि	1	6	37	भ्रातृव्यदेवत्यो दखिण
1	6	23	यदेककपाल आर्ज्यमानयति । यज	1	6	38	प्रत्यङ्मुखं वरुणपाशान्निर्
1	6	24	यजमानस्यावद्येत् । उद्धा म	1	6	39	अप्सु वै वरुणः । सारखादेव
1	6	25	यदेककपालमाहवनीये जुहोति ।	1	6	40	देवासुरास्सर्व्यंता आसन्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	6	41	यद्ग्नयेऽनीकवते पुरोडाशमृष	1	6	56	एका हि पितृणाम् । दृष्टिषो
1	6	42	ते देवा मरुद्भ्यस्सान्तपने	1	6	57	खाता हि देवानाम् । मृथ्यतो
1	6	43	आशिंता एवाद्योपवसाम । कस्य	1	6	58	यथ्समूलम् । तत्पितृणाम् । स
1	6	44	ततो देवा अभवन् । पराऽसुर	1	6	59	षड्वा ऋतवः । ऋतूनेव प्रीण
1	6	45	न प्रयाजा इज्यन्तै । नानु	1	6	60	मृत्युना यजमानम्परिगृही
1	6	46	यत्पत्नी गृहमेधीयस्याश्नीय	1	6	61	अग्नये देवेभ्यः पितृभ्यस
1	6	47	ते देवा गृहमेधीयेनेष्टा	1	6	62	यदार्षेयैर्वृणीत । यद्धोत
1	6	48	अनु वृथ्सान् वांसयन्ति । भ्रा	1	6	63	यज्ञस्यैव चख्षुषी नान्तरै
1	6	49	भागधेयेनैवैन्ः समर्धयति	1	6	64	ऋतूनां सन्तत्यै । प्रैवेभ्य
1	6	50	अथ वयवैदाम् । अस्मभ्यमे	1	6	65	आ स्वधेत्याश्रावयति । अस्तु
1	6	51	उद्धारवाँ एतमिन्द्र उदहर	1	6	66	ये वै यज्वानः । ते पितरो बर
1	6	52	वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः	1	6	67	अथो यथाऽग्निः स्विष्टकृतं
1	6	53	पितृयज्ञेन सुवर्गल्लोकः	1	6	68	आहवनीयमुपतिष्ठन्ते । न्ये
1	6	54	सँवृथ्सरमेव प्रीणाति । प	1	6	69	प्राणो वै सुसन्दक् । प्रा
1	6	55	अर्धमासानेव प्रीणाति । अ	1	6	70	अथो तर्पयत्येव । तृप्यति

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	6	71	प्रतिपूरुषमेककपालान्निर्	1	7	11	वैष्णवत्रिकपालम् । वीर
1	6	72	तद्धि रुद्रस्य भागधेयम् ।	1	7	12	तेनेन्द्रः । यद्वामनः । तेन
1	6	73	न ग्राम्यान्पूशून् हिनस्ति	1	7	13	अग्निः प्रजाम्प्रजनयति । वृ
1	6	74	एष ते रुद्र भागस्सह स्वस	1	7	14	वृद्धानिन्द्रः प्रयच्छति ।
1	6	75	त्र्यम्बकयैजामह इत्याह ।	1	7	15	पवित्रैर्वै हिरण्यम् । पुन
1	7	1	एतद्ब्राह्मणान्येव पञ्च ह	1	7	16	रत्निनामेतानि हवीःपि भवन
1	7	2	द्वादशगवः सीरन्दृष्टिषां	1	7	17	यथ्सद्यो निर्वपैत् । यावती
1	7	3	सौऽब्रवीत् । क इदन्तुगीयमि	1	7	18	ऐन्द्रमेकादशकपालः राजन्यस्
1	7	4	वहिर्नी धेनुर्दृष्टिषां । यद्व	1	7	19	नैरुद्धतश्चरुम्परिवृत्तै
1	7	5	तः सृष्टः रख्याःस्यजिघाः सन्न	1	7	20	अन्नैर्वै मरुतः । अन्नमेव
1	7	6	इन्द्रो वृत्रं हत्वा । असुं	1	7	21	अन्नैर्वै पूषा । अन्नमेवाव
1	7	7	न दिवा न नक्तमिति । स एतम्	1	7	22	यन्न प्रतिनिर्वपैत् । रत्न
1	7	8	स एतानपामार्गानंजनयत् । तान	1	7	23	बारुहस्पत्ये मैत्रमपिदधा
1	7	9	स्वकृतं इरिणे जुहोति प्रदरे	1	7	24	देवसुवामेतानि हवीःपि भव
1	7	10	धात्रे पुरोडाशान्द्वादशकपा	1	7	25	वरुणो धर्मपतीनाम् । एतदेव



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	7	26	राज्यमेवास्मिन्प्रतिदधाति	1	7	41	दिशो व्यास्थापयति । दिशाम्भ
1	7	27	अरांतिमैवेनन्तारयति । असूप	1	7	42	उग्रामा तिष्ठेत्याह । इन्द्र
1	7	28	अर्थेत्स्स्थेति जुहोति । आहु	1	7	43	मारुत एष भवति । अन्नैव
1	7	29	ऊर्मिन्मन्तमेवेनङ्करोति । व	1	7	44	स राष्ट्रन्नाभवत् । स एतानि
1	7	30	राष्ट्रमेव वंचस्व्यंकः ।	1	7	45	पदुरस्तादभिषेक्तस्य जुहोति
1	7	31	वाशास्स्थेत्याह । राष्ट्रमे	1	7	46	सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे
1	7	32	राष्ट्रमेव तैजस्व्यंकः । अ	1	7	47	शतायुः पुरुषश्शतेन्द्रियः
1	7	33	देवीरापस्सम्मधुमतीर्मधुमत	1	7	48	सोमो राजा वरुणः । देवा धर
1	7	34	शतमानम्भवति । शतायुः पुरु	1	7	49	स्वयैवेनदेवतयाऽभिषिञ्च
1	7	35	सोमस्य ह्येतद्वात्रम् । शु	1	7	50	ओजं एवास्मिन्दधाति । खत्त
1	7	36	स्वाहा राजसूयायेत्याह । रा	1	7	51	उदङ्कुरेत्याग्रीद्धे जुहोत
1	7	37	यावानेव पुरुषः । तस्मिन्वी	1	7	52	प्रजापते न त्वदेतान्यन्य इ
1	7	38	अग्निरेवैनुङ्गाहंपत्येनाव	1	7	53	इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्र
1	7	39	आभ्यामेव प्रसूतो यजमानो	1	7	54	षड्वा ऋतवः । ऋतुभिरेवै
1	7	40	इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्र	1	7	55	मरुताम्प्रसवे जेषमित्याह

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	7	56	इन्द्रियमेव वीर्यमात्मन्	1	8	7	अनुद्वाहमग्नीधे । वहिर्
1	7	57	नमो मात्रे पृथिव्या इत्या	1	8	8	ईश्वरो वा एष दिशोऽनून्मदित
1	7	58	त्रयोऽश्वा भवन्ति । रथश्चतु	1	8	9	आदित्याम्मलुहाङ्गभिर्णीम
1	7	59	मित्रोऽसि वरुणोऽसीत्याह	1	8	10	इन्द्रियैव गर्भः । राष्ट्र
1	7	60	वैश्वदेव्यो वै प्रजाः । त	1	8	11	यदश्विभ्याम्पूणे पुरोडा
1	7	61	ब्रह्मा(३)न्त्वराजन्ब्रह्माऽसीन्द्रोऽसि	1	8	12	अग्नेयमष्टाकपालन्निर्वपत
1	7	62	मित्रोऽसि सुशेव इत्याह ।	1	8	13	रूपाण्येव तेन कुर्वते । वै
1	7	63	नैनं सत्यानृते उदिते हिंस	1	8	14	मासिमास्येतानि हवीरपि नि
1	7	64	ओदनमुद्धवते । परमेष्ठ	1	8	15	इन्द्रस्य सुपुवाणस्य दशधेन
1	8	1	वरुणस्य सुपुवाणस्य दशधेन्द	1	8	16	स शार्दूलः । यत्कर्णयोः । स
1	8	2	सोमैन् राजाऽष्टमे । त्वप्	1	8	17	त्विषिमेवावरुन्धे । त्रयो
1	8	3	जामि वा एतत्कुर्वन्ति । यथ	1	8	18	यथसीसम् । न स्त्री न पुमान्
1	8	4	अन्नं विराट् । विराजैवान्	1	8	19	तिस्रो हि रात्रोः क्रीतस्सो
1	8	5	प्रजापतेरास्यै । प्राका	1	8	20	अनिरुक्तं प्रजापतिः । प्रज
1	8	6	द्वादश पष्ठैहीर्ब्रह्मणै ।	1	8	21	यन्निषु यूपैष्वाल्भेत । ब



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
1	8	22	ब्राह्मणम्परिक्रीणीयादुच्छ	1	8	37	अपश्व्यो द्विरात्र इत्याह
1	8	23	इन्द्रिये एवास्मै समीचीं	2	1	1	अङ्गिरसो वै सत्रमांसत । त
1	8	24	उत वा एषाऽश्वः सुते । उता	2	1	2	तासांङ्गिष्वा रुप्यन्त्यैत्
1	8	25	शतायुः पुरुषश्शतेन्द्रियः	2	1	3	स्वदन्तेऽस्मा ओषधयः । ते व
1	8	26	तन्निदधाति प्रतिष्ठित्यै ।	2	1	4	प्रजापतिरग्निमसृजत । तम्
1	8	27	अग्निष्टोममग्र आहरति । य	2	1	5	तद्धृतमभवत् । तस्माद्यस्य
1	8	28	एतावान् वै यज्ञः । यावान्प	2	1	6	वसीय एव चैतयते । तवाङ्गम्
1	8	29	उप त्वा जामयो गिर इति प्र	2	1	7	भोगायेवास्य हुतम्भवति । त
1	8	30	यदाह पवस्व वाचो अग्निय इत	2	1	8	सोऽग्निरिबिभेत् । आहुतीभिर्
1	8	31	तस्मादुद्वृतीर्भवन्ति । सौर	2	1	9	तस्मादग्निहोत्रमुच्यते । तद
1	8	32	तैरेव स्वात्रैति । यानि देव	2	1	10	आग्नेयी वै रात्रिः । ऐन्द
1	8	33	विद्वा एकविंशः । राष्ट्र	2	1	11	प्रैव तेन जायते । उदिते सूर
1	8	34	इयवै रजता । असौ हरिणी	2	1	12	प्रैव जायते । अथो यथा दिवा
1	8	35	अप्रतिष्ठितो वा एष इत्याहु	2	1	13	उद्यन्तवावादित्यमग्निरन
1	8	36	नानैवाहोरात्रयोः प्रतितिष	2	1	14	उभाभ्याम्प्रातः । न देवता

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	1	15	तूष्णीमुत्तरामाहुतिञ्जुहोत	2	1	30	षट्सम्पद्यन्ते । षड्वा ऋतव
2	1	16	रुद्रो वा एषः । यदग्निः । प	2	1	31	यन्निमार्ष्टि । तदोषधीनाम्
2	1	17	घर्मो वा एषोऽशान्तः । अहरह	2	1	32	आत्मनो गोपीथाय । निर्णेने
2	1	18	तत्पशव्यम् । यजुहोति ।	2	1	33	ब्रह्मवर्चसस्य समिद्धौ
2	1	19	पर्यग्नि करोति । रक्ष्यसामपह	2	1	34	ब्रह्मवादिनो वदन्ति । अग्
2	1	20	पत्नीः शुचाऽर्पयेत् । उदी	2	1	35	वनस्पतय इध्मः । दिशः परिध
2	1	21	पशूनेवावरुन्धे । सर्वाङ्गम्	2	1	36	अहरेव तेन दखिण्यङ्कुरुत
2	1	22	अन्यस्मै प्रयच्छति । तादृ	2	1	37	यजमानस्यापराभावाय । यत्प्रा
2	1	23	यदेन समयच्छत् । तथ्समिधंस	2	1	38	इमामेव पूर्वया दुहे । अमू
2	1	24	यद्वे समिधावाध्यात् । भ	2	1	39	पशुमानेव भवति । दधेन्द
2	1	25	उत्तरावर्तौ देवा आहुत	2	1	40	चतुरुन्नयति । चतुरख्वर रथन
2	1	26	यस्यैवञ्जुहति । भवत्येव	2	1	41	यो वा अग्निहोत्रस्योपसदो
2	1	27	हुत्वोपसादयत्यजामित्वाय ।	2	1	42	य एववैद । उपैनमुपसदो न
2	1	28	यज्ञस्थाणुमृच्छेत् । अति	2	1	43	य एववैद । तस्य त्वैव हु
2	1	29	द्विर्जुहोति । अथ कं द्वे	2	1	44	तानेवोभयाः स्तर्पयति । त एन



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	1	45	प्रजापतिरकामयतात्मन्वन्मै	2	1	60	ऋतन्त्वां सत्येन परिषिञ्चा
2	1	46	चख्युष आदित्यः । तेषां हृत	2	2	1	प्रजापतिरकामयत प्रजास्मृजे
2	1	47	तनुवां अहमिति वायुः । चख्य	2	2	2	प्रजापतिरेव भूत्वा प्रजाय
2	1	48	य एववैदं । तौ वायुरब्रवी	2	2	3	दर्भस्तम्बे जुहोति । एतस्
2	1	49	प्रजापतिमभिपर्यावर्तत । स	2	2	4	सोऽरण्यम्परेत्यं । दर्भस्त
2	1	50	रौद्रङ्गविं । वायव्यमुपसृ	2	2	5	अग्निवान् वै दर्भस्तम्बः ।
2	1	51	दृष्टिणत उपसृजति । पितृलो	2	2	6	अग्निमादधानो दशहोत्राऽरण
2	1	52	न सम्मृशति । पापवस्यसस्य	2	2	7	अभिचर्न्दशहोतारञ्जुह्यात् ।
2	1	53	ऐन्द्राग्रमुपसादितम् । सर्व	2	2	8	प्रजापतिरकामयत दर्शपूर्णमा
2	1	54	त्रयो वै प्रैयमेधा आसन्	2	2	9	ग्रहो भवति । दर्शपूर्णमा
2	1	55	यश्च यजुषाऽजुहोद्यश्च तू	2	2	10	पञ्चहोतारम्मनसाऽनुद्रुत्या
2	1	56	यस्याग्निहोत्रमहुतं सूर्य	2	2	11	तद्ग्रहस्य ग्रहत्वम् । पशु
2	1	57	यदग्निमुद्धरति । वसवस्तर	2	2	12	सौऽस्माध्मृष्टोऽपाकामत् ।
2	1	58	तस्मिन्त्यस्य तथाविधे जुह	2	2	13	यथ्सम्भाराः । ततो वै तेभ्यो
2	1	59	अङ्गारा भवन्ति । तेभ्योऽङ्गा	2	2	14	प्रजापतिरकामयत प्रजायेयेत

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	2	15	तम्पूर्वपुख्ये याजयेत् । वसी	2	2	30	वारुणो वा अश्वः । स्वयैवेन
2	2	16	प्रजा पशवं इमे लोकाः । य	2	2	31	अनयैवेनत्प्रतिगृह्णाति । व
2	2	17	ते तपोऽतप्यन्त । त आत्मन्निन	2	2	32	यद्वे शिवम् । तन्मयः । आत्म
2	2	18	तच्चतुरहोत्रा प्राजंनयन्	2	2	33	कामो हि दाता । कामं प्रतिगृ
2	2	19	त आदित्या एतम्पञ्चहोतारमपश	2	2	34	अन्तो वा एष यज्ञस्यं । यद्
2	2	20	कं स्थ । कं वस्सृज्यो ह	2	2	35	अत्रमेवाव रुन्धते । मनसा
2	2	21	प्रजापतिरकामयत प्र जायेये	2	2	36	चतुरहोतृन् होता व्याचंप्
2	2	22	असृष्टिं वा इममिति । तस्य	2	2	37	तदेनम्प्रकाशङ्गतम् । प्रका
2	2	23	सौऽन्तरिख्यमसृजत । चातुर्	2	2	38	प्रजापतिं प्रजा असृजत । ता
2	2	24	प्र प्रजायां पशुभिर्मिथुनैर	2	2	39	मित्रमेव भवतः । प्रजापतिर
2	2	25	तद्दुर्वर्णं हिरण्यमभवत् ।	2	2	40	य एववैदं । अभि भ्रातृव्य
2	2	26	सुवर्णं आत्मनां भवति । दुर्	2	2	41	तस्य वा इयङ्कृतिः । यदिद
2	2	27	सप्तदशेन प्राजायत । य एव	2	2	42	देवा वै चतुरहोतृभिर्विज्ञम
2	2	28	देवा वै वरुणमयाजयन् । स यस	2	2	43	ऋजुपैवेनममुल्लोकङ्गमयति
2	2	29	राजा त्वा वरुणो नयतु देवि द	2	2	44	इन्द्रियमेवात्मन्यन्ते । य



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	2	45	तृप्यति प्रजायां पशुभिः । उ	2	2	60	प्रजापतिरिन्द्रमसृजतानुजाव
2	2	46	इन्द्रस्सप्तहोत्रा । प्रजा	2	2	61	यदस्मिन्नादित्ये । तदेनमब्
2	2	47	आप्रीर्भिराप्नुवन् । तदाप्र	2	2	62	विदुरेनुवाम्ना । तदस्मै
2	2	48	तमवधिष्म । पुनरिम् सुवामहा	2	2	63	चन्द्रवानेव भवति । तदेव
2	2	49	सर्वमायुरेति । सोमो वै यशः	2	2	64	अयवौ इदम्परमोऽभूदिति
2	2	50	इदवाँ अग्ने नैव किञ्च नास	2	2	65	साध्याः पराश्वम् । य एववे
2	2	51	तस्मात्तेपाणाज्योतिरजायत	2	2	66	पश्चात्पर्यायन् । स पश्चा
2	2	52	स संमुद्रोऽभवत् । तस्मात्सम	2	2	67	मुखमुत्तरतः । ऊर्ध्वा उदाय
2	2	53	स कस्मा अज्ञि । यद्यस्या अप्	2	2	68	प्रजापतिरकामयत बहोर्भूयान्
2	2	54	य एववैद । नास्य गृहे रु	2	2	69	तस्य प्रयुक्तीन्द्रोऽजायत ।
2	2	55	तेभ्यो मृन्मये पात्रेऽन्नम्	2	2	70	पशुमानेव भवति । सौऽकामयत्
2	2	56	ताभ्यो दारुमये पात्रे पयो	2	2	71	स षड्विंशतस्सप्तहोतारत्रिरं
2	2	57	तामपाहत् । सौऽहोरात्रयोस्स	2	2	72	पुद्भिर्मुखेन । ते देवाः पश
2	2	58	एते वै प्रजापतेर्दोहाः ।	2	2	73	यदिदङ्किञ्च । य एववैद ।
2	2	59	असतोऽधि मनोऽसृज्यत । मनः प	2	3	1	ब्रह्मवादिनो वदन्ति । किञ्

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	3	2	प्रजापतिर्दशहोता । य एवञ्	2	3	17	ब्रह्मवादिनो वदन्ति । यद्
2	3	3	प्रत्येव तिष्ठति । ब्रह्मव	2	3	18	तेनौषधीरसृजन्त । यत्पञ्चहोता
2	3	4	दखिणाम्प्रतिग्रहीष्यन्स्	2	3	19	केनतूनकल्पयन्तेति । धात
2	3	5	प्राणानेवास्योप दासयति । यद	2	3	20	एते वै देवा गृहपतयः । तान्
2	3	6	कुप्ता अस्मा ऋतव आरयन्ति ।	2	3	21	यद्वा इदङ्किञ्च । तथ्सर्वञ्
2	3	7	साम्नोऽधि यजूंष्यसृजत । यजु	2	3	22	सर्वा दिशोऽभिजयति । प्रजाप
2	3	8	तदिन्द्रय्यश आर्च्छत् । तदे	2	3	23	प्रजापतिः प्रजास्मृष्ट्वा
2	3	9	यो वा अविद्वान्निवर्तयते ।	2	3	24	ते प्रत्यंशृण्वन् । ते दं
2	3	10	पृथिवी न्यवर्तयत । सौषधीभि	2	3	25	पञ्चत्विजः । षट्त्वोऽह्
2	3	11	तस्य वा अग्नेरहिरण्यम्	2	3	26	ता उपौहन्त्यस शौरपण्या
2	3	12	तदेतेनैव प्रत्यंगृह्णात् । त	2	3	27	प्रजापतिः पुरुषमसृजत । सौ
2	3	13	चतुर्थमिन्द्रियस्यात्मन्	2	3	28	कुसिन्धश्चात्मनस्स्पृणोति
2	3	14	अथ योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति	2	3	29	तानि चात्मनस्स्पृणोति । आ
2	3	15	तस्य वै मनोस्तल्पम्प्रतिजग्	2	3	30	समिथ्सप्तमी । सप्तहोतारमे
2	3	16	तदेतेनैव प्रत्यंगृह्णात् । त	2	3	31	प्रजापतिरकामयत् प्र जायेये



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	3	32	तेनासुनाऽसुरानसृजत । तदसुरा	2	3	47	ब्रह्मात्मन्वदसृजत । तदकाम
2	3	33	यन्त्यस्य पितरो हवम । स प	2	3	48	आत्मन्नात्मन्त्रित्यामन्त्रयत
2	3	34	ब्रह्मवादिनो वदन्ति । यो व	2	3	49	षडूतो ह वै नामैषः । तद्वा
2	3	35	यतोऽयम्पवन्ते । यदभिपवन्ते ।	2	3	50	पुरोखप्रिया इव हि देवाः ।
2	3	36	अस्याः पवन्ते । इमामभिपवन्ते	2	4	1	जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण
2	3	37	आदित्यमभिपवन्ते । आदित्यम्	2	4	2	ताः स्ववृत्रहञ्जहि । वस्व
2	3	38	तस्मात्पुरस्ताद्वातम् ।	2	4	3	अपापांचो अभिभूते नुदस्व । अपोद
2	3	39	सर्वा दिशोऽनुविवाति । सर्वा	2	4	4	हव्यवाहमभिमातिषाहम् । रुख
2	3	40	अथ यदुत्तरतो वाति । सवित	2	4	5	मन्यै त्वा जातवैदसम् । स ह
2	3	41	य एवास्यं दखिणतः पाप्मानः	2	4	6	सो अस्माः अभयतमेन नेषत् । स्
2	3	42	उत्तरत इतरान्याप्मनस्सचन	2	4	7	प्रति ष्म देव रीषतः । तर्पिष
2	3	43	प्रजापतिस्सोमः राजानमसृज	2	4	8	आ सिन्धोरा पंगुवतः । दख्यम
2	3	44	प्र त्वा पद्ये । सोमैवे रा	2	4	9	प्र ण आयूः षि तारिषत् । त्वम
2	3	45	आऽस्यार्धवैवाज । ताः होद	2	4	10	स इदमप्रति पप्रथे । ऋतूनुथ
2	3	46	यद्यौ कामयैत प्रियस्याद	2	4	11	मन्युर्भगो मन्युरेवासं दे

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	4	12	चख्युषो हेते मनसो हेते । वा	2	4	27	प्रारोचयन्मनवे केतुमहाम
2	4	13	तन्मृत्युर्निरुक्त्या सवि	2	4	28	त्वः सोम ऋतुभिस्सुकृतुं
2	4	14	अपनह्यामि ते बाहू । अपनह्या	2	4	29	अधा ते विष्णो विदुषां चिद्वध
2	4	15	वृषद्वारेण वज्रेण । कृत्य	2	4	30	इमा धाना घृतसुवः । हरी
2	4	16	गिरा यज्ञस्य साधनम् । श्रु	2	4	31	हरिर्वपसङ्गिरः । आचर्षणि
2	4	17	तिग्मशृङ्गो वृषभश्शोशुचानः	2	4	32	अरन्ते सोमस्तनुवै भवाति ।
2	4	18	वयः सोम व्रते तव । मनस्त	2	4	33	इन्द्रा गंहि प्रथमो यज्ञियां
2	4	19	सा नो देवी सुहवा शर्म यच्	2	4	34	नुक्तज्ञाताऽस्योपधे । रामे
2	4	20	पर्वत इवाविचाचलिः । इन्द्र	2	4	35	असिंक्रियस्योपधे । निरितो नां
2	4	21	जुष्टौ नरो ब्रह्मणा वः पितृ	2	4	36	शुनः हुवेम मघवान्मिन्द्रम
2	4	22	मा त्वखेत्राण्यरणानि गन्म	2	4	37	प्रोवारत मरुतो दुर्मदा इव ।
2	4	23	इमन्नो यज्ञविहवे जुषस	2	4	38	देवा भाग्यैथा पूर्वे । स
2	4	24	अग्निश्च विष्णो तप उत्तमम	2	4	39	संज्ञान्नस्त्वैः । संज्ञा
2	4	25	प्र यस्सत्राच् मनसा यजाते	2	4	40	अग्ने हिरण्यसन्दृशः । अदब्ध
2	4	26	होतारश्चित्रंरथमध्वरस्य ।	2	4	41	शिप्रिन्वाजानामपते । शचीवस



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	4	42	यजत्रा मुञ्चतेह माँ । यज्ञ	2	4	57	यज्ञस्य काम्यं प्रियः । दद
2	4	43	द्रुपदादिव मुञ्चतु । द्रुप	2	4	58	अथेममन्थन्नमृतममूराः । वै
2	4	44	वृषासो अ०शु० पंवते हविष्मा	2	4	59	अन्तरिख्वं द्विपंप्रथे । दु
2	4	45	त० स०धीर्चीरूतयो वृष्णिंयान	2	4	60	रात्री चंख्यदायती । पुरु
2	4	46	दृढान्यौघादुशमान् ओजः ।	2	4	61	यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि । र
2	4	47	रजा०सि चित्रा विचरन्ति तन्	2	4	62	ततः खरत्युखरैम् । तद्विश
2	4	48	अव्ययन्नसितन्देव वस्वः	2	4	63	वृषा०स्य०शु०वृषभायं गृह
2	4	49	यो गर्भमोषधीनाम् । गर्वाङ्कु	2	4	64	अस्या० पृथिव्या अध्यख्यम्
2	4	50	इन्द्रश्च नशुनासीरौ । इमय	2	4	65	यस्यायमृषभो हविः । इन्द्रा
2	4	51	उत न० प्रिया प्रियासु । स	2	4	66	प्रेह्यभि प्रेहि प्र भरा स
2	4	52	तदस्य प्रियमभि पाथो अश्याम	2	4	67	सुर्वर्तीरप एना जयेम । यो घृ
2	4	53	उपं नस्सुनवो गिरः । शृण्वन	2	4	68	इन्द्रो जातो वि पुरो रुरोज
2	4	54	अध्वरेपुं नमस्यत । अनाम्यो	2	4	69	आयाहि सोमं पीतये । स्वारुह
2	4	55	कनात्काभान् आभर । प्रयुफ	2	4	70	अस्मे द्यावापृथिवी भूरि वा
2	4	56	मुष्कयोर्निहितस्सपः । सु	2	4	71	विश्वा आशा० पृतनास्सञ्जय

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	4	72	प्र सद्यो अग्ने अत्यैष्यन्	2	5	7	सो अन्तरिख्वे रजसो विमानः
2	4	73	ब्रह्मं यज्ञस्य तन्तवः । ऋ	2	5	8	पुनर्न इन्द्रो मघवां ददातु
2	4	74	स प्रब्रवन्नवीयसा । अग्नौ	2	5	9	जेता शत्रून्विचरपणिः । आ
2	4	75	अग्निर्विशाम्मानुपीणाम् । त	2	5	10	सेदग्निरग्नी०रत्यैतून्यान्
2	4	76	स नो रास्व सहस्रिणः । नव०	2	5	11	अगृभीता० पशवस्सन्तु सर्वे
2	4	77	उभा हि वा० सुहवा जोहवीमि	2	5	12	आ नो भर् भगमिन्द्र द्युमन्त
2	4	78	हविषोऽस्य नवस्य नः । सुवुर	2	5	13	अहन्नहिमन्वपस्तर्द । प्रव
2	4	79	इमे धेनु अमृतैर्ये दुहाते	2	5	14	यदिन्द्राहन्प्रथमजा महीनाम्
2	4	80	स एना विद्वान् यंख्यसि । न	2	5	15	नातांरीरस्य समृतिवधानाम
2	5	1	प्राणो रंख्यति विश्वमेजत्	2	5	16	उदुञ्जिहानो अभि काममीरयन्
2	5	2	आ न एतु पुरश्चरम् । सह देव	2	5	17	इमय्यैजमृध्विनां वर्धयन्
2	5	3	वाग्देवी जुषतामिद० हविः ।	2	5	18	यज्ञो रायो यज्ञ ईशे वसून्
2	5	4	उदेहि वाजिन्यो अस्यप्स्व	2	5	19	तन्त्वां भग सर्व इज्जोहवीमि
2	5	5	अस्मभ्यं द्यावापृथिवी शक्	2	5	20	इयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छ
2	5	6	यूयमुग्रा मरुत० पृश्निमातरः	2	5	21	धारावरा मरुतो धृष्णुवोज



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	5	22	हिरण्यवाशीरिषिरस्सुवृषाः	2	5	37	मरुतो वृत्रहन्तमम् । येन ज
2	5	23	अरण्यान्यरण्यान्यसौ । या प	2	5	38	यूयम्पात स्वस्तिभिस्सदां न
2	5	24	उतो अरण्यानिस्सायम् । शुक्	2	5	39	अपो यांचामि भेषजम् । अप्सु
2	5	25	वार्त्रहत्याय शवंसे । पृतन	2	5	40	तस्याम्मे रास्व । तस्यास्ते
2	5	26	शिवे ते द्यावापृथिवी उभे	2	5	41	ज्योतिषा त्वा वैश्वानरेणोपत
2	5	27	द्रुहः पाशान्निर्ऋत्यै चो	2	5	42	देवेभ्यो हव्यं बह नः प्रज
2	5	28	यूयम्पात स्वस्तिभिस्सदां न	2	5	43	सैनः सश्वदेवस्सत्यम्
2	5	29	तान्त्वा मुद्रला हविषां वर्	2	5	44	भूरीणि वृत्वा हर्यश्च हंसि
2	5	30	वसूनान्त्वाऽर्धातेन । रुद्रा	2	5	45	अपाम्भूमानमुप नस्सृजेह ।
2	5	31	दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।	2	6	1	स्वाद्वीन्त्वा स्वादुना ।
2	5	32	प्रजापतिः प्रणेता । बृहस्प	2	6	2	द्धन्वा यो नर्यो अपस्वन्त
2	5	33	मित्रः खत्रङ्खत्रपतिः	2	6	3	इन्द्रस्य युज्यस्सखा । ब्र
2	5	34	स ईम्पाहि य ऋजीषी तरुत्रः	2	6	4	सरस्वत्या इन्द्राय सुत्राम
2	5	35	अभीके चिदु लोककृत् । सङ्गे	2	6	5	उपयामगृहीतोऽस्याश्चिन्ते
2	5	36	जुषताम्प्रति मेधिरः । प्र	2	6	6	सोमो राजाऽमृतः सुतः । ऋजी

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	6	7	कुङ्कुङ्गिरसो धिया । ऋते	2	6	22	वीर्यायान्नाद्यायभिषिञ्
2	6	8	वेदेन रूपे व्यंकरोत् । सता	2	6	23	यशो मुखम् । त्विषिः केशांश्
2	6	9	सुरावन्तम्बरहिषदः सुवीरै	2	6	24	चित्तम्मे सहः । बाहू मे ब
2	6	10	इमन्तः शुक्रमधुमन्तमिन्द	2	6	25	आनन्दनन्दावाण्डौ मै । भग
2	6	11	अमीमदन्त पितरः । अतीतुपन्त	2	6	26	त्रया देवा एकादश । त्रयस्
2	6	12	पवित्रेण शतायुषा । विश्वम्	2	6	27	यजूंषि सामभिः । सामान्युग
2	6	13	ये संजातास्समनसः । जीवा जी	2	6	28	यदेवा देवहेडनम् । देवासश्
2	6	14	सीसैन तन्मन्मन्सा मनीषिण	2	6	29	सूर्यो मा तस्मादेनसः । विश
2	6	15	अस्थि मञ्जानम्मासैरे । का	2	6	30	अवभृथ निचङ्कुण निचेरुरसि नि
2	6	16	इन्द्रस्सुत्रामा हृदयेन स	2	6	31	पूतम्पवित्रेणवाज्यम् । आ
2	6	17	प्राशीर्व्यक्तश्शतधार् उथ	2	6	32	तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । अ
2	6	18	अविर्न मेणो नसि वीर्याय ।	2	6	33	होतां यख्यत्समिधेन्द्रमिडस्
2	6	19	केशा न शीरुषन् यशसे श्रि	2	6	34	वेत्वाज्यस्य होतुर्यजं । होत
2	6	20	मित्रोऽसि वरुणोऽसि । समहं	2	6	35	वेत्वाज्यस्य होतुर्यजं । होत
2	6	21	साम्राज्याय सुक्रतुः । देव	2	6	36	वीतामाज्यस्य होतुर्यजं । हो



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	6	37	महीन्द्रपत्नीरुहविष्मन्तीः	2	6	52	होता यख्यदिडेडित आजुह्वान
2	6	38	मध्वा समञ्जस्यथिभिस्सुगेभ	2	6	53	भिषजाऽश्विनाऽश्वा शिशुमती
2	6	39	समिद्ध इन्द्र उषसामनीके	2	6	54	अश्विनेन्द्राय भेषजम् । शु
2	6	40	पुरन्दरो मधवान् वज्रबाह	2	6	55	वियन्त्वाज्यस्य होतुर्यजं ।
2	6	41	उपासानक्ता बृहती बृहन्तम	2	6	56	अश्विनेडा न भारती । वाचा स
2	6	42	अच्छिन्नन्तुम्पयसा सरं	2	6	57	श्रिया न मासरम् । पयस्सोमं
2	6	43	आचरणिप्रा विवेष यन्मा	2	6	58	होता यख्यदग्निः स्वाहाऽऽज्यं
2	6	44	देवम्बरुहिरिन्द्रः सुदेवन	2	6	59	स्वाहाऽग्निः होत्राङ्गुषाण
2	6	45	देवी उपासानक्ता । इन्द्रं	2	6	60	समिद्धो अग्निरश्विना । तप्
2	6	46	वसुवने वसुधेयस्य वीताय	2	6	61	अधातामश्विना मधुं । भेषजम्
2	6	47	देवा दैव्या होतारा । देवमि	2	6	62	कवप्यो न व्यचस्वतीः । अश्
2	6	48	वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु	2	6	63	दैव्या होतारा भिषजा । पातमिन
2	6	49	देव इन्द्रो वनस्पतिः । हिर	2	6	64	अश्विना हविरिन्द्रियम् ।
2	6	50	होता यख्यत्समिधाऽग्निमिडस्	2	6	65	दधाना अभ्यनूषत । हविषा य
2	6	51	बदरैरुपवाकाभिर्भेषजन्तोक्म	2	6	66	वरुणः ख्यत्रमिन्द्रियम् ।

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	6	67	देवम्बरुहिस्सरस्वती । सुद	2	6	82	तिस्रो देवीर्हिरण्ययीः ।
2	6	68	देवी उपासावश्विना । भिषज	2	6	83	द्विपदञ्चन्द्रं इहेन्द्रियम्
2	6	69	देवी ऊर्जाहती दुर्घे सुदु	2	6	84	समिद्धो अग्निस्समिधा । सुष
2	6	70	देवीस्तिस्सस्तिस्त्रो देवीः	2	6	85	अनुष्टुप्चन्द्रं इन्द्रियम् ।
2	6	71	देव इन्द्रो वनस्पतिः । हिर	2	6	86	उपे यद्वा सुपेशसा । विश्वे
2	6	72	स्योनमिन्द्र ते सदैः । ईशा	2	6	87	विगदुन्दं इहेन्द्रियम् ।
2	6	73	अग्निमद्य होतारमवृणीत । अय	2	6	88	वसन्तेनतुना देवाः । वसं
2	6	74	सरस्वत्ये भेषेणेन्द्रायाश्	2	6	89	वैरूपेण विशोर्जसा । हविरिन
2	6	75	उशन्तस्त्वा हवामह आ नो अग्	2	6	90	देवम्बरुहिरिन्द्रं वयोधस
2	6	76	अहोमुचं पितरस्सोम्यासः	2	6	91	देवी देववयोधसम् । उपे
2	6	77	होता यख्यदिडस्पदे । समिधा	2	6	92	देवी ऊर्जाहती देवमिन्द्रं
2	6	78	शुचिमिन्द्रं वयोधसम् । उ	2	6	93	देवीस्तिस्सस्तिस्त्रो देवीर्
2	6	79	वेत्वाज्यस्य होतुर्यजं । होत	2	6	94	देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं
2	6	80	द्वारो देवीर्हिरण्ययीः ।	2	7	1	त्रिवृश्स्तोमो भवति । ब्रह्
2	6	81	पृष्ठवाहुङ्गावयो दधत् ।	2	7	2	अरुणो मिर्मिरस्त्रिशुक्रः



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	7	3	पुरोधामेव गच्छति । तस्य प	2	7	18	इन्द्राय त्वा पर्यस्वते पर्यस
2	7	4	प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशो दे	2	7	19	ओजस्वदस्तु मे मुखम् । ओजस्
2	7	5	यदाग्नेयो भवति । अग्निमुख	2	7	20	आयुरसि । तत्ते प्रयच्छामि ।
2	7	6	अथो य एव कश्च सन्ध्यायतै	2	7	21	आयुरसि विश्वायुरसि । सर्वा
2	7	7	यदाग्नेयो भवति । आग्नेयो	2	7	22	अपाय्यो द्रवणे रसः । तमह
2	7	8	अथ वीर्यावत्तरो भवति । अथ	2	7	23	अभिप्रेहि वीर्यस्व । उग्रश
2	7	9	वज्रस्य वा एषोऽनुमानाय ।	2	7	24	अनु सोमो अन्वगिरावीत् ।
2	7	10	न वै सोमैन् सोमस्य सर्वोऽस्त	2	7	25	प्रजापतिः प्रजा असृजत । ता
2	7	11	यो वै सोमैन् स्यूतै । स देवस	2	7	26	सर्वे पुरुषाः । सर्वैष्येव
2	7	12	य एतेन् यजते । य उ चैनमेवव	2	7	27	पुष्टिन्तेन । यत्कमण्डलुम
2	7	13	एष गौसवः । षट्त्रिंश उक्	2	7	28	तदस्मिन्नेकधाऽधात् । रोहि
2	7	14	य एतेन् यजते । य उ चैनमेवव	2	7	29	अवेत्योऽवभृथाः नाः इति । य
2	7	15	असौ बृहत् । अनयोरेवेन्मन	2	7	30	प्रजापतिरकामयत बृहोर्भूयान्
2	7	16	सिंहे व्याघ्र उत या पृदाक	2	7	31	बृहोर्भवति । य एतेन् यजते ।
2	7	17	इन्द्र्या देवी सुभगा जुज	2	7	32	अगस्त्यो मरुद्भ्य उख्णः

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	7	33	एवञ्चतुर्थे । पञ्चात्तमेऽ	2	7	48	इद्विष्णुर्विचक्रम् इति
2	7	34	य उ चैनमेववैद । मारुतो	2	7	49	व्याघ्रोऽयमग्नौ चरति प्रव
2	7	35	अस्या जरांसो दमा मरित्राः	2	7	50	तस्य मृत्यो चरति राजसूयम्
2	7	36	द्वे विरूपे चरतस्स्वर्थे ।	2	7	51	आऽयम्भातु शवसा पञ्च कृप्
2	7	37	औख्यन्धृतैरास्तृणन्वर्हिर	2	7	52	विश्रयस्व दिशो महीः । विश
2	7	38	ते स्वानिनो रुद्रिया वृ	2	7	53	तथा त्वा सविता करत् । इन्द्र
2	7	39	श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः	2	7	54	अरुणन्त्वा वृकमुग्रङ्गजड
2	7	40	दिवि श्रवो दधिरे युज्ञियांसः	2	7	55	अभिप्रेहि वीर्यस्व । उग्रश
2	7	41	तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना	2	7	56	मा न इन्द्राभितस्त्वदृष्वा
2	7	42	द्विता यो वृत्रहन्तमः । वि	2	7	57	इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् ।
2	7	43	भरेष्विन्द्रं सुहव हवामहे	2	7	58	तद्वावाणस्सोमसुतो मयोभुव
2	7	44	ऋष्या तं इन्द्र स्थविरस्य ब	2	7	59	ये केशिनः प्रथमास्सत्रमासं
2	7	45	गर्भस्तयो नियुतो विश्ववाराः	2	7	60	देहि दखिणाम्प्रतिस्वाय
2	7	46	प्रजापतिः पशून्सृजत । तैऽस	2	7	61	तेभ्यो निधानम्बहुधा व्यैच
2	7	47	स इन्द्रमब्रवीत् । इमान् ई	2	7	62	इन्द्रं वै स्वाविशो मरुतो



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	7	63	य२ राजानंविशो नापचार्येयु	2	8	12	वसूयवो वसुपते वसूनाम् । व
2	7	64	हरन्त्यस्मै विशो बलिम् । ऐ	2	8	13	सन्देवाना२० सुमत्या यज्ञिया
2	7	65	तद्यथा ह वै संचक्रिणो कप्ल	2	8	14	बृहस्पतिस्समजयद्वसूनि । म
2	7	66	स्तोवृहतीषु स्तुवते स्तो बृह	2	8	15	सोमो धेनु२ सोमो अर्वन्तमा
2	8	1	पीवौन्ना२ रयिवृधस्सुमेधाः	2	8	16	या ते धामानि दिवि या पृथि
2	8	2	बृहद्रथिर्विश्ववारा२ रथप	2	8	17	विचक्रमे त्रिदेवः । आ ते
2	8	3	व्य३ स्याम् पतयो रयीणाम् ।	2	8	18	विश्वन्तुदम्भयत् एजदस्मात्
2	8	4	परावतो निवते उद्वतश्च ।	2	8	19	मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः
2	8	5	सहस्रधामा जुषता२ हविर्नः ।	2	8	20	अथेमा विश्वा२ पृतना जयासि ।
2	8	6	धियम्पूषा जिन्वतु विश्वमिन्	2	8	21	अनाधृष्यो मघवा शूर इन्द्र
2	8	7	ते शुक्रासश्शुचयो रश्मिवन्	2	8	22	दिशोऽदृ२ हृदृ२ हिता दृ२ हणेन
2	8	8	अस्मे कामन्दाशुषे सन्नमन्	2	8	23	इन्द्रस्तरंस्वानभिमातिहोत्रः
2	8	9	स्तीर्णम्बरहिस्सीदता यज्	2	8	24	हत्वाभिमाती२ पृतनास्सहस्र
2	8	10	यो देव्यानि मानुषा जनु२षि	2	8	25	य इमे द्यावापृथिवी महित्व
2	8	11	अग्ने त्वम्पारया नव्यो अस	2	8	26	अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रू

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	8	27	ता नो अमीवा अप बाधमानौ ।	2	8	42	भगन्धिर्यैवाजयन्त२ पुरन्
2	8	28	विष्णूवरुणावभिश्चिपावाम् ।	2	8	43	शमभिपाचश्शमं रातिपाचः ।
2	8	29	यथ्सौवर्णिष्ठे बृहती विमि	2	8	44	द्यौ२ पित२ पृथिवि मातरध्र
2	8	30	भूरिन्द्रे अचरन्ती चरन्तम्	2	8	45	अस्माकम्ब्रह्म पृतनासु सह
2	8	31	शुचिन्तु स्तोमः३ श्रथद्वत	2	8	46	यद्व२ हिष्टन्नाति विदे सुदा
2	8	32	धर्मस्वदेभिर्द्रविणव्य	2	8	47	आ नो जनै श्रवयतय्युवाना ।
2	8	33	रायस्स्याम् रथ्यो विवस्वतः	2	8	48	अर्हन्विभरषि मा नस्तोके
2	8	34	प्रपथे दिव२ प्रपथे पृथिव्य	2	8	49	सूर्यो देवीमुषस्२ रोचमाना
2	8	35	सञ्चखाणो भुवना देव ईयत	2	8	50	यदेदयुक्त हरितस्सुध्यात्
2	8	36	वरुणस्सुरुक्मा उपं शिश्रिया	2	8	51	दिवो रुक्मा उरुचखा उदैत
2	8	37	गुरुद्वेषो अरुरुषे दधन्ति ।	2	8	52	आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरि
2	8	38	शिख्या सखिभ्य२ पुरुहूत नृभ	2	8	53	उभे त्वष्टृर्बिभ्यतुर्जायम
2	8	39	गीर्भिवर्ध वृषभश्चरषणी	2	8	54	व्यम्भिन्नस्य सुमतौ स्याम
2	8	40	आ देवो यातु सविता सुरवः	2	8	55	हिरण्ययो वृषभिर्यात्वश्वे
2	8	41	विश्रयमाणो अमतिमुरुचीम् ।	2	8	56	अन्तान्दिवो बाधते वर्तन्भि



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
2	8	57	उदहथुरणसो अस्त्रिधानैः ।	2	8	72	विश्ववांरा वरिवोभा वरैण्या
2	8	58	विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्	2	8	73	पूर्वापरश्चरतो माययेतौ ।
2	8	59	अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य । प	2	8	74	अम्भः किमासीद्ब्रह्मन्भीरम्
2	8	60	समानमर्थम्पर्यमि भुञ्जत्	2	8	75	मनसो रेतः प्रथमय्यदासीत्
2	8	61	अन्नम्प्राणमन्नमपानमाहुः	2	8	76	अथा को वेद यत आबभूव । इ
2	8	62	अहं सदमृतो भवामि । मदादित	2	8	77	यतो द्यावापृथिवी निष्टतुख
2	8	63	सा नो हवञ्जुषतामिन्द्रपत्न	2	8	78	राजां चिद्यम्भगम्मुखीत्याह
2	8	64	तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनी	2	8	79	तेन व्यम्भगवन्तस्स्याम । तन्
2	8	65	इदम् उदितङ्गुधि । यथा दे	3	1	1	अग्निर्पातु कृत्तिकाः ।
2	8	66	श्रद्धाम्मध्यन्दिनम्परि ।	3	1	2	सा नो यज्ञस्य सुविते दधात
2	8	67	सुतश्च योनिमसतश्च विवः ।	3	1	3	यत्ते नखत्रमृगशीर्षमस्
2	8	68	अन्तर्विश्वमिदञ्जगत् । ब्र	3	1	4	प्रमुञ्चमानो दुरितानि विश
2	8	69	ब्रह्मं समिद्वैवत्याहुतीनाम	3	1	5	बृहस्पतिः प्रथमञ्जायमानः ।
2	8	70	गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच	3	1	6	ये अन्तरिख्यम्पृथिवीद्विख्व
2	8	71	ता सूर्याचन्द्रमसां विश्वभृ	3	1	7	ये अग्निदग्धा येऽनग्निदग्धा

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	1	8	अर्यमा राजाऽजस्तुर्विष्मान	3	1	23	यो देवानाम्भिषजौ हव्यवाहौ
3	1	9	आयातु देवस्सवितोपयातु । ह	3	1	24	नवोनवो भवति जायमानो यमादि
3	1	10	निवेशयन्नमृतान्मर्त्यांश्श	3	1	25	व्युच्छन्ती दुहिता दिवः ।
3	1	11	तन्नो वायुस्तदु निष्ठां श	3	1	26	प्र नखत्राय देवाय । इन्द्र
3	1	12	विपूचश्शत्रून्प बाधमानौ ।	3	1	27	अग्निर्वा अकामयत । अन्नादो
3	1	13	ऋद्ध्यास्म हव्यैर्मसोपसद	3	1	28	प्रजापतिः प्रजा असृजत । ता
3	1	14	तस्मिन्वयममृतन्दुहानाः ।	3	1	29	सोमो वा अकामयत । ओषधीनां रा
3	1	15	अहर्नो अद्य सुविते दधातु	3	1	30	रुद्रो वा अकामयत । पशुमान्
3	1	16	यासांमषाढा मधु भुख्यन्ति	3	1	31	ऋष्या वा इयमलोमकाऽऽसीत् ।
3	1	17	यस्मिन्ब्रह्माभ्यजयत्सर्व	3	1	32	बृहस्पतिर्वा अकामयत । ब्रह्म
3	1	18	महीन्देवीविष्णुपत्नीमजु	3	1	33	देवासुरास्सर्व्यंता आसन्
3	1	19	यज्ञत्रं पान्तु वसंव पुरस	3	1	34	पितरो वा अकामयन्त । पितृल
3	1	20	तन्नो नखत्रं शतभिषग्जुषा	3	1	35	अर्यमा वा अकामयत । पशुमान्
3	1	21	अहिर्बुध्नियः प्रथमान एति	3	1	36	भगो वा अकामयत । भृगी श्रेष्
3	1	22	इमानि हव्या प्रयता जुषाणा	3	1	37	सविता वा अकामयत । श्रमे



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	1	38	त्वष्टा वा अंकामयत । चित्रम्	3	1	53	पूषा वा अंकामयत । पशुमान्थ
3	1	39	वायुर्वा अंकामयत । कामचारम्	3	1	54	अश्विनौ वा अंकामयेताम् । श्र
3	1	40	इन्द्राग्नी वा अंकामयेताम् ।	3	1	55	यमो वा अंकामयत । पितृणां रा
3	1	41	अथैतत्पौर्णमास्या आज्यन्ति	3	1	56	अथैतदमावास्याया आज्यन्ति
3	1	42	मित्रो वा अंकामयत । मित्रधे	3	1	57	चन्द्रमा वा अंकामयत । अहोरा
3	1	43	इन्द्रो वा अंकामयत । ज्यैष्ठ	3	1	58	अहोरात्रे वा अंकामयेताम् ।
3	1	44	प्रजापतिर्वा अंकामयत । मूलं	3	1	59	उषा वा अंकामयत । प्रियाऽऽदि
3	1	45	आपो वा अंकामयन्त । समुद्रश्च	3	1	60	अथैतस्मै नखत्राय चरुनिर्
3	1	46	विश्वे वै देवा अंकामयन्त । अ	3	1	61	सूर्यो वा अंकामयत । नखत्रा
3	1	47	ब्रह्म वा अंकामयत । ब्रह्मल	3	1	62	अथैतमर्दित्ये चरुनिर्वपति
3	1	48	विष्णुर्वा अंकामयत । पुण्यश्च	3	1	63	अथैतद्विष्णवे चरुनिर्वप
3	1	49	वसवो वा अंकामयन्त । अग्रन्द	3	2	1	तृतीयस्यामितो दिवि सोमं आस
3	1	50	इन्द्रो वा अंकामयत । दृढोऽशि	3	2	2	तस्मात्त्रिणित्रिणि पूर्णस्य
3	1	51	अजो वा एकपादकामयत । तेजस्व	3	2	3	यत्प्राचीमा हरैत् । देवलो
3	1	52	अहिर्वै बुध्नियोऽंकामयत । इ	3	2	4	वायवं एवैनान्परि ददाति । प

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	2	5	वृध्मेभ्यश्च वा एतां पुरा	3	2	20	तस्मादयं सर्वतः पवते । हु
3	2	6	यजमानस्य पशून्पाहीत्याह ।	3	2	21	पवित्रवत्यानयति । अपाञ्चे
3	2	7	देवस्य त्वा सवितुः प्रसूव	3	2	22	अमूमिति नामं गृह्णाति । भृद्
3	2	8	ओषधीनामहिंसायै । यज्ञस्य	3	2	23	बहु दुग्धेन्द्राय देवेभ्यो
3	2	9	त आवहन्ति कवयं पुरस्तादित	3	2	24	यातयाम्ना हविषां यजेत । अथो
3	2	10	यद्वा इदङ्किञ्च । तदेवाना	3	2	25	अग्निहोत्रमेव न दुह्याच्छ
3	2	11	यज्ञस्यानतिरेकाय । वृषवृ	3	2	26	सोममेवैनत्करोति । यो वै सोम
3	2	12	देवबर्हिश्शतवल्श्चिरो	3	2	27	अयस्पात्रेण वा दारुपात्रे
3	2	13	अर्दित्ये रास्माऽसीत्याह । इ	3	2	28	कर्मणे वान्देवेभ्यश्शकेयमि
3	2	14	पूषा तै ग्रन्थिङ्गधात	3	2	29	यज्ञमेवारभ्यं प्रणीय प्रचं
3	2	15	ब्रह्मणैवैनद्धरति । उर्वन	3	2	30	अपः प्रणयति । आपो वै सर्वा
3	2	16	पूर्वेद्युरिध्माबर्हिः कं	3	2	31	अध्वर्युश्च यजमानश्च प्रद
3	2	17	अन्तरिखँवै मातरिध्वन	3	2	32	अहुतमसि हविर्धानमित्याहा
3	2	18	वसूनाम्पवित्रमसीत्याह । प	3	2	33	अश्विनौ हि देवानामध्वर्यु
3	2	19	सौम्यः पूर्णस्संयोनित्वायं ।	3	2	34	इदन्देवानामिदमु नस्सहेत्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	2	35	इन्द्रो वृत्रमंहन् । सौऽप	3	2	50	धृष्टिरसि ब्रह्मं यच्छेत्या
3	2	36	द्विपाद्यजमानं प्रतिष्ठित्	3	2	51	अन्तरिख्य एव ज्योतिर्धत्ते
3	2	37	प्राणैरेव प्राणान्धसम्पृण	3	2	52	धर्मासि दिशो दृष्ट्वेत्याह
3	2	38	युष्मानिन्द्रोऽवृणीत वृत्रत	3	2	53	अथ द्वे । अथ त्रीणि । अथ च
3	2	39	अथो रख्यसामपंहत्यै । शुन्यं	3	2	54	अमुष्मिंल्लोकेऽनु परैति ।
3	2	40	अस्या एवेनत्त्वचङ्करोति ।	3	2	55	जगत्या तत् । छन्दस्सम्मितान
3	2	41	अधिषवणमसि वानस्पत्यमित्या	3	2	56	देवस्य त्वा सवितुः प्रंसव
3	2	42	देवताभिरेवेनधसमर्धयति ।	3	2	57	तस्मादेवमाह । स रेवतीर्ज
3	2	43	इषमेवोर्ज्यजमाने दधाति ।	3	2	58	आप ओषधीर्महयन्ति । तादृगे
3	2	44	वृङ्क एषामिन्द्रियद्वीर	3	2	59	घर्मोऽसि विश्वायुरित्याह
3	2	45	रख्यसाम्भागोऽसीत्याह । तुष	3	2	60	अर्धमासैर्धमासे प्रवृज्
3	2	46	अवधूतः रखोऽवधूता अरातय	3	2	61	रख्यसामन्तरहित्यै । पुरो
3	2	47	कृष्णो रूपङ्कृत्वा । यत्कृ	3	2	62	अविदहन्तश्प्रयतेति वाच्व
3	2	48	धिषणाऽसि पार्वतेयी प्रति त	3	2	63	वेदेनाभिवांसयति । तस्मात्के
3	2	49	यावदेका देवता कामयते या	3	2	64	प्राणाः पशवः । प्राणैरेव

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	2	65	मयि तनूस्सन्निधध्वम् । अहं	3	2	80	क्रूरमिव वा एतत्करोति । य
3	2	66	ततो द्वितोऽजायत । स तृतीयं	3	2	81	यददश्चन्द्रमसि मेध्यम् ।
3	2	67	सूर्याभिनिमुक्तः कुन्खिनि	3	2	82	रख्यसामपंहत्यै । स्फ्यस्य व
3	2	68	देवस्य त्वा सवितुः प्रंसव	3	2	83	वज्रो वै स्फ्यः । यदन्वञ्चन
3	2	69	तेज एवास्मिन्दधाति । विषाद	3	2	84	यथोपधाय वृश्चन्त्येवम् ।
3	2	70	मेध्यामेवेनान्देव्यजनीङ्कर	3	2	85	यत्पुरस्तात्प्रत्यगुपसादय
3	2	71	द्वौ वाव पुरुषौ । यश्चैव द्व	3	3	1	प्रत्युष्टः रख्यः प्रत्यु
3	2	72	भ्रातृव्यमेव पृथिव्या अपंह	3	3	2	अन्तरिख्यमुपभृत् । पृथिवी
3	2	73	अन्तरिख्यदेवेनमपंहन्ति ।	3	3	3	वृष्टिमेव निषच्छति । अवाच
3	2	74	क्यन्नो दास्यथेति । यावत्स	3	3	4	प्राचीमभ्याकारम् । अत्रैरन
3	2	75	भवत्यात्मना । पराऽस्य भ	3	3	5	सुगर्घ्येषा । प्राणो वै स
3	2	76	प्राञ्चो वेद्यः सावुन्नयति	3	3	6	दिवश्शिल्पमवततम् । पृथिव
3	2	77	मूलंजिह्वन्ति । भ्रातृव्यस्यै	3	3	7	स्वेनैवेनानि छन्दसा । स्वय
3	2	78	प्रजापतिना यज्ञमुखेन सम्मि	3	3	8	यद्येनानि पशवोऽभितिष्ठेयु
3	2	79	पुरीषवतीङ्करोति । प्रजा वै प	3	3	9	प्रतिष्ठति प्रजयां पशुभि



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	3	10	नवदावो ह्येषाम्प्रियः । य	3	3	25	चतुष्पादः पशवः । पशुष्वेव
3	3	11	अयंज्ञो वा एषः । योऽपत्नीक	3	3	26	अष्टावृत्पृथिवी । तस्मादष्ट
3	3	12	यत्पश्चात्प्राच्यन्वासीत ।	3	3	27	आपो देवीरग्रेषुवो अग्रेषु इ
3	3	13	तेनैवैनौ चतुर्मुपनयति । त	3	3	28	तेनापः प्रोख्यताः । अग्निर
3	3	14	योगखेमस्य क्लृप्त्यै । यु	3	3	29	प्रजा एव पृथिव्याम्प्रतिष
3	3	15	अथो अर्धो वा एष आत्मनः ।	3	3	30	तादृगेव तत् । स्वधा पितृभू
3	3	16	घृतञ्च वै मधुं च प्रजापतिर	3	3	31	ऊर्जा पृथिवीङ्गच्छतेत्यां
3	3	17	मिथुनत्वाय प्रजातै । यद	3	3	32	यज्ञस्य धृत्यै । पुरस्तात्
3	3	18	तेजो वा अग्निः । तेज आज्यम्	3	3	33	अपरिमितकृत्वाति । अपरिमित
3	3	19	तद्वा अतः पवित्राभ्यामेवोत	3	3	34	बृहिस्त्वृणाति । प्रजा वै
3	3	20	एषाँल्लोकानामास्यै । त्र	3	3	35	विश्वमेवायुर्यजमाने दधाति
3	3	21	एषा हि विश्वेषान्देवानान्त	3	3	36	वीतिहौत्रन्वा क्व इत्याह
3	3	22	देवासुरास्सर्व्यंता आसन्	3	3	37	असौ वै जुहूः । अन्तरिख्यम्
3	3	23	अथ केनाज्यमिति । सत्येनेति	3	3	38	अग्निना वै होत्रा । देवा अ
3	3	24	छन्दाँसि वा आज्यम् । छन्दाँ	3	3	39	ऊर्ध्वे समिधावादधाति । अन्

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	3	40	त्रिरुपवाजयति । त्रयो वै प्र	3	3	55	यजमानो वै पुरोडाशः । प्र
3	3	41	अथो रख्यंसामपहत्यै । परिध	3	3	56	ब्रह्मा होताऽध्वर्युरग्नीत
3	3	42	तिष्ठन्नन्यम् । यथाऽनो वा	3	3	57	अग्निमुखा हृद्धिः । अग्
3	3	43	अग्निर्वै देवानाँय्यष्टा ।	3	3	58	सविता यज्ञस्य प्रसूत्यै ।
3	3	44	ताभ्यामेव प्रतिप्रोच्यात्	3	3	59	अन्या दखिणा नीयन्ते । यज्ञ
3	3	45	इन्द्रियमेव यजमाने दधाति ।	3	3	60	अथ सुचावनुष्टुभ्याँव
3	3	46	सुवर्गो वै लोको बृहद्वाः ।	3	3	61	द्वाभ्याम् । द्विप्रतिष्ठो
3	3	47	अग्निर्वा पवित्रम् । वृजि	3	3	62	एभ्य एवैनँल्लोकेभ्योऽनक्त
3	3	48	आघारमाघार्य ध्रुवाँ समनक	3	3	63	प्रजाय्योनिम्मा निर्मृख्य
3	3	49	धिष्ण्या वा एते न्युप्यन्त	3	3	64	यावद्वा अध्वर्युः प्रस्तर
3	3	50	यजमानायैव तल्लोकः शिः पति ।	3	3	65	यथायजुरेवैतत् । अग्ने देव
3	3	51	ताम्रजातिँयजमानोऽनुप्	3	3	66	सुचौ सम्प्रस्त्रावयति । यदे
3	3	52	मुखमिव प्रत्युपह्वयेत । सम	3	3	67	तानेव तेन प्रीणाति । वैश्व
3	3	53	यावँ हस्त्यामिडांमादधाति	3	3	68	प्रजा वै पशवस्सुम्रम् । प
3	3	54	न मयाऽभागयाऽनुवख्युथेति	3	3	69	अतिरिक्ताः फलीकरणाः । अतिर



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	3	70	अथो यद्वेदश्च वेदिश्च भव	3	4	6	उत्थादेभ्यः कुञ्जम् । प्र
3	3	71	तङ्कालेकाल आगते यजते । ब्र	3	4	7	ऋतयै स्तेनहृदयम् । वैरहत्
3	3	72	यो वा अयंथादेवतय्यंजमुपचर	3	4	8	भायै दार्वाहारम् । प्रभायां
3	3	73	न देवताभ्य आवृक्ष्यते । वस	3	4	9	अमैभ्यो हस्तिपम् । ज्वाया
3	3	74	अशिषंमेवैतामाशांस्ते पूर्णपा	3	4	10	मन्यवैऽयस्तापम् । क्रोधांय
3	3	75	प्रजाः प्रज्जनयन् । यद्वे	3	4	11	यम्यै यमसूम् । अथर्वभ्योऽ
3	3	76	परिवेषो वा एष वनस्पतीनाम	3	4	12	सराभ्यो धेवुरम् । वेशन्ताभ्य
3	3	77	प्रजाम्पुष्टिमथो धनम् । द	3	4	13	प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम् । घ
3	3	78	अथास्मै नाम गृह्य प्रहरति	3	4	14	बीभृश्यायै पौल्कसम् । भूत्य
3	3	79	इन्द्रो नयतु वृत्रहा । यतो	3	4	15	हसाय पुश्चलूमा लंभते । वीण
3	4	1	ब्रह्मणे ब्राह्मणमालंभते । ख	3	4	16	अखराजाय कितवम् । कृताय
3	4	2	गीताय सृतम् । नृताय शैल	3	4	17	भूम्यै पीठसर्पिणमा लंभते ।
3	4	3	श्रमाय कौलालम् । मायार्ये का	3	4	18	वाचे पुरुषमालंभते । प्राणम
3	4	4	सन्धयै जारम् । गेहायौपपुत	3	4	19	अथैतानरूपेभ्य आलंभते । अति
3	4	5	नदीभ्यः पौञ्जिष्टम् । ऋग्व	3	5	1	सत्यम्प्रपद्ये । ऋतम्प्रपद

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	5	2	प्र वो वाजां अभिद्यवः । हव	3	5	17	उपहूतो भुखस्सखा । उप मा भ
3	5	3	अच्छा देव विवाससि । बृहदग्र	3	5	18	दैव्या अध्वर्यव उपहूताः ।
3	5	4	अग्ने दीद्यंतम्बृहत् । अग्र	3	5	19	देवम्बुरहिः । वसुवर्न वसु
3	5	5	अग्ने मृहाः असि ब्राह्मण भार	3	5	20	इदन्धावापृथिवी भद्रमभूत्
3	5	6	चमसो देवपानः । अराः इवा	3	5	21	वृष्टिद्यावा रीत्यापा । श
3	5	7	अग्निर् होता वेत्सिः । ह	3	5	22	अवीवृधत् महो ज्यायोऽकृत । प
3	5	8	समिधो अग्र आज्यस्य वियन्तु	3	5	23	अवीवृधत् महो ज्यायोऽकृत । द
3	5	9	अग्निर्वृत्राणि जङ्घनत् । द	3	5	24	उत्तरान्देवयुज्यामाशांस्ते ।
3	5	10	अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् ।	3	5	25	तच्छ्रुयोरवृणीमहे । गातुय
3	5	11	वयः स्याम पतयो रयीणाम् ।	3	5	26	आप्यायस्व सन्तै । इह त्वप्
3	5	12	युवः सिन्धूः रभिशस्तेरवद्	3	5	27	अग्निर्होता गृहपतिस्स रा
3	5	13	सजित्वानः सदासहम् । वर्षि	3	5	28	उपहूतः रथन्तरः सह पृथिव्य
3	5	14	उत द्विबर्हा अमिनस्सहोभि	3	5	29	उपहूतो भुखस्सखा । उप मा भ
3	5	15	अयाङ्ग्रेः प्रिया धामानि ।	3	5	30	दैव्या अध्वर्यव उपहूताः ।
3	5	16	उपहूतः रथन्तरः सह पृथिव्य	3	6	1	अञ्जन्ति त्वामध्वरे देव्य



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	6	2	आरे अस्मदमतिम्बार्धमानः । उ	3	6	17	जुषस्व सप्रथंस्तमम् । वचो
3	6	3	जातो जायते सुदिनत्वे अहो	3	6	18	श्रेष्ठो धेहि वार्यम् ।
3	6	4	होता यख्यदग्निः समिधा सुप	3	6	19	आवृत्रहणा वृत्रहभिश्शुष्मैः
3	6	5	होता यख्यदुरं ऋष्याः कं	3	6	20	नान्या युवत्प्रमतिरस्ति मह
3	6	6	समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे	3	6	21	गीर्भिविप्रः प्रमतिमिच्छ
3	6	7	ते सुक्रतवश्शुचयो धियन्था	3	6	22	त्वः ह्यग्रे प्रथमो मनोता
3	6	8	व्यचस्वतीरुर्विया विश्रयन्त	3	6	23	रुशन्तमग्निन्दरशतम्बृहन
3	6	9	प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू	3	6	24	सपर्यण्यस्स प्रियो विख्
3	6	10	उपावसृजत्सम्यां समञ्जत्र	3	6	25	प्रेतीषणि मिषयन्तम्पावकम्
3	6	11	अग्निर्होता नो अध्वरे । वा	3	6	26	आ यस्तुतन्थ रोदसी विभासा
3	6	12	अजैदग्निः । असन्द्वाजन्नि	3	6	27	आ भरतः शिख्यतवैज्जबाहू । अ
3	6	13	दैव्यांशमितार उत मनुष्या	3	6	28	घासे अञ्जानौय्यवसप्रथमाना
3	6	14	सूर्यश्चखुर्गमयतात् । वात	3	6	29	प्रदग्निणिद्रंशनां नियूय
3	6	15	श्ला दोषणी । कश्यपेवाः सा	3	6	30	करदेवन्देवो वनस्पतिः । जु
3	6	16	उरुकृम्मन्यमानाः । नेद्वस्त	3	6	31	उपो ह यद्विदध्वजिनो ग

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	6	32	अयाङ्गनस्पतैः प्रिया पाथाः	3	7	10	यद्विष्णवेन जुहुयात् । अप
3	6	33	देवम्बर्हिस्सुदेवन्देवैस	3	7	11	भूतिमेवोपैति । तत्कृत्वा ।
3	6	34	देवम्बर्हिः । वसुवने वसु	3	7	12	तत्कृत्वा । अन्यान्दुग्ध्वा
3	6	35	देवा दैव्या होतांरा । वसुव	3	7	13	मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्य
3	6	36	देवो अग्निस्सिंहकृत् ।	3	7	14	चतुष्पाद्विः पशुभिर्यजमानो
3	6	37	अग्निमद्य होतांरमवृणीताय्य	3	7	15	यद्विष्णा । ब्रह्मणं च य
3	7	1	सर्वान्वा एषौऽग्नौ कामान्	3	7	16	सुवस्य बुधेनाभिनिदध्य
3	7	2	कामप्रीता एनङ्कामा अनुप्रय	3	7	17	वि वा एष इन्द्रियेण वीर्य
3	7	3	मनसैव यज्ञः सन्तनोति । भूर	3	7	18	अजस्य तु नाशनीयात् । यदजस
3	7	4	तृतीयैर्न ज्योतिषा सविंश	3	7	19	ब्राह्मणन्तु वसत्यै नापर
3	7	5	तान् यदुह्यात् । यातयां	3	7	20	यदुर्भान्ध्यासीत । यामेवाग
3	7	6	अथोत्तरस्मै हविषे वृथ्सानप	3	7	21	यामेवाप्स्वाहुतिञ्जुहुयात्
3	7	7	अथेतर ऐन्द्रः पुरोडाशस्	3	7	22	गर्भः स्रवन्तमगदमकः । अग
3	7	8	ऐन्द्रम्पञ्चशरावमोदनत्रिर्व	3	7	23	अग्निरित्याह । अग्निर्वै रे
3	7	9	सैव ततः प्रायश्चित्तिः । अर	3	7	24	याः पुरस्तात्स्रवन्ति ।



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	7	25	सोमपीथाय सन्नयितुम् । वक्	3	7	40	वृथ्सेभ्यो मनुष्येभ्यः । पु
3	7	26	अग्निङ्गहामि सुरथैव्यो	3	7	41	पूर्णवल्कः पवित्रम् । सोम
3	7	27	अग्निर्हव्यवाडिह तानावहत	3	7	42	देवां देवेषु पराक्रमध्वम् ।
3	7	28	स्व आयतने मनीषया । इह पश	3	7	43	मुखमपोहामि । सूर्य ज्योतिर
3	7	29	विजयभाङ्गः समिन्धताम् । अग	3	7	44	घृतस्य धारया सुशेवङ्कल्पय
3	7	30	रुद्रेभ्यो यज्ञम्प्रब्रवीम	3	7	45	देवां पितरः पितरो देवाः । य
3	7	31	व्रतानाँव्रतपते व्रतश्चर	3	7	46	पृथिवी माता । प्रजापतिर
3	7	32	त्रीनपरिधीः स्तिसस्सुमिध	3	7	47	आज्येन प्रत्यनज्म्येनत् । त
3	7	33	आच्छेत्ता वो मा रिषम् । जी	3	7	48	इडे भाङ्गुष्व नः । जिन्व
3	7	34	त्रिवृत्पलाशे दुर्भः । इया	3	7	49	दैवींश्च मानुषीश्च । अहोरा
3	7	35	अयम्प्राणश्चापानश्च । यजं	3	7	50	विधेम हविषा वयम् । भजताम्
3	7	36	शिवेयः रङ्गुरभिधानी । अघ	3	7	51	सोम्यानां सोमपीथिनाम् । नि
3	7	37	अमृन्मयन्देवपात्रम् । यज्ञस	3	7	52	उपनिषदे सुप्रजास्त्वायं । स
3	7	38	बृह्निर्भवन्तीरुपजायमानाः	3	7	53	ऊर्जो भाङ्गः शतक्रतू । एतद्व
3	7	39	उथ्सन्दुहन्ति कलशश्चतुर्वि	3	7	54	मा नो विदद्वृजना द्वेष्ट्या

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	7	55	परिस्तृणीत् परिधत्ताग्निम्	3	7	70	आयुषे वर्चसे । जीवात्वे पु
3	7	56	देवेन सवित्रा प्रसूत आर्त	3	7	71	अग्ने यो नोऽभिदासति । समा
3	7	57	प्रजापतिर्विश्वेभ्यो देवे	3	7	72	वार्जञ्जिगिवाः सैम् । वाजिनैव
3	7	58	अन्तर्दूतश्चरति मानुषीषु	3	7	73	दिवः खिलोऽवततः । पृथिव्या
3	7	59	यो ब्रह्मणा कर्मणा द्वेष्ट	3	7	74	सुभूतेन मे सन्तिष्ठस्व ।
3	7	60	सा मे धुख्व यजमानाय कामा	3	7	75	उलूखले मुसले यच्च शूर्पे
3	7	61	अस्मिन् यज्ञ उप भूय इनु	3	7	76	उद्यन्नद्य वि नो भज । पिता
3	7	62	सीदन्ती देवी सुकृतस्य लो	3	7	77	अथो हरिद्रवेषु मे । हरिम्
3	7	63	यत्रर्षयः प्रथमजा ये पुंरा	3	7	78	यो नस्स्पन्नो यो रणः । मर्त
3	7	64	इदमस्य चित्तमधरन्ध्रवाया	3	7	79	सखेदम्पश्य । विधर्तरिदम्
3	7	65	अधरे मथ्सपलाः । इयः स्थ	3	7	80	ब्रह्मासि ख्यत्रस्य योनिः
3	7	66	सर्वतो माम्भृतम्भविष्यच्छ	3	7	81	ज्योग्जीवा ज्रामंशीमहि । इन्द
3	7	67	येनासिंश्चद्वलमिन्द्रं प्र	3	7	82	तान्तै युनज्मि । आऽहन्दीख्या
3	7	68	तेन लोकान्सूर्यवतो जयेम	3	7	83	तयाऽग्निर्दीखया दीखितः
3	7	69	वाज्जित्याये सम्मार्जिर् ।	3	7	84	तया त्वा दीखया दीखयामि



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	7	85	तया सोमो राजा दीर्घया दीर्घ	3	7	100	तस्य सुममंशीमहि । तस्य भू
3	7	86	दिशंस्त्वा दीर्घमाणमनु दीर्घ	3	7	101	प्र ते महे विदथे शसिपु
3	7	87	आपश्चोषधयश्च । ऊर्कं सूनृ	3	7	102	इन्द्रंश्च सम्राड्दुरुणश्च र
3	7	88	तपो मे प्रतिष्ठा । सवितृप	3	7	103	उद्याने यत्परायणे । आवर्त
3	7	89	विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।	3	7	104	सर्वान्यथो अनृणा आर्खीयेम
3	7	90	सख्यात्ते मा योषम् । सख्या	3	7	105	उदस्ताम्पसीध्रस्विता मित्रो
3	7	91	पुरोरजास्ते पश्चमः पादः । स	3	7	106	दैव्यं कृतुर्विश्वम्भुवनमा
3	7	92	वर्ष्मन्दिवः । नाभां पृथिव्	3	7	107	देवा नो यज्ञमृजुधा नयन्त
3	7	93	यदस्य पुरे रजसः । शुक्रञ्ज	3	7	108	स्कन्नेमा विश्वा भुवना । स्
3	7	94	प्रजाभ्यस्सर्वोभ्यो मृड । न	3	7	109	अदितिरूत्या गमत् । सा शन्ता
3	7	95	य इदमर्कः । तस्मै नमः । तस्म	3	7	110	अपु स्निधः । तदित्पदन्न विचि
3	7	96	अनागसंस्त्वा वयम् । इन्द्रे	3	7	111	ब्रह्मं प्रतिष्ठा मनसो ब्रह्
3	7	97	युक्तास्थु वहत । देवा ग्र	3	7	112	यद्वो देवा अतिपादयानि । वा
3	7	98	प्राणश्च त्वाऽपानश्च श्रीण	3	7	113	इमम्मे वरुण तत्त्वा यामि ।
3	7	99	यो देवानां देवतमस्तपोजाः	3	7	114	ऋद्धौ स्वाहा समृद्धौ स

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	7	115	आप्यायय हरिवो वर्धमानः । य	3	7	130	अभि नंशीयता रयिः । सचतान
3	7	116	यद्वेवा देवहेडनम् । देवासश	3	8	1	साङ्गहण्येष्ट्यां यजते ।
3	7	117	ऋतेन द्यावापृथिवी । ऋतेन त	3	8	2	यदंशमेधस्समृद्धौ । पुण्य
3	7	118	शिश्नैर्यदनृतश्चक्रमा वयम्	3	8	3	चतुष्टय्य आपो भवन्ति । चतु
3	7	119	एनश्चकार यत्पिता । अग्निर	3	8	4	चतुश्शरावो भवति । दिख्वेव
3	7	120	यदेनश्चक्रमा नूतनय्यत्पुर	3	8	5	यदाज्यमुच्छिष्यते । तस्मिन्
3	7	121	गार्हपत्यं प्रमुञ्चतु । दु	3	8	6	यद्वर्धमयी रशना भवति । पु
3	7	122	यत्ते ग्रावणां चिच्छिदुस्	3	8	7	यो वै ब्रह्मणे देवेभ्यः प्र
3	7	123	त्वया तत्सोम गुप्तमस्तु नः	3	8	8	न देवताभ्य आ वृश्चते । व
3	7	124	उपंखरन्ति जुहो घृतेन ।	3	8	9	तदाहुः । द्वादशारत्नी रशना
3	7	125	यदागच्छात्पृथिभिर्देवयानैः	3	8	10	यथर्षभस्य विष्टपः सः सः
3	7	126	यदिदीर्घे मनसा यच्च वा	3	8	11	तस्मादंशमेधयाजी सर्वाणि भू
3	7	127	शुक्रा दीर्घायै तपसो विमो	3	8	12	प्रजयैवेनम्पुशुभिः प्रथयति
3	7	128	अग्नेः प्रियतमं हविस्स्वाह	3	8	13	यः पितुरनुजायाः पुत्रः ।
3	7	129	देवेभ्यः पितृभ्यस्स्वाहा	3	8	14	कर्मकर्मैवास्मै साधयति । पो



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	8	15	पाप्मानमेवास्माच्छर्मलमपंप	3	8	30	यस्यानायतनैऽन्यत्राग्रेराह
3	8	16	चत्वारं ऋत्विजस्समुंखन्ति	3	8	31	यद्यंजमुखेयंजमुखे जुहुया
3	8	17	दक्षिणत उदङ्घ्रिष्ठमोख्	3	8	32	विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रे
3	8	18	बहुग्वे बहुश्वार्यै बहुजा	3	8	33	प्र यशश्श्रेष्ठमाप्नोति ।
3	8	19	अनेनाश्वेन मेध्यैनेष्टा	3	8	34	आदित्यानाम्पत्वाऽन्विहीत्य
3	8	20	यथा वै हविषो गृहीतस्य स्क	3	8	35	एता वा अश्वस्य बन्धनम् । त
3	8	21	यत्परिमिता अनुब्रूयात् । परि	3	8	36	राष्ट्रादेव ते व्यवच्छिद्यन
3	8	22	अस्यामेवैनाः प्रतिष्ठापयति	3	8	37	प्रजापतिरकामयताश्वमेधेन यज
3	8	23	सरस्वत्यै स्वाहेत्याह । सरं	3	8	38	सप्त जुहोति । सप्त हि ता दे
3	8	24	मित्राय स्वाहेत्याह । मित्र	3	8	39	एकंविंशतिर्वैश्वदेवानि जुहो
3	8	25	प्रजापतये त्वा जुष्टमो	3	8	40	त्रिंशतमौद्रहणानि जुहोत
3	8	26	ज्वमेवास्मिन्दधाति । तस्माद	3	8	41	यो दीख्यामतिरेचयति । सप्त
3	8	27	सर्वैभ्यस्त्वा देवेभ्य इत्य	3	8	42	प्रजापतिरश्वमेधमसृजत । त
3	8	28	यथा वै हविषो गृहीतस्य स्क	3	8	43	अदित्यै स्वाहाऽदित्यै मृदा
3	8	29	तदाहुः । अनाहुतयो वा अश्वच	3	8	44	सावित्रमष्टाकपालम्प्रातर्

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	8	45	अथो माध्यन्दिनमेव सर्वन्ते	3	8	60	एकवदेव सुवर्गल्लोकमेति
3	8	46	चतस्रो दिशः । दिग्भिरेवैन	3	8	61	त्रयं इमे लोकाः । इमानेव ल
3	8	47	आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मव	3	8	62	समुद्रमेवाप्नोति । मध्याय
3	8	48	अनुदुह्येव वीर्यन्दधाति ।	3	8	63	विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रे
3	8	49	यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते ।	3	8	64	पृथिव्यै स्वाहाऽन्तरिक्षाय
3	8	50	प्रजापतिर्देवेभ्यो यज्ञान	3	8	65	अर्वाङ्मज्जस्सङ्कामत्वित
3	8	51	देवानेव तैर्यजमानः प्रीणाति	3	8	66	दक्षस्स्वाहा हनूभ्याः स
3	8	52	मृतीमेव तद्देवताम्रीणात	3	8	67	वनस्पतिभ्यस्स्वाहेति वनस्प
3	8	53	रुद्रानेव तत्प्रीणाति । ला	3	8	68	अम्नाःसि जुहोति । अयँवै लो
3	8	54	विश्वानेव तद्देवान्प्रीणात	3	8	69	तस्य रुद्रा अधिपतयः । वायु
3	8	55	प्रजापतिमेव तत्प्रीणाति ।	3	8	70	यन्महाःसि जुहोति । अमुमेव
3	8	56	प्रजापतिरश्वमेधमसृजत । त	3	8	71	सिताय स्वाहाऽसिताय स्वाहेत
3	8	57	आज्यस्य प्रतिपदङ्करोति । प	3	8	72	यः प्राणतो य आत्मदा इति म
3	8	58	प्राणो वा आज्यम् । उभयत ए	3	8	73	असौ भविष्यत् । अनयोरिव ल
3	8	59	प्रजापतिंवा एष ईप्सुतीत	3	8	74	य उ चैनमेवैवेद । यज्ञ र



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	8	75	एकयूपो वैकादशिनी वा । अ	3	8	90	तस्मात्पूर्वाग्निपुरस्ता
3	8	76	पाप्मा वै तैजनी । पाप्मनोऽ	3	8	91	तस्माद्वाजिन्यो बाहुवलीभाव
3	8	77	राङ्गदालमग्निष्ठमिनोति ।	3	9	1	प्रजापतिरश्वमेधमसृजत । सौ
3	8	78	षदांलाशाः । सोमपीथस्याव	3	9	2	सँवृत्सुरौऽष्टादशः । यदप
3	8	79	शतायुः पुरुषश्शतेन्द्रियः	3	9	3	ऋग्वीकाः पुरुषव्याघ्राः पर
3	8	80	एषा वै वरुणस्य दिक् । स्वाय	3	9	4	यज्ञवेशसङ्कुर्यात् । यत्प
3	8	81	प्राणापानावेवास्मिन्ध्वस	3	9	5	प्रजापतिरकामयतोभौ लोकाव
3	8	82	एकविंशौऽग्निर्भवति । एक	3	9	6	अमुन्तेः । अनवरुद्धो वा एत
3	8	83	एकादश यूपाः । यद्वादशौ	3	9	7	सुवर्गन्तु लोकन्नापराधोत
3	8	84	दुह एवैनान्तेन । तदाहुः ।	3	9	8	विराजमेव तैरात्वा यजमा
3	8	85	यो वा अश्वमेधे तिस्रः ककुभ	3	9	9	अस्मै वै लोकाय ग्राम्याः प
3	8	86	देवा वा अश्वमेधे पवमाने ।	3	9	10	ग्राम्याश्चार्ण्याश्च । उ
3	8	87	उद्गातारमपुरुष्यं । अश्वमु	3	9	11	अस्मिन्नैके बहवः कामा इत
3	8	88	वडंबा उपरन्थन्ति । मिथुन	3	9	12	युञ्जन्ति ब्रध्नमित्याह ।
3	8	89	पुरुषो वै यज्ञः । यज्ञः प	3	9	13	इमे वै लोकाः परितुस्थुषः ।

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	9	14	शोणा धृष्णू नृवाहसेत्याह	3	9	29	यथायजुरेवेतत् । त्र्ययस्स
3	9	15	परा वा एतस्य यज्ञ एति । य	3	9	30	अप वा एतस्माच्छ्री राष्ट्र
3	9	16	भूर्भुवस्सुवरिति प्राजापत्	3	9	31	श्रियमेवावरुन्धे । शीते वा
3	9	17	ज्योतिश्चैवास्मै राष्ट्रज	3	9	32	शूद्रा यदर्यजारा न पोषाय ध
3	9	18	रुद्रास्त्वाऽञ्जन्तु त्रैष	3	9	33	राष्ट्रम्पसः । राष्ट्रमेव
3	9	19	यत्पन्नयः । श्रियमेवास्मिन्	3	9	34	प्रसुलामीति ते पिता गृभे म
3	9	20	तेजसा वा एष ब्रह्मवर्चसेन	3	9	35	प्रजापतिः प्रजास्सुष्टा
3	9	21	उत्तरतआयतनो वै होता । आ	3	9	36	वैराजो वै पुरुषः । विराजम
3	9	22	दिवमेव वृष्टिमेवरुन्धे । कि	3	9	37	यज्ञो वै गौः । यज्ञमेवालभत
3	9	23	कस्मिन्देकाकी चरतीत्याह ।	3	9	38	प्रथमेन वा एष स्तोमेन रा
3	9	24	अयवै लोक आवर्पनम्महत् ।	3	9	39	उतेव ग्राम्याः । उतेवारण
3	9	25	अप वा एतस्मात्प्राणाः का	3	9	40	तेनैवोभयान्पशूनवरुन्धे । प
3	9	26	अथो धुवन्त्येवैनम् । अथो	3	9	41	प्रजापतिरकामयत महानन्नादस
3	9	27	ये यज्ञे धुवनन्तन्वतै । न	3	9	42	वैश्वदेवो वा अश्वः । तय्य
3	9	28	सुवर्गमेवैनैर्लोकङ्गमयत	3	9	43	चतुर्दशैताननुवाकाङ्गहोत



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 2 - ब्राह्मणम्



अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description	अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	9	44	पराऽसुराः । यथिष्वष्टकृद्ध	3	9	59	वारुणो वा अश्वः । तन्देवतं
3	9	45	अश्वशफेनं द्वितीयामाहुति	3	9	60	धर्मो वा अधिपतिः । धर्ममेव
3	9	46	अश्वस्य वा आलब्धस्य मेध उ	3	9	61	प्र वा एष एभ्यो लोकेभ्यश्च
3	9	47	बारहता पशवः । सा पशूना	3	9	62	ब्रह्मखत्रे एवावरुन्धे
3	9	48	अश्वस्तोमीयं हुत्वा द्वि	3	9	63	यद्यश्वमुपतपद्विन्देत् । आ
3	9	49	प्रजापतिरश्वमेधमसृजत । सौ	3	9	64	ताभिरेवेनाम्भिषज्यति । यथा
3	9	50	इयवै संविता । यो वा अस्य	3	9	65	रौद्रश्चरुन्निरपेत् । यदि
3	9	51	यत्प्रातरिष्टिभिर्यजते । अ	3	9	66	अग्नयेऽहोमुचेऽष्टाकपालः
3	9	52	अप वा एतस्माच्छ्री राष्ट्र	3	9	67	यस्याश्वो मेधाय प्रोख्यन्ते
3	9	53	प्रभ्रंशुकास्माच्छ्रीस्या	3	9	68	तदाहुः । द्वादश ब्रह्मोदनान
3	9	54	न वै ब्राह्मणे राष्ट्रं रम	3	9	69	साप्ता भवति यातयाम्नी । ऋ
3	9	55	इष्टापूर्तेनैवेन स समर	3	9	70	एष वै विभूर्नाम यज्ञः । सर
3	9	56	सर्वेषु वा एषु लोकेषु मृ	3	9	71	सर्वेषु ह वै तत्र पर्यस्वद्भवत
3	9	57	अशनयामृत्युरेव । तमेवाम	3	9	72	यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते ।
3	9	58	मृत्युमेवाहुत्या तर्पयित्व	3	9	73	तार्प्येणाश्वं संज्ञपयन्ति

अष्टकम्	प्रश्न	दशिनी	Description
3	9	74	रुक्मो भवति । सुवर्गस्य ल
3	9	75	अन्तरिखड्गकृत्यधीवासेन ।
3	9	76	आदित्याश्चाङ्गिरसश्च सुवर्
3	9	77	यच्छयदरुसात् । तस्मादर
3	9	78	योनिमानायतनवान्भवति । य एव
3	9	79	प्रजापतिवै देवाः पितर
3	9	80	तस्मादश्वमेधः । वेदुकोऽश्व
3	9	81	य उ चैनमेववैदं । एतद्वै
3	9	82	प्राजापत्येनैव यज्ञेन यज
3	9	83	यो वा अश्वस्य मेध्यस्य लोम
3	9	84	यद्दर्शपूर्णमासौ यजन्ते ।

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।
नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः ।



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 3

आरण्यकम् (A), काठकम् (K), उपनिषत् (U), एकाग्रिकाण्डः (E)



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	1	1	भृद्रं कर्णेभिः शृणुयाम दे
A	1	2	अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च ।
A	1	3	अपाश्र्युष्णिमपारख्यः । अ
A	1	4	स्मृतिः प्रत्यक्षमैतिह्यं
A	1	5	तान्नद्योऽभि संमायन्ति । सो
A	1	6	अणुभिश्च महद्विश्च । समारू
A	1	7	उभयतस्समैन्द्रियाणि । जल
A	1	8	साकजानां सप्तथमाहुरेक
A	1	9	न हि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थ
A	1	10	अमूर्धं परिर्क्षतः । एता
A	1	11	ज्योतिषां प्रतिख्येनसः । व
A	1	12	अखिं दुःखोत्थितस्यैव । व
A	1	13	अभिधून्वन्तोऽभिग्रन्त इव ।
A	1	14	दुर्मिख्यन्देवलोकेषु । मनु
A	1	15	अतिताम्राणि वासांसि । अ

A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	1	16	तस्येन्द्रो वग्निरूपेण । धृ
A	1	17	अत्यूर्ध्वारख्योऽतिरश्वात्
A	1	18	निजानुका मै न्यञ्जुलिका । अम
A	1	19	अवं द्रप्सो अश्वमूर्तिमतिष्ठ
A	1	20	आरोगो भ्राजः पटरः पतङ्गः ।
A	1	21	तस्मिन्नाजानमधिविश्रयमिति
A	1	22	आनुश्रविक एव नौ कश्यप इति ।
A	1	23	अमुत्रेतरं । तस्मादिहातप्
A	1	24	सप्त होतार ऋत्विजः । देवा
A	1	25	अनु न जातमष्ट रोदसी इति । न
A	1	26	केदमभ्रत्रिविशते । काय
A	1	27	अभ्राण्यपः प्रपद्यन्ते ।
A	1	28	व्यंष्ट्राद्रोदसी विष्णव
A	1	29	अग्नयो वायवश्चैव । एतदंस
A	1	30	अनाभोगाः परं मृत्युम् ।



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	1	61	अष्टयौनीमष्टपुत्राम् । अ	A	1	76	भृद्रं कर्णेभिः शृणुयाम दे
A	1	62	अहवैद न मे मृत्युः । न	A	1	77	योंऽपां पुष्पवैद । पुष्प
A	1	63	पुत्रामार्तुण्डमास्यत् । स	A	1	78	आयतनवान्भवति । आपो वा अग्
A	1	64	योऽसौ तपन्नुदेति । स सर्व	A	1	79	आपो वै वायोरायतनम् । आयत
A	1	65	अमूनि नक्षत्राणि । सर्वेष	A	1	80	आयतनवान्भवति । य एववैद
A	1	66	अयं संवत्सरः । सर्वेषां	A	1	81	य एववैद । योंऽपामायतन
A	1	67	अथादित्यस्याष्टपुरुषस्य । व	A	1	82	योंऽपामायतनवैद । आयत
A	1	68	आरोगस्य स्थाने स्वतेजसा भान	A	1	83	आयतनवान्भवति । सवत्सर
A	1	69	अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशम्	A	1	84	इमे वै लोका अप्सु प्रतिष्
A	1	70	अवपतन्तानां रुद्राणां स्थाने	A	1	85	पुष्करपर्णेः पुष्करदण्डेः पुष
A	1	71	अथाग्रैरष्टपुरुषस्य । अग्र	A	1	86	अथो आहुः । सर्वेषु यज्ञक्र
A	1	72	दक्षिणपूर्वस्यान्दिशि विसर्प	A	1	87	नाचिकेतमग्निश्चिन्वानः
A	1	73	इन्द्रघोषा वो वसुभिः पु	A	1	88	इमाल्लोकान्प्रत्यक्षेण ।
A	1	74	आपमपामपस्सर्वाः । अस्माद	A	1	89	आपो वा इदमांसस्यलिलमेव
A	1	75	देवीः पर्जन्यसूवरीः । पु	A	1	90	सुतो बभ्रुमसति निरविन्दन्

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	1	91	ये नखाः । ते वैखानसाः । ये	A	1	106	अग्निं प्रणीयोपसमाधाय ।
A	1	92	नेत्यब्रवीत् । पूर्वमेवाहम्	A	1	107	सत्रियमग्निश्चिन्वानः ।
A	1	93	अञ्जलिनां पुरस्तादुपादध	A	1	108	उपानुवाक्यमाशुमग्निश्च
A	1	94	ततो वायुरुदतिष्ठत् । सा प	A	1	109	प्राजापत्यो वा एषोऽग्निः
A	1	95	अथारुणः केतुरुपरिष्टादु	A	1	110	वृष्टिकामश्चिन्वीत । आपो वै
A	1	96	आपो ह यद्वहतीर्गर्भमायन	A	1	111	वज्रमेव भ्रातृव्येभ्यः प
A	1	97	विधाय लोकान् विधाय भूता	A	1	112	अमृतवाँ आपः । अमृतस्या
A	1	98	चतुष्टय्य आपो गृह्णाति । च	A	1	113	इमानुक् भुवना सीषधेम । इन
A	1	99	कूप्यां गृह्णाति । ता दक्षिण	A	1	114	मरीचयः स्वायम्भुवाः । ये शं
A	1	100	ता उत्तरत उपदधाति । ओजसा	A	1	115	देवानां पूरयोध्या । तस्या
A	1	101	असौ वै पल्वल्याः । अमुष्य	A	1	116	विवेशापराजिता । पराडेत्यं
A	1	102	तदेपाऽभ्यनूक्ता । केतवो अ	A	1	117	यज्वानो येऽप्ययज्वनः । स
A	1	103	जानुदघ्नीमुत्तरवेदीङ्क्षा	A	1	118	यमो दंदात्ववसानमस्मै । नृम
A	1	104	तदवर्क्ये । कूर्ममुपदधाति	A	1	119	अदो यद्वहं विलुबम् । पि
A	1	105	यास्तिस्रः परमजाः । इन्द्र	A	1	120	विशीर्ष्णाङ्घ्रिशीर्ष्णाञ्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	1	121	पुर्जन्याय प्रगायत । दिवस	A	2	5	आयुष्टे विश्वतो दधद्यमग्र
A	1	122	पुनर्मांमेत्विन्द्रियम् । पु	A	2	6	अग्निर् ऋषिः पवमानः पाञ्च
A	1	123	अद्भ्यस्तिरोधाजायत । तवं व	A	2	7	यो नृशपादशंपतो यश्च नृश
A	1	124	असांम सुमतौ यजियस्य । श	A	2	8	वैश्वानराय प्रतिवेदयामो
A	1	125	सर्वभूताधिपतये नम इति । अथ	A	2	9	तत्तन्तुमन्वेके अनु सञ्च
A	1	126	तिरोधास्वः । तिरोधा भू	A	2	10	वातरशना ह वा ऋषयश्श्रमणा
A	1	127	अपि ब्राह्मणमुखीनाः । तस्मि	A	2	11	कृष्माण्डैर्जुह्याद्योऽपू
A	1	128	तस्मा इममग्रपिण्डं जुहोमि	A	2	12	अजान् ह वै पृथ्वींस्तपस्य
A	1	129	सर्वेश्वरमेतद्वत्तश्चरेत् ।	A	2	13	पञ्च वा एते महायज्ञास्संत
A	1	130	अंसश्चयवान् । अग्नये वायवे	A	2	14	ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्यमाणः
A	1	131	महानाम्नीभिरुदकं संस्पर्श	A	2	15	ग्रामे मनसा स्वाध्यायमधीय
A	2	1	सह वै देवानाश्चासुराणाञ्	A	2	16	मध्यन्दिने प्रबलमधीयीता
A	2	2	रक्षांसि ह वा पुरोऽनुवाके	A	2	17	तस्य वा एतस्य यज्ञस्य मे
A	2	3	यद्वैवा देवहेळनन्देवासश्	A	2	18	तस्य वा एतस्य यज्ञस्य द
A	2	4	यददीव्यनृणमहं बभूवार्दिथ	A	2	19	रिच्यंत इव वा एष प्रेव रिच

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	2	20	दुहे ह वा एष छन्दांसि यो	A	3	13	सेनेन्द्रस्य । धेना बृहस्प
A	2	21	कृतिधावकीर्णी प्रविशति चत	A	3	14	वरुणस्य विराट् । यज्ञस्य
A	2	22	भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्य	A	3	15	देवस्य त्वा सवितुः प्रंसव
A	3	1	चित्तिस्सुक् । चित्तमाज्य	A	3	16	कामः प्रतिग्रहीता । कामं स
A	3	2	पृथिवी होता । द्यौरध्वर्य	A	3	17	मनवे तल्पम् । त्वष्टेऽज
A	3	3	अग्निहोता । अश्विनाऽध्व	A	3	18	उत्तानायाङ्गीरसायानः । व
A	3	4	सूर्यन्ते चक्षुः । वातं प	A	3	19	क इदङ्कस्मा अदात् । कामः क
A	3	5	महाहविहोता । सत्यहवि	A	3	20	सुवर्णं धर्मं परिवेद वेनम
A	3	6	वाग्योता । दीक्षा पत्नी ।	A	3	21	अन्तः प्रविष्टश्चास्ता जना
A	3	7	ब्राह्मण एकहोता । स यज्ञः	A	3	22	अमृतस्य प्राणव्यञ्जमेतम
A	3	8	स मे ददातु प्रजां पशून्पुष	A	3	23	इन्द्रं राजानं सवितारमे
A	3	9	चन्द्रमाष्पङ्क्तोता । स ऋतू	A	3	24	अमृतस्य पूर्णान्तामु क्ला
A	3	10	स मे ददातु प्रजां पशून्पुष	A	3	25	इन्द्रो राजा जगतो य ईशै
A	3	11	अग्निर्यजुर्भिः । सविता स	A	3	26	अच्युतां बहुलां श्रियम् ।
A	3	12	त्वष्टेध्मेन । विष्णुर्यज	A	3	27	घृतन्तेजो मधुमदिन्द्रियम्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	3	28	एको अश्वो बहति सप्तनामा ।	A	3	43	त्वय्यज्ञस्त्वमुवेवासि स
A	3	29	रोहिणीः पिङ्गला एकरूपाः ।	A	3	44	तं मे देवा ब्रह्मणा सविं
A	3	30	हृदा पश्यन्ति मनसा मनीषि	A	3	45	हरिः हरन्तमनुयन्ति देवा
A	3	31	प्रजापतिः प्रजयां सविंदा	A	3	46	प्रास्मा आशां अशृण्वन् । क
A	3	32	सहस्रशीर्षा पुरुषः । सह	A	3	47	तुरणिर्विश्वदंश्तो ज्योति
A	3	33	पादोऽस्य विश्वां भूतानि ।	A	3	48	आ प्यायस्व मदन्तम् सोम विश
A	3	34	यत्पुरुषेण हविषां । देवा य	A	3	49	ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्
A	3	35	तेन देवा अयजन्त । साध्या	A	3	50	ज्योतिष्मतीं त्वा सादयामि ज्
A	3	36	तस्मादश्वां अजायन्त । ये के	A	3	51	प्रयासाय स्वाहाऽऽयासाय
A	3	37	ऊरू तदस्य यद्वैश्यः । पुद	A	3	52	चित् संतानेनं भव्यैक
A	3	38	वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्	A	4	1	परेयुवांसं प्रवतो महीर
A	3	39	अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै र	A	4	2	आयुर्विश्वायुः परिपासति त
A	3	40	तस्य धीराः परिजानन्ति योन	A	4	3	इयन्नारीं पतिलोकवृणाना
A	3	41	भर्ता सन्त्रियमाणो विभर्ति	A	4	4	इममग्रे चमसं मा विर्जीह्वरः
A	3	42	उतो बहूनेकमहर्जहार । अर्तन	A	4	5	य एतस्य पथो गोप्तास्तेभ

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	4	6	प्र केतुनां बृहता भात्यग्	A	4	21	एतास्तै स्वधा अमृताः करो
A	4	7	उरुणासावसुतुपावुलुम्बलौ	A	4	22	लोकं पृण ता अस्य सूददोह
A	4	8	यद्वे देवस्य सवितुः पवित्	A	4	23	आ रोहतायुर्जुरसङ्गणाना
A	4	9	यन्तै अग्निममन्थाम वृषभाय	A	4	24	इमे जीवा विमृतेराववर्ति
A	4	10	अवं सृज पुनरग्रे पितृभ्यो	A	4	25	अप नश्शोशुचदधमग्रे शुशु
A	4	11	आयातु देवस्सुमनाभिरुतिभि	A	4	26	त्व हि विश्वतोमुख विश्वतः
A	4	12	योऽस्य कौष्ठ जगत् पार्थ	A	4	27	अपश्याम युवतिमाचरन्तीं मृ
A	4	13	त्रिकद्रुकेभिः पतति षडुर	A	5	1	शत्रो मित्रशशवैरुणः । श
A	4	14	वैश्वानरे हविरिदङ्गुहोम	A	5	2	शीखाव्याख्यास्यामः । व
A	4	15	शुनवौहाशशुनन्नाराशु	A	5	3	सह नौ यशः । सह नौ ब्रह्मव
A	4	16	प्र वाता वान्ति पतयन्ति व	A	5	4	वायुस्सन्धानम् । इत्यधिलो
A	4	17	उत्तै तन्नोमि पृथिवीन्वत्	A	5	5	अन्तेवास्युत्तररूपम् । विद
A	4	18	एषा ते यमसादने स्वधा निध	A	5	6	अथाद्यात्मम् । अधराहनुः पू
A	4	19	सवितैतानि शरीराणि पृथिव्	A	5	7	यश्छन्दसामृषो विश्वरूपः ।
A	4	20	अपूपवान्मृतवांश्चरुह	A	5	8	कुर्वाणा चीरमात्मनः । वा



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	5	9	भूर्भुवस्सुवरिति वा एतास्	A	5	24	ब्रह्मविदाप्रोति परम् ।
A	5	10	मह इत्यादित्ये । आदित्ये	A	5	25	अन्नद्वे प्रजाः प्रजायन्
A	5	11	मह इति ब्रह्म । ब्रह्मणा	A	5	26	प्राणदेवा अनु प्राणन्ति
A	5	12	स य एषोऽन्तरहृदय आकाशः ।	A	5	27	यतो वाचो निर्वर्तन्ते । अप्र
A	5	13	सुवरित्यादित्ये । मह इति	A	5	28	विज्ञानं व्यञ्जन्तनुते । क
A	5	14	पृथिव्यन्तरिक्षन्द्योर्दि	A	5	29	असन्नेव सं भवति । असद्ब्रह्म
A	5	15	ओमिति ब्रह्म । ओमितिद९ सर्	A	5	30	असद्वा इदमग्र आसीत् । ततो
A	5	16	ऋतश्च स्वाध्यायप्रवचने च	A	5	31	भीषाऽस्माद्वातः पवते । भी
A	5	17	अहवृष्यस्य रेरिवा । की	A	5	32	यतो वाचो निर्वर्तन्ते । अप्र
A	5	18	वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमन	A	5	33	भृगुर्वै वारुणिः । वरुणं
A	5	19	देवपितृकार्याभ्यान्न प्रमदित	A	5	34	अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्
A	5	20	नो इतराणि । ये के चास्मच्छ	A	5	35	प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्
A	5	21	ये तत्र ब्राह्मणास्संमृशिन	A	5	36	मनो ब्रह्मेति व्यजानात् ।
A	5	22	शत्रो मित्रशश्वरुणः । श	A	5	37	विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजान
A	5	23	सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु	A	5	38	आनन्दो ब्रह्मेति व्यजाना

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	5	39	अन्नं निन्द्यात् । तद्व	A	6	12	भूरग्रये पृथिव्यै स्वाहा
A	5	40	अन्नं परिचखीत । तद्व	A	6	13	भूरन्नमग्रये पृथिव्यै स्व
A	5	41	अन्नं बहु कुर्वीत । तद्व	A	6	14	भूरग्रये च पृथिव्यै च मह
A	5	42	न कञ्चन वसतौ प्रत्याचखीत ।	A	6	15	पाहि नो अग्न एनसे स्वाहा ।
A	6	1	अंभस्यपारे भुवनस्य मध्ये	A	6	16	यश्छन्दसामृभो विश्वरूपश
A	6	2	तदेवर्तन्तदु सत्यमाहुस्त	A	6	17	नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस
A	6	3	न सन्देशं तिष्ठति रूपमस्य	A	6	18	ऋतन्तपस्सत्यन्तपः श्रुतन
A	6	4	त्रीणि पदा निहिता गुहासु	A	6	19	यथा वृष्यस्य संपुष्पितस्य
A	6	5	पशूश्च मह्यमावह जीवन्त	A	6	20	अणोरणीयान्महतो महीयानात्
A	6	6	तन्नो गरुडः प्रचोदयात् । क	A	6	21	हृ९सशश्चिपद्वसुरन्तरिक्ष
A	6	7	भूमिर्द्वेनुर्धरणी लोकधारिणी	A	6	22	मधु वाता ऋतायते मधु खरन
A	6	8	सुमित्रा न आप ओषधयस्सन्तु	A	6	23	वयन्नाम प्रब्रवामा घृतेना
A	6	9	ततो रात्रिर्जायत ततस्समुद्	A	6	24	न कर्मणा न प्रजया धनेन त
A	6	10	स नस्सुवस्सशिशधि । आर्द्र	A	6	25	सहस्रशीरपन्देवविंश
A	6	11	वृषां पवित्रे अधि सानो अव	A	6	26	अनन्तमव्ययङ्कवि९ संमुद्र



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	6	27	ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पु	A	6	42	ओं भूः । ओं भुवः । ओं सुवः
A	6	28	आदित्यो वा एष एतन्मण्डल	A	6	43	ओं भूर्भुवस्सुवर्महर्जन्स्
A	6	29	आदित्यो वै तेज ओजो बल्य्य	A	6	44	ओंतद्वह्म । ओतद्वायु
A	6	30	घृणिस्सूर्य आदित्योमर्चयन	A	6	45	उत्तमै शिखरे देवी भूम्य
A	6	31	सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्र	A	6	46	ओमन्तश्चरति भूतेषु गुहायां
A	6	32	कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष	A	6	47	अमृतोपस्तरणमसि । (47)
A	6	33	नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यपतयेऽम्	A	6	48	प्राणे निर्विष्टोऽमृतंक्षुहोम
A	6	34	यस्य वैकङ्कत्यग्निहोत्रहवं	A	6	49	प्राणे निर्विष्टोऽमृतंक्षुहो
A	6	35	कृणुष्व पाज इति पञ्च । (	A	6	50	अमृतापिधानमसि । (50)
A	6	36	अदितिर्देवा गन्धर्वा मनु	A	6	51	श्रद्धायां प्राणे निर्विश्य
A	6	37	आपो वा इदं सर्वविंश्वां	A	6	52	प्राणानाङ्गन्धिरसि रुद्रो म
A	6	38	आपः पुनन्तु पृथिवी पृथिवी	A	6	53	अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गुष्ठ
A	6	39	अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च	A	6	54	मेधा देवी जुषमाणा न आगां
A	6	40	सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च	A	6	55	मेधां म इन्द्रो ददातु मेध
A	6	41	आयातु वरंदा देवी अख्यरं	A	6	56	अप्सुरासु च या मेधा गन्ध

A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	6	57	आ मां मेधा सुरभिर्विश्वर	A	6	72	अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयान
A	6	58	सद्योजातं प्रपद्यामि सद	A	6	73	विविष्टि स्वाहा । (73)
A	6	59	वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय	A	6	74	घषौत्काय स्वाहा । (74)
A	6	60	अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोर	A	6	75	उत्तिष्ठ पुरुषा हरी लोहितपिङ्
A	6	61	तत्पुरुषाय विद्महे महादेव	A	6	76	ओं स्वाहा । (76)
A	6	62	ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्	A	6	77	सत्यं परं परं सत्यं सत्ये
A	6	63	ब्रह्ममेतु माम् । मधुमेतु	A	6	78	प्राजापत्यो हारुणिस्सुपर्
A	6	64	ब्रह्म मेधया । मधु मेधया	A	6	79	तस्यैवविंदुषो यज्ञस्या
A	6	65	ब्रह्म मेधवा । मधु मेधवा	A	7	7	नमो वाचे या चोदिता या चान
A	6	66	प्राणापानव्यानोदानसमाना मे श	A	7	8	युञ्जते मनं उत युञ्जते ध
A	6	67	वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वा	A	7	9	देव्यन्तस्त्वमेहे । उप प्र
A	6	68	शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरजङ्घ	A	7	10	मखायं त्वा । मुखस्यं त्वा शी
A	6	69	त्वक्कर्ममां सरुधिरमेदोऽस्थिमज्ज	A	7	11	मखायं त्वा । मुखस्यं त्वा शी
A	6	70	शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुद्	A	7	12	मखायं त्वा । मुखस्यं त्वा शी
A	6	71	पृथिव्यसेजोवाय्वाकाशा मे श	A	7	13	यज्ञस्यं पदे स्थः । गायत



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	7	14	वृष्णो अश्वस्य निष्पदसि ।	A	7	29	स्वाहा समग्निस्तपसा गत । स
A	7	15	मित्रस्य चक्षणीधृतः । श्	A	7	30	ऊर्ध्वमिन्द्ररङ्गधि
A	7	16	ऊर्ध्वस्तिष्ठ द्रुवस्त	A	7	31	गर्भो देवानाम् । पिता मत
A	7	17	ब्रह्मन् प्रवर्ग्येण प्रच	A	7	32	अन्तरिक्षप्र उरोर्वरीय
A	7	18	ब्रह्मन्प्रचरिष्यामः । होतं	A	7	33	देवस्य त्वा सवितुः प्रंसव
A	7	19	पृथिवीन्तपसस्त्रायस्व । अ	A	7	34	अदित्या उष्णीषमसि । वायुर
A	7	20	अनाधृष्या पुरस्तात् । अ	A	7	35	घर्माय शिष । बृहस्पतिस्त
A	7	21	मित्रावरुणयोरधिपत्ये । श	A	7	36	गायत्रौऽसि । त्रेष्टुभोऽस
A	7	22	सूपसदा मे भूया मा मां हि	A	7	37	अन्तरिक्षेण त्वोपयच्छामि
A	7	23	सुम्मा अंसि । विमा अंसि । उ	A	7	38	समुद्राय त्वा वाताय स्व
A	7	24	विषुरूपे अहंनो द्यौरिवासि	A	7	39	बृहस्पतये त्वा विश्वदैव्य
A	7	25	दश प्राचीर्दश भासि दखिण	A	7	40	अहर्दिवाभिर्रुतिभिः । अनुं
A	7	26	द्युतानस्त्वा मारुतो मरु	A	7	41	दिविधा इमय्यज्ञम् । यज्
A	7	27	मयि रुक् । दश पुरस्ताद्रो	A	7	42	इषे पीपिहि । ऊर्जे पीपिहि
A	7	28	अपश्यद्गोपामनिपद्यमानम् ।	A	7	43	यजमानाय पीपिहि । मह्यञ्चै

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	7	44	अमुष्य त्वा प्राणे सांदयाम	A	7	59	या पुरस्ताद्विद्युदापतत्
A	7	45	अहर्ज्योतिः केतुना जुषताम	A	7	60	प्राणाय स्वाहा व्यानाय स
A	7	46	एषा तै अग्रे समित् । तया	A	7	61	पूष्णे स्वाहा पूष्णे शरसे
A	7	47	पिता नोऽसि मा मां हिंसीः ।	A	7	62	उदस्य शुष्माद्भानुनात
A	7	48	घर्म या तै दिवि शुक् । या	A	7	63	यास्तै अग्न आर्द्रा योनयो
A	7	49	घर्म या तै पृथिव्या शुक्	A	7	64	अग्निरसि वैश्वानरोऽसि । स
A	7	50	वयमनुक्रामाम सुविताय नव्य	A	7	65	भूर्भुवस्सुवः । ऊर्ध्व ऊ
A	7	51	शिशुर्जनधायाः । शश्च वखि	A	7	66	निष्कर्ता विहुतं पुनः
A	7	52	रन्तिर्नामांसि दिव्यो गन्ध	A	7	67	उप नो मित्रावरुणाविहावतम्
A	7	53	व्यसौ । योऽस्मान्द्वेष्टि	A	7	68	भूर्भुवस्सुवः । मयि त्यदि
A	7	54	नमस्ते अस्तु मा मां हिंसीः	A	7	69	यास्तै अग्रे घोरास्तनुवः
A	7	55	धियो हिन्वानो धिय इत्रो अ	A	7	70	सिक्त्र सीहिंतिश्च सिहि
A	7	56	दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुः	A	7	71	धुनिश्च द्धान्तश्च द्ध
A	7	57	महीनां पयोऽसि विहितन्देव	A	7	72	उग्रश्च धुनिश्च द्धान्त
A	7	58	अस्कान्द्योः पृथिवीम् । अस	A	7	73	अहोरात्रे त्वोदीरयताम् ।



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	7	74	खट् फट् जहि । छिन्धी भिन्ध	A	7	89	तावौयुस्समिन्धे । सा वा	A	8	5	वारैवृत् ३ ह्यासाम् । तस्य	A	8	20	तेजं एवास्मिन्दधाति । मधुं
A	7	75	विगा इन्द्र विचरन्धस्याशय	A	7	90	साऽऽदित्यं समिन्धे । तामहं	A	8	6	यदस्यास्समभरन् । तथ्सम्	A	8	21	परिश्रिते करोति । ब्रह्मव
A	7	76	असुंमुखो रुधिरणाव्यक्तः	A	7	91	तच्छकेयन्तर्मे राद्यताम्	A	8	7	भिषजौ वै स्थः । इदय्यंज	A	8	22	तस्मान्नान्तराय्यम् । आत्
A	7	77	यदेतद्वृकसो भूत्वा । वाग्	A	7	92	वर्चसा श्रिया । यशसा ब्रह्	A	8	8	सावित्रं हुहोति प्रतिष्ठ	A	8	23	तस्मादेवमाह । यज्ञस्यं प
A	7	78	यदीपितो यदि वा स्वकामी ।	A	7	93	यशसा ब्रह्मवर्चसेनं । अन्न	A	8	9	देवताये वषट्कारायं । यच्चं	A	8	24	वीर्यं च छन्दांसि । वीर
A	7	79	दीर्घमुखि दुर्हणु । मा स्	A	7	94	अन्नार्घ्यं समिन्तां स्व	A	8	10	यज्ञपरुन्तरियात् । यजुं	A	8	25	अपरिमितङ्करोति । अपरिमितस्
A	7	80	इत्यादुलूक आपतत् । हिर	A	7	95	शन्नो वातः पवतां मातरिश्वा	A	8	11	स खंदिगोऽभवत् । यः पशून् ।	A	8	26	छन्दोभिरेवैनंभूपयति । अर
A	7	81	यदेतद्भूतान्यन्वाविश्यं ।	A	7	96	दक्षं मे अन्य आवातु परान्	A	8	12	तेजसैव यज्ञस्य शिरस्संभं	A	8	27	तस्मादग्निस्सर्वा दिशोऽनु
A	7	82	प्रसार्यं सुख्यौ पतंसि ।	A	7	97	द्युभिरक्तभिः परिपातम्	A	8	13	अद्वृकृद्देवेभ्य इत्या	A	8	28	दिशो भूतिः । इमानेवासमै
A	7	83	अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मि ।	A	7	98	शन्नो देवीरभिष्टं आपो भ	A	8	14	पाङ्को हि यज्ञः । देवा य	A	8	29	आच्छृणन्ति । देवत्राकः ।
A	7	84	आहूरावद्य । शृतस्यं हविषो	A	7	99	आपो जूनयथा च नः । पृथिवी	A	8	15	त्रिंहरति । त्रयं इमे लो	A	8	30	ब्रह्मन्त्रचरिष्यामो होतर
A	7	85	ब्रह्मणा त्वा शपामि । ब्रह्म	A	8	1	देवा वै सत्रमांसत । ऋद्धिप	A	8	16	यद्वल्मीकम् । यद्वल्मीकवप	A	8	31	अभिपूर्वं प्रोक्षति । अभ
A	7	86	उत्तुंद शिमिजावरि । तल्पेजे	A	8	2	तेषाम्मुखैषण्वय्यंशं आ	A	8	17	तन्नाद्धियत । स पूतीकस्तं	A	8	32	गायत्रो हि प्राणः । प्राण
A	7	87	भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुव	A	8	3	तमेकं सन्तम् । बृहवो नाभ	A	8	18	तमेवावरुन्धे । पञ्चैते सं	A	8	33	यत्प्रवर्ग्यः । ऊर्ध्वञ्ज
A	7	88	पृथिवी समित् । तामग्निस्स	A	8	4	तथ्स्ययाकानां स्मयाकृत्वम्	A	8	19	आरण्याः पशवः कर्नीयांसः ।	A	8	34	तेजसैवेनमनक्ति । पृथिवीन



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	8	35	अर्चिरसि शोचिरसीत्याह ।	A	8	50	न ह्येष निपद्यते । आ च पर
A	8	36	अनाधृष्या पुरस्तादिति य	A	8	51	ग्रेष्मावेवास्मां ऋतू कल्प
A	8	37	मनोरश्वासि भूरिपुत्रेती	A	8	52	दिवि देवेषु होत्रां युच्छे
A	8	38	स्वाहा मरुद्भिः परिश्रयस	A	8	53	गर्भो देवानामित्याह । गर्
A	8	39	द्वादश मासास्सवैश्वरः ।	A	8	54	मतिर्ह्येष कवीनाम् । सन्द
A	8	40	स्तौत्येवैनमेतत् । गायत्	A	8	55	नाभिर्दशमी । प्राणानेव यज
A	8	41	अथो रक्षसांमपहत्यै । त्रिः	A	8	56	रुचितमवैख्यन्ते । रुचिता
A	8	42	ततो वै स दुश्चर्माऽभवत् ।	A	8	57	अधीयन्तोऽवैख्यन्ते । सर्व
A	8	43	अग्निष्ठा वसुभिः पुरस्त	A	8	58	देवस्य त्वा सवितुः प्रंसव
A	8	44	समारुचितो रोचयेत्याह । आ	A	8	59	मनुष्यनामैरेवैनामा हं
A	8	45	रोचितस्त्वन्दैव घर्म देवे	A	8	60	स्वयैवैनन्देवतयोपावसृजत
A	8	46	शिरो वा एतद्यज्ञस्य । यत्	A	8	61	ब्रह्म वै देवानां बृहस्पत
A	8	47	ऋतुभ्यं एव यज्ञस्य शिरोऽव	A	8	62	तस्मादिन्द्रो देवतानां भू
A	8	48	अग्निष्टोमे प्रवृणक्ति ।	A	8	63	घर्म पात वसवो यजतां वडित
A	8	49	पृष्ठानि वा अच्युतश्चावय	A	8	64	स्वाहा त्वा सूर्यस्य रश्म

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	A	प्रश्न	दशिनी	Description
A	8	65	अन्तरिक्षेण त्वोपयच्छामी	A	8	80	यद्यजुषा जुहुयात् । अयथापू
A	8	66	सुवरसि सुवर्मे यच्छु दिव्य	A	8	81	प्राणो वा इन्द्रतमोऽग्निः
A	8	67	पाङ्क्तो यज्ञः । यावानेव	A	8	82	सवैश्वरन्न मास्समंश्जीय
A	8	68	अप्सु वै वरुण आदित्यवान्	A	8	83	घर्म या तै दिवि शुगिति ति
A	8	69	तस्मा एवैनंश्नुहोति । एताभ	A	8	84	एष्वेव लोकेषु प्रजा दाध
A	8	70	विश्वा आशां दखिणसदित्याह	A	8	85	प्राश्नुमुद्रांसयति । तस्माद
A	8	71	अश्विना घर्म पातं हार्दिव	A	8	86	यज्ञं रखांसि जिघांसन्ति ।
A	8	72	पूर्वमेवोदितम् । उत्तरेणा	A	8	87	यत्पृथिव्यामुद्रांसयैत् ।
A	8	73	दिक्ष्वैवेनं प्रतिष्ठापयत	A	8	88	अमृतं एवैनं प्रतिष्ठापयति
A	8	74	यत्प्रत्यक् । तन्मनुष्याण	A	8	89	इयवै ऋतम् । तस्यां एष ए
A	8	75	तेजसोऽस्कन्दाय । इषे पीपि	A	8	90	अनंशनायुको भवति । य एवैवैद
A	8	76	ब्रह्मन्नेवेनं प्रतिष्ठाप	A	8	91	वृषा हरिः । महान्मित्रो न
A	8	77	ताभ्यं एवैनंश्नुहोति । प्रत	A	8	92	पूर्वमेवोदितम् । उत्तरेणा
A	8	78	रुद्राय रुद्रहोत्रे स्वा	A	8	93	मनुष्यो हि । एष सन्मनुष
A	8	79	चक्षुरस्य प्रमारुक् स्यात्	A	8	94	प्रजापतिवै देवाश्शुक्



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 3 – आरण्यकम् (A)



A	प्रश्न	दशिनी	Description	
A	8	95	तथ्साम्नः पर्यः । यदजायै पय	PARANKUSHACHAR INSTITUTE OF VEDIC STUDIES (REGD.) ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् । नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः।
A	8	96	तेजः प्रवृर्ग्यः । तेजसैव	
A	8	97	तस्मादुत्तरवेद्यामेवोद्धा	
A	8	98	यन्दिष्यात् । यत्र स स्या	
A	8	99	इदमहममुष्यामुष्यायणस्य	
A	8	100	प्रजापतिस्सभ्रियमाणः । स	
A	8	101	यो वै वसीयास्यथानाममुप	
A	8	102	प्रियेण नाम्ना समर्द्धयति	
A	8	103	वसंवः प्रवृक्तः । सोमोऽभिक	
A	8	104	वाग्धुतः । असौ खलु वावैष आ	
A	8	105	वाच्यैव वाचन्दधाति । तस्मा	
A	8	106	सविता भूत्वा प्रथमेऽहुन्	
A	8	107	यथष्टेऽहन्प्रवृज्यतै ।	
A	8	108	यदैकादशेऽहन्प्रवृज्यतै ।	



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

K	प्रश्न	दशिनी	Description	K	प्रश्न	दशिनी	Description
K	1	1	संज्ञानं विज्ञानं प्रज्	K	1	16	सुहस्तस्सुवासाः । शूषो न
K	1	2	आवेशयन्निवेशयन्सर्वै	K	1	17	प्राणो हृदये । हृदयम्मयि
K	1	3	कान्ता काम्या कामजाताऽऽयु	K	1	18	मनो हृदये । हृदयम्मयि ।
K	1	4	अरुणोऽरुणरंजाः पुण्डरीक	K	1	19	रेतो हृदये । हृदयम्मयि ।
K	1	5	भूरग्निश्च पृथिवीश्च माञ्	K	1	20	लोमानि हृदये । हृदयम्मयि
K	1	6	त्वमेव त्वावैत्य योऽसि	K	1	21	मूर्धा हृदये । हृदयम्मयि
K	1	7	सर्वैश्चरोऽसि परिवत्सरोऽ	K	1	22	आत्मा हृदये । हृदयम्मयि
K	1	8	अहोरात्राणीष्टकाः । ऋषभ	K	1	23	प्रजापतिर्देवानसृजत । ते
K	1	9	इन्दुर्दख्यंश्च येन ऋतावा	K	1	24	वृश्चतश्च । सैषा मौमाः सा
K	1	10	भूर्भुवस्स्वः । ओजो बलम्	K	1	25	वृश्चतश्च । अत्युहो हारु
K	1	11	राज्ञीं विराज्ञीं । सम्राज्	K	1	26	स कस्मिन्प्रतिष्ठित इति ।
K	1	12	असंवे स्वाहा वसंवे स्वाहा	K	1	27	कस्मिन्नु तप इति । बल् इति
K	1	13	विपश्चिते पर्वमानाय गायत । म	K	1	28	तस्मात्सावित्रे न सर्वदेत
K	1	14	ये ते सहस्रमयुतं पाशाः	K	1	29	अथ यदाह । प्रस्तुतविष्
K	1	15	अन्धो जागृविः प्राण । असाव	K	1	30	अथ यदाह । पवित्रम्पवयिष्

Section 3 – काठकम् (K)



K	प्रश्न	दशिनी	Description	K	प्रश्न	दशिनी	Description
K	1	31	एष सर्वैश्चरः । अथ यदाह	K	1	46	तं ह त्रीनिरिरूपानविज्
K	1	32	सर्वमायुरेति । अभि स्वर्ग	K	1	47	तस्मै हैतमग्निं सावित्रम्
K	1	33	स ह हुं सो हिरण्यमयो भूत्	K	1	48	यावन्तं ह वै त्रय्या विद्
K	1	34	सर्वम्बत गौतमो वेद । यस्सा	K	1	49	इन्द्रस्यैव सायुज्यं सलोक
K	1	35	स होवाच । मा भैषीगौतम । ज	K	2	1	लोकोऽसि स्वर्गोऽसि । अन्
K	1	36	एतद्वै सावित्रस्याष्टाख्य	K	2	2	तपोऽसि लोके श्रितम् । तेज
K	1	37	तदेतत्परियद्वैवचक्रम् ।	K	2	3	तेजोऽसि तपसि श्रितम् । स
K	1	38	इयवैव सूर्या । तस्यां अग	K	2	4	समुद्रोऽसि तेजसि श्रितः
K	1	39	न हस्येता अग्नौ मधुं कुर	K	2	5	आपंस्थ समुद्रे श्रिताः ।
K	1	40	यो ह वै मुहूर्तानामाम्भ	K	2	6	पृथिव्यस्यपम्सु श्रिता ।
K	1	41	नार्धमासेषु न मासेष्वार्त	K	2	7	अग्निरसि पृथिव्यां श्रितः
K	1	42	इदानीन्तदानीमिति । एते	K	2	8	अन्तरिख्यमस्यग्नौ श्रितम्
K	1	43	कश्चिद् वा अस्माल्लोकात्	K	2	9	वायुरस्यन्तरिख्ये श्रितः
K	1	44	स स्वल्लोकं प्रति प्रजाना	K	2	10	द्यौरसि वायौ श्रिता । आदि
K	1	45	तस्यैवाहोरात्राणि । अ	K	2	11	आदित्योऽसि दिवि श्रितः ।



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा



Section 3 – काठकम् (K)

K	प्रश्न	दशिनी	Description	K	प्रश्न	दशिनी	Description
K	2	12	चन्द्रमा अस्यादित्ये श्रि	K	2	27	अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि । अ
K	2	13	नखेत्राणि स्थ चन्द्रमसि श	K	2	28	मरुतौ गणानां पतयः । रुद्रं
K	2	14	सर्व्वंभूरोऽसि नखेत्रेप	K	2	29	सप्त तै अग्ने समिधंस्सप्त
K	2	15	ऋतवस्थ सर्व्वंभूरे श्रित	K	2	30	इन्द्रः स दिशान्देवन्देव
K	2	16	मासास्थितुषु श्रिताः ।	K	2	31	ऊर्ध्वा दिक् । बृहस्पतिर्द
K	2	17	अर्धमासास्थ मासु श्रि	K	2	32	अन्धो जागृविः प्राण । असाव
K	2	18	अहोरात्रे स्थौर्धमासेषु	K	2	33	यत्तेऽचित्य्यदु चित्तं
K	2	19	पौर्णमास्यष्टकाऽमावास्या	K	2	34	तया देवतयाऽङ्गिरस्वद्धु
K	2	20	राडसि बृहती श्रीरसीन्द्रप	K	2	35	यो दीदाय समिद्धस्वे दु
K	2	21	ओजोऽसि सहोऽसि । बलमसि भू	K	2	36	देवान्देवायते यंज । अग्नि
K	2	22	त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो	K	2	37	अयव्वाँ यः पवते । सोऽग्नि
K	2	23	पृष्ठास्सप्तमेषु श्रयध्वम्	K	2	38	अथ यथ्सव्वति । तदस्य स
K	2	24	षोडशास्सप्तदशेषु श्रयध्व	K	2	39	हिरण्यव्वाँ अग्नेर्नाचिके
K	2	25	षड्विंशास्सप्तविंशेषु	K	2	40	एवमेव स तेजसा यशसा । अ्स
K	2	26	अग्नाविष्णू सजोषसा । इमा	K	2	41	अनुन्तः ह वा अपारमख्य

K	प्रश्न	दशिनी	Description	K	प्रश्न	दशिनी	Description
K	2	42	उशन् ह वै वांजश्रवस्सर्व्व	K	2	57	तेजस्वी यशस्वी ब्रह्मवर्
K	2	43	गौतमकुमारमिति । स होवाच ।	K	2	58	भूर्यिष्ठमेवास्यै श्रद्धधते
K	2	44	प्रजान्त इति । किन्द्विती	K	2	59	यां प्रथमामिष्टकामुपदधात
K	2	45	किं प्रथमा रात्रिमाश्रा	K	2	60	अथो या अमुष्मिँल्लोके दे
K	2	46	इष्टापूर्तयोर्मेऽख्यति	K	2	61	ग्रीष्मो दखिणः पृथ्वः । व
K	2	47	अपं पुनर्मृत्युञ्जयति । यौ	K	2	62	य उ चैनमेव वेद । सर्व्वथ
K	2	48	तदस्मै नैवाच्छेदयत् । तदात	K	3	1	तुभ्यं ता अङ्गिरस्तमाश्रयाम
K	2	49	दखाय त्वा दखिणां प्रत	K	3	2	देवेभ्यो वै स्वर्गो लोकस्
K	2	50	तः हैतमेकं पशुबन्ध एवोत्त	K	3	3	तमाशाऽब्रवीत् । प्रजापत आश
K	2	51	कामेन समर्द्धयति । अथ हैन	K	3	4	तं कामोऽब्रवीत् । प्रजापते
K	2	52	यथान्युत्तमेवोपदधे । ततो	K	3	5	तं ब्रह्माऽब्रवीत् । प्रजाप
K	2	53	पञ्च दखिणतः । पञ्च पृथ	K	3	6	तं यज्ञोऽब्रवीत् । प्रजापत
K	2	54	सप्त पुरस्तात् । तिस्रो द	K	3	7	तमापोऽब्रुवन् । प्रजापते
K	2	55	त्रिवृत्प्रजननम् । उपस्थो	K	3	8	तमग्निर्बलिमानब्रवीत् । प
K	2	56	ज्यैष्ठ्यं च्छति । यौऽग्नि	K	3	9	तमनुवित्तिब्रवीत् । प्रजाप



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

K	प्रश्न	दशिनी	Description	K	प्रश्न	दशिनी	Description
K	3	10	ता वा एतास्स स्वर्गस्य	K	3	25	एतैरधिवादमपाजयत् । अथो व
K	3	11	तपसा देवा देवतामग्र आयन्	K	3	26	पुरस्ताद्वशहोतारमुदंश्चम
K	3	12	सा नो जुषाणोप यज्ञमागात्	K	3	27	सदेवमग्निश्चिनुते । रथसं
K	3	13	यथा देवैस्संधुमादं मदेम ।	K	3	28	अन्तरिख्यमुक्थ्येन । स्वं
K	3	14	संकल्पजृतिं देवं विपश्च	K	3	29	असावादित्य एकविंशः । अ
K	3	15	देवेभ्यो वै स्वर्गो लोकस्	K	3	30	सर्वस्यात्यै । सर्वस्याव
K	3	16	तं तपोऽब्रवीत् । प्रजापते	K	3	31	हिरण्यन्ददाति । हिरण्यज्योत
K	3	17	तं श्रद्धाऽब्रवीत् । प्रजा	K	3	32	तृप्यति प्रजयां पशुभिः ।
K	3	18	तं सत्यमब्रवीत् । प्रजापते	K	3	33	हिरण्येष्टको भवति । यावं
K	3	19	तं मनोऽब्रवीत् । प्रजापते	K	3	34	यावंदेव वीर्यम् । तदस्मिन्
K	3	20	तश्चरणमब्रवीत् । प्रजापते	K	3	35	यच्चामृतय्यञ्च मर्त्यम्
K	3	21	ता वा एताः पञ्च स्वर्गस्य	K	3	36	सङ्ख्याता देवमायया । सर्वा
K	3	22	ब्रह्म वै चतुहोतारः । चत	K	3	37	सर्वास्ताः । यावन्तोऽश्मानं
K	3	23	अग्निहोता पञ्चहोतृणाम्	K	3	38	यावन्तो वनस्पतयः । अस्या
K	3	24	एतान् योऽधैत्यछंदिर्दश	K	3	39	देवत्रा यच्च मानुषम् । सर

Section 3 – काठकम् (K)



K	प्रश्न	दशिनी	Description	K	प्रश्न	दशिनी	Description
K	3	40	सर्वास्ताः । सर्वं हिरण्य	K	3	55	विश्वसृजः प्रथमास्त्र
K	3	41	सर्वा दिशो दिख्यु । यच्चा	K	3	56	तस्यैवात्मा पदवित्तविंद
K	3	42	गन्धर्वाप्सरसंश्च ये । स	PARANKUSHACHAR INSTITUTE OF VEDIC STUDIES (REGD.) ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् । नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः ।			
K	3	43	सर्वास्ताः । सर्वान्मरीची				
K	3	44	याश्च कूप्या याश्च नाद्या				
K	3	45	अन्तरिख्यचरश्च यत् । सर				
K	3	46	सर्वान्दिवं सर्वान्देवान				
K	3	47	अथर्वाङ्गिरसंश्च ये । सर				
K	3	48	सर्वास्ताः । अहोरात्राणि				
K	3	49	ऋचां प्राचीं महती दिगुच्यत				
K	3	50	सर्वन्तेजस्सामरूप्यं हं शश				
K	3	51	तपं आसीद्बृहपतिः । ब्रह्म				
K	3	52	अपानो विद्वानावृतः । प्र				
K	3	53	ऊर्ग्राजान्मुदंवहत् । ध्रुव				
K	3	54	इध्मं हं खसुचैभ्य उग्रे				



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

U	प्रश्न	दशिनी	Description	U	प्रश्न	दशिनी	Description
U	1	1	शत्रो मित्रशश्वैरुणः । श	U	1	17	अहवृष्यस्य रेरिवा । की
U	1	2	शीखाव्याख्यास्यामः । व	U	1	18	वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमन
U	1	3	सह नो यशः । सह नो ब्रह्मव	U	1	19	देवपितृकार्याभ्यान्न प्रमदित
U	1	4	वायुस्सन्धानम् । इत्यधिलो	U	1	20	नो इतराणि । ये के चास्मच्छ
U	1	5	अन्तेवास्युत्तररूपम् । विंद	U	1	21	ये तत्र ब्राह्मणास्समर्शिन
U	1	6	अथाद्यात्मम् । अधराहनुः पू	U	1	22	शत्रो मित्रशश्वैरुणः । श
U	1	7	यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः ।	U	1	23	सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु
U	1	8	कुर्वाणा चीरमात्मनः । वा	U	1	24	ब्रह्मविदाप्रोति परम् ।
U	1	9	भूर्भुवस्सुविति वा एतास्	U	1	25	अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्
U	1	10	मह इत्यादित्यः । आदित्ये	U	1	26	प्राणन्देवा अनु प्राणन्ति
U	1	11	मह इति ब्रह्म । ब्रह्मणा	U	1	27	यतो वाचो निर्वर्तन्ते । अप्र
U	1	12	स य एषोऽन्तरहृदय आकाशः ।	U	1	28	विज्ञानय्यज्ञन्तनुते । क
U	1	13	सुवित्यादित्ये । मह इति	U	1	29	असन्नेव स भवति । असद्ब्रह्म
U	1	14	पृथिव्यन्तरिक्षन्द्यौर्दि	U	1	30	असद्वा इदमग्र आसीत् । ततो
U	1	15	ओमिति ब्रह्म । ओमितीदं सर्	U	1	31	भीषाऽस्माद्वातः पवते । भी
U	1	16	ऋतश्च स्वाध्यायप्रवचने च	U	1	32	यतो वाचो निर्वर्तन्ते । अप्र

Section 3 –उपनिषत् (U)



U	प्रश्न	दशिनी	Description	U	प्रश्न	दशिनी	Description
U	1	33	भृगुर्वै वारुणिः । वरुणं	U	2	7	भूमिर्द्धेनुर्धरणी लोकधारिणी
U	1	34	अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्	U	2	8	सुमित्रा न आप ओषधयस्सन्तु
U	1	35	प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्	U	2	9	ततो रात्रिरजायत ततस्समुद्
U	1	36	मनो ब्रह्मेति व्यजानात् ।	U	2	10	स नस्सुवस्संशिशधि । आर्द्र
U	1	37	विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजान	U	2	11	वृषा पवित्रे अधि सानो अक्
U	1	38	आनन्दो ब्रह्मेति व्यजाना	U	2	12	भूरग्नये पृथिव्यै स्वाहा
U	1	39	अन्नं निन्द्यात् । तद्व	U	2	13	भूरन्नमग्नये पृथिव्यै स्व
U	1	40	अन्नं परिचखीत । तद्व	U	2	14	भूरग्नये च पृथिव्यै च मह
U	1	41	अन्नं बहु कुर्वीत । तद्व	U	2	15	पाहि नो अग्न एनसे स्वाहा ।
U	1	42	न कश्चन वसतौ प्रत्याचखीत ।	U	2	16	यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपश
U	2	1	अभंस्यपारे भुवनस्य मध्ये	U	2	17	नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्
U	2	2	तदेवर्तन्तदं सत्यमाहुस्त	U	2	18	ऋतन्तपस्सत्यन्तपः श्रुतन
U	2	3	न सन्दृशेति तिष्ठति रूपमस्य	U	2	19	यथा वृष्यस्य संपुष्पितस्य
U	2	4	त्रीणि पदा निहिता गुहासु	U	2	20	अणोरणीयान्महतो महीयानात्
U	2	5	पशूश्च मह्यमावह जीवन्त	U	2	21	हृस्सश्चुचिपद्वसुन्तरिक्ष
U	2	6	तन्नो गरुडः प्रचोदयात् । क	U	2	22	मधु वाता ऋतायते मधु खरन



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

U	प्रश्न	दशिनी	Description	U	प्रश्न	दशिनी	Description
U	2	23	व्यत्राम् प्रब्रवामा घृतेना	U	2	38	आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी
U	2	24	न कर्मणा न प्रजया धनैर्न त्	U	2	39	अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश
U	2	25	सुहृन्शीर्षन्देवद्विंश	U	2	40	सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश
U	2	26	अनन्तमव्ययङ्कुवि संमुद्र	U	2	41	आयातु वरंदा देवी अख्वरं
U	2	27	ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पु	U	2	42	ओं भूः । ओं भुवः । ओं सुवः
U	2	28	आदित्यो वा एष एतन्मण्डल	U	2	43	ओं भूर्भुवस्सुवर्महर्जनस्
U	2	29	आदित्यो वै तेज ओजो बल्य्य	U	2	44	ओंन्तद्वह्म । ओन्तद्वायु
U	2	30	घृणिस्सूर्य आदित्योर्मर्चयन	U	2	45	उत्तमे शिखरे देवी भूम्य
U	2	31	सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्र	U	2	46	ओमन्तश्चरति भूतेषु गुहायां
U	2	32	कद्रुद्राय प्रचेतसे मीदुष	U	2	47	अमृतोपस्तरणमसि । (47)
U	2	33	नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यपतयेऽम्	U	2	48	प्राणे निर्विष्टोऽमृतंक्षुहोम
U	2	34	यस्य वैकङ्कत्यग्निहोत्रहवं	U	2	49	प्राणे निर्विष्टोऽमृतंक्षुहो
U	2	35	कृणुष्व पाज् इति पञ्च । (	U	2	50	अमृतापिधानमसि । (50)
U	2	36	अदितिर्देवा गन्धर्वा मनु	U	2	51	श्रद्धायां प्राणे निर्विश्य
U	2	37	आपो वा इदं सर्वद्विंश	U	2	52	प्राणानाङ्गन्धिरसि रुद्रो म

Section 3 –उपनिषत् (U)



U	प्रश्न	दशिनी	Description	U	प्रश्न	दशिनी	Description
U	2	53	अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गुष्ठ	U	2	68	शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरजङ्घ
U	2	54	मेधा देवी जुषमाणा न आगा	U	2	69	त्वक्कर्ममां सरुधिरमेदोऽस्थिमज
U	2	55	मेधां म इन्द्रो ददातु मेध	U	2	70	शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुद्
U	2	56	अप्सरासु च या मेधा गन्ध	U	2	71	पृथिव्यसेजोवाय्वाकाशा मे श
U	2	57	आ मां मेधा सुरभिर्विश्वर	U	2	72	अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयान
U	2	58	सद्योजातं प्रपद्यामि सद्	U	2	73	विविद्वि स्वाहा । (73)
U	2	59	वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय	U	2	74	घृषौत्काय स्वाहा । (74)
U	2	60	अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोर	U	2	75	उत्तिष्ठ पुरुषा हरी लोहितपिङ्
U	2	61	तत्पुरुषाय विद्महे महादेव	U	2	76	ओं स्वाहा । (76)
U	2	62	ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्	U	2	77	सत्यं परं परं सत्यं सत्ये
U	2	63	ब्रह्ममेतु माम् । मधुमेतु	U	2	78	प्राजापत्यो हारुणिस्सुपर्
U	2	64	ब्रह्म मेधया । मधु मेधया	U	2	79	तस्यैवद्विदुषो यज्ञस्या
U	2	65	ब्रह्म मेधवा । मधु मेधवा	PARANKUSHACHAR INSTITUTE OF VEDIC STUDIES (REGD.) ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् । नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः ।			
U	2	66	प्राणापानव्यानोदानसमाना मे श				
U	2	67	वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ				



कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

Section 3 – एकाग्रिकाण्डः (E)



E	प्रश्न	दशिनी	Description	E	प्रश्न	दशिनी	Description
E	1	1	प्रसुग्मन्तां धियसानस्यं	E	1	16	इमां खनाम्योषधीं वीरुधं
E	1	2	हिरण्यवर्णाश्शुचयः पावकाः	E	1	17	उदसौ सूर्यो अगादुदयं मांम
E	1	3	सोमः प्रथमो विविदे गन्धुर्	E	1	18	अखीभ्यान्ते नासिकाभ्यां
E	1	4	सोमाय जनिविदे स्वाहा । ग	E	2	1	उष्णेन वायवुदकेनेहदितिः
E	1	5	आतिष्ठेममश्मानमश्मैव त्	E	2	2	आयुर्दा देव जरसं गृणानो
E	1	6	सत्येनोत्तंभिता भूमिस्मूर्	E	2	3	आगन्ना समगन्महि प्र सुं
E	1	7	तामन्दसाना मनुषो दुरोण आ	E	2	4	योगेयोगे त्वस्तरमिममं
E	1	8	शर्म वर्मेदमाहरास्यै नार्	E	2	5	सुश्रवस्सुश्रवसं मा कुरु
E	1	9	इह गावः प्रजायद्धमिहाश	E	2	6	परि त्वाग्ने परिमृजाम्या
E	1	10	उदीर्ष्वीतो विश्वावसो नमंस	E	2	7	इमं स्तोममहंते जातवेदस
E	1	11	अपश्यन्त्वा मनसा चेर्कितान	E	2	8	आयुष्यं वर्चस्यं सुवीर्
E	1	12	आरोहोरुमुपवर्हस्व बाहुं	E	2	9	मयि पर्वतपूरुषम् । मयि पर्
E	1	13	विष्णुर्योनिंङ्कल्पयतु त्वष	E	2	10	त्रय्यै विद्यायै यशोऽसि
E	1	14	करोमि ते प्राजापत्यमा गर्भ	E	2	11	धाता दंदातु नो रयिमिति चत
E	1	15	प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं	E	2	12	दिवस्परीत्येषोऽनुवाकः । अ

E	प्रश्न	दशिनी	Description
E	2	13	मा तै कुमारं रख्योवधीन्मा
E	2	14	नक्तश्चारिणं उरस्पेशाञ्छू
E	2	15	यद्वमेः कूरं तदितो हरा
E	2	16	कूर्कुरस्सुकूर्कुरः कूर्
E	2	17	इन्द्रं जहि दन्दशूकं पृथिव
E	2	18	परमेष्ठसि परमां मां
E	2	19	यन्मे माता प्रलुलोभं चरत्
E	2	20	पृथिवी ते पात्रं द्यौरपि
E	2	21	उक्थ्यंश्चास्यतिरात्रश्च स
E	2	22	या तं एषा रंराट्यां तनूर्म

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)
ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।
नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः ।